सपना साकार

सपना साकार

राम चन्द्र राय

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SAPANA SAAKAAR (सपना साकार)
Collection of Maithili Stories by Shri Ram Chandra Roy

ISBN: 978-93-93135-39-1
सर्वाधिकार: © श्रीमती रंजना कुमारी
पहिल संस्करण: 2023
दाम: 200/- (भा.रू.)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

माता स्व. गंगा देवी, पिता स्व. अधिक लाल राय

केर पावन चरण कमलमे

समर्पित

दू शब्द

रामचन्द्र राय प्रसिद्ध रामू सरक लघु आ दीर्घ कथाक संग्रह “सपना साकार“क कथा “तोहीं जितलेँ हमहीं हारलौं“ मे सवर्ण आ गएर सवर्णक मिलि जुलि कऽ रहबाक वर्णनक संग ईहो जे नवीनक माय-बाबू नोकरीक पहिल दरमाहासँ कौबले-पाती पूरा करता आ फेर एकटा अन्तर्जातीय प्रेम कथा, ई सभटा भेटत। प्रेम-प्रसंगमे अपहरणक केस दर्ज होइते छै, से एत्तौ भेल। मुदा नूनू भैया फेर मानि गेला। ‘सपना साकार’ आत्मकथात्मक अछि से बुझबामे किनको भाङठ नै हेतनि। आ गरदैनिक उतरी उतारबाक नव विधि, एगारहटा युवकक प्रतिज्ञा कर्मकाण्ड आ मृत्युभोजक विरुद्ध। फेंकाएल जिनगीमे स्त्रीक जीवन, मानसिक रोग सभ किछु भेटत। पगली पगली नै छलि। ओकरा घरमे भगमन्त बूझल जाइ छलै, मुदा बियाहक बाद...।

मुदा ऐ संग्रहक श्रेष्ठ कथा सभ अछि दीर्घकथा “निरवासित जीवन” आ “बुधनी माइक बेथा”।

‘बुधनी माइक बेथा’मे पंचायतक बैसारमे महिलाक उपस्थिति आह्लादित करैत अछि तँ ओत्तै बुधनी माएक इन्दिरा अवासक ढनमनायल घरक वर्णन सेहो छूटल नै अछि। सस्पेंस अछि, बुधनी माए ओत्तै खोलती नाम। चरणबाबू ओकरा धुतकारै छथि, एहेन पाप कइयो कऽ ओ जीवित केना छथि? युवक सभकेँ ओकरा जिन्दा जड़ा देबाक चाही। आ बुधनी शुरू- सभ पंचकेँ पैरनाम! आ जँ हम झूठ बाजी तँ देहपर बज्जर खसय, अंग काज नै आबय, सीताक भूमिमे प्रवेश मोन पड़ल? बाढ़िमे बान्ह टुटलै, गिरहत ओइठाम बरतन-बासन धोइ कऽ बोइन कऽ गुजर करै छली मुदा ओहो नै रहऽ देलकनि। मुदा अबैत काल जगत देखने रहन्हि..। मुदा बिनु पंचैती केने पंच सभ ई बजैत, जे जगत नजायज

केलक, चलि गेला। जगतक धाकक चलते कियो बेशी नै बाजल। मुदा निसीभाग रातिमे माय बेटी तीनटा नवयुवकक कहलापर थाना बिदा भेली, मुदा जगतक धाक ओत्तौ रहै। मुदा तैयो.. मुदा पुलिस अपन बापोक नै होइ छै। मुदा आशाक किरिण अछि किछु नवयुवक सभ। बुधनी माय बच्चाकेँ जन्म देती, डी.एन.ए. केर विषयमे नै बुझल छन्हि मुदा से बुझल छन्हि जे कोनो टेस्ट होइ छै आ टेस्टसँ बाप जगते सिद्ध हेतै।

'निरवासित जीवन' दीर्घकथा सेहो नीक अछि। एकर पहिल विशेषता अछि- मनुक्खक व्यंग्यात्मक शैली जकरा कथाकार उठेने छथि। भरामवालीक घरमे चोरि! चोरक बुइध चोरि भऽ गेल रहै की? मुदा भरामवाली भौजी केँ बुझल छन्हि जे ई चोरि नै, कियो उछन्नर दऽ रहल छन्हि। आ से सुनि भुटकुन भाइ हुनकर खिस्सा बुझैले अपस्याँत भऽ जाइ छथि।

ऐ दीर्घकथाक दोसर विशेषता अछि मनुक्खक जीवन शैलीक सूक्ष्मतासँ अवलोकन आ अभिलेखन। मटि-कट्टीक बहन्ने ओम्हर जेता भुटकुन मुदा भौजीक घरमे दलान नै छन्हि से सोझे आंगन केना चलि जेता? भौजी पुरुख सभकेँ छहरक काते-कात झाड़ा फिरैत देखि लजा जाइ छथि मुदा हुनका सभकेँ कोनो लाजे नै। मुदा से जँ स्त्री करय लागय तखन? आ पुरुख प्रधान समाजक दंश...। मुदा आब शिक्षोमे स्त्री आगाँ एलथि, अदहा-अदही आरक्षण सरकार हुनका देने छन्हि।

ऐ दीर्घकथाक तेसर विशेषता अछि लेखकक शब्द भण्डार जे आवश्यक छल भरामवाली भौजीक जिनगीक अभिलेखन लेल।

'बहिनक बिआह' सुजीतक परिवार, तीनटा बहिन, दूटाक बियाह पिताक जीविते भऽ गेलै। तखन सुजीत नोकरी लेल दिल्ली गेल। ओतऽ कोठीमे काज भेटलै, ओतऽ रुणा झाड़ू-पोछा लगबै लेल अबै छलै। प्रेम-प्रसंग मुदा आगाँ नै बढ़तै, सुजीत लेल रुणाकेँ तीन साल रुकऽ पड़तै। बहिन रेखाक बियाह करेबाक छै। घुरल सुजीत, ट्रेनसँ दरभंगा, आ दिल्ली

मोड़पर एकगोटे स्कोर्पियोसँ गाम लऽ जेबा लेल कहै छथिन्ह, एन.एच. ५७ पर एक्सीडेण्ट, आ सोशल मीडियापर सुजीतक फोटो वायरल।

'सामाजक पिंशाच' मानसी आ मनीष, दुनू गोरे बोर्ड परीक्षामे फस्ट डिवीजनसँ पास। मानसी बारहमी परीक्षामे सेहो फस्ट डिवीजनसँ पास भेल आ बी.ए. मे नाम लिखेलक। बी.ए. तेसर बर्ख, मनीषक कथामे फेर आगमन। ओ इण्जीनियर अछि, पाइ-कौड़ी बला सम्पन्न परिवार। मानसी साधारण परिवारक। मुदा बियाह भेलै। सुधा अछि मनीषक छोटकी बहीन। ओ भाउजकेँ तरह तरहक गप सुनाबै, पैघत्वक दाबी। मानसी दुखी-परेशान रहय लागल, माय-बाबूकेँ केना कहतै? मनीष बाहर रहै छल। मुदा एक दिन ससुर बेंत सँ मारलकनि, मनीषक फोन मानसी नै उठेलक, ओहो कहीं मिलल तँ नै छथि? नैहर आबि गेली, ट्यूशन पढ़बऽ लगली। हाकिम बनि गेली, मानसी राय, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी।आ फेर मनीष आ मानसीक मिलन।

'कुलदीपक' राकेश आ रुबी। दू टा बेटी भेलनि; छन्हि, सुप्रिया आ अनुप्रिया। राकेश नशबन्दी करबऽ चाहै छथि, रुबी केँ लोक सभक चिन्ता छन्हि, निपुतराहा घरेन कहतन्हि। जेठकी दियादनीकेँ सेहो तीन टा बेटीये छन्हि। महिला सभ तीन-चारि बेर सफैया करबैए, बेटाक आसमे। मुदा भूण हत्या राकेशकेँ पसिन्न नै। रुबीक नैहर सासुर सगरो विरोध भेल। राकेश नुका कऽ नशबन्दी करा लेलनि। अगिला पाँच साल बच्चा नै भेलनि तँ टोना-टापर भेल, डाक्टर वैद, ओझा-गुनी सभ ओइठाम रुबी गेली, सासु ससुर लऽ गेलखिन, कतेको ठाम राकेशोकेँ जाय पड़लनि। जेठकीकेँ ताबे बेटाक आसमे दूटा आर बेटी भऽ गेलनि। सुप्रिपा बोर्डमे बिहारमे टॉप भेली। मुदा अनुप्रियाक बेरमे से नै भेल, ओ फेल भेली, रिजल्ट चैलेंज भेल, बोर्डक अव्यवस्थाक पोल खुजल, अनुप्रिया सेहो टॉप केलनि। दादा-दादी जे बबाजी बनि गेल छला, से आब गदगद। सुप्रिया डॉक्टर बनली आ अनुप्रिया जिलाधिकारी। सुप्रियाक विवाह डॉक्टर सुबोध शर्मासँ भेलन्हि। तैयारीक क्रममे अनुप्रियाक भेंट अनुपम रायसँ

होइत रहै छलन्हि, ओहो जिलाधिकारी बनला, दुनू दू जातिक मुदा विवाह सम्पन्न भेल। एकटा बेटी जमाय दुनू डॉक्टर, दोसर दुनू जिलाधिकारी। दुनू बहिन गाममे दादी-दादीक नामपर सूर्यदेव शन्ति भवन बनेलन्हि आ सूर्यदेव शाति भवन फाउण्डेशन ट्रस्ट निबन्धन करेलन्हि। दरभंगामे हॉस्पीटल आ गाममे विद्यालय बनल।सूर्यदेव बाबूक अन्हरजाली टुटलनि।

'बहिनक बियाह'मे विवाह करेनाइ एकटा समस्या केना भेल अछि से तँ अछिये, संगहि वर्णित अछि सोशल मीडिया, प्रेम आ एन.एच. पर होइत एक्सीडेण्ट सेहो। तहिना 'समाजक पिंशाच'मे घरेलू हिंसा, काटर-दहेज व्यवस्था, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सभटा आयल अछि। 'कुलदीपक'मे बेटा-बेटी, बेटाक आसमे भ्रूणहत्या, अन्तर्जातीय विवाह आ शिक्षाक महत्व देखाओल गेल अछि।

'निरवासित जीवन' आ 'बुधनी माइक बेथा' एकटा औपन्यासिक विस्तार लेने अछि आ ऐमे हम रामू सरक रूपमे मैथिली लेल एकटा भावी उपन्यासकारकेँ देखै छी।

माने कथाक संग एकटा समानान्तर कथोपकथन रामू सरक विशेष कलाक रूपमे उपस्थापित भऽ गेल अछि।

- गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक:

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

www.videha.co.in

वसन्तकुंज, नई दिल्ली

16 मार्च 2023

आमुख

पेशासँ शिक्षक मुदा सरकारी नहि, खानगी। रामू सरसँ ख्यात रामचन्द्र रायजी 'सपना साकार' नामक कथा संग्रह लऽ कऽ मैथिली साहित्य जगतमे अप्पन उपस्थिति दर्ज करौला हेन। ओना, 'सपना साकार' जे लघु आ दीर्घ कथा संग्रह छी, हिनक पहिल साहित्यिक कृति छिऐन, मुदा जइ तरहेँ सामाजिक विषय-वस्तु पाठकक समक्ष प्रस्तुत केला हेन तइसँ साबित होइत अछि जे 'रामू सर' माँजल कथाकार छैथ।

ऐ पोथीक पहिल कथा 'तोहीं जीतलेँ हमहीं हारलौं' अछि। ई कथा अन्तर्जातीय विवाहक प्रेम कथा छी। नेहा आ नवीन दुनू दू जातिक रहितो आपसमे प्रेम करै छैथ आ विवाह करए चाहै छैथ। धरि नेहाक पितियौत भाए- नूनू ऐ बिआहक विरोधमे छैथ। ओ नेहाकेँ मारिकऽ गठुल्लामे गारि देबाक बात करै छैथ मुदा नूनूक पत्नीक मदैतसँ नेहा गामसँ निकैल नवीनसँ भेँट करिकऽ सभ बात कहै छैथ आ फेर जेठ बहिन-बहिनोइ लग दिल्ली चलि जाइ छैथ।

एमहर गाममे नेहाक परिवार दिससँ नवीनपर थानामे अपहरणक मुकदमा कऽ देल जाइ छइ। पुलिस नवीनक घरपर दवाब बनबए लगै छइ। गाममे तना-तनी सेहो बढ़ि जाइ छइ। सुख-दुखमे संग रहैबला दू जातिक बीच मारि-पीटक सम्भावना प्रवल भऽ जाइ छै। मुदा गामक समझदार लोकक प्रयाससँ मामला थोड़ेक शान्त होइ छै। पछाइत पता चलै छै जे नेहा दिल्लीमे अप्पन बहिन-बहिनोइ लग अछि। केश स्वत: हल्लुक भऽ जाइ छइ।

छुट्टीमे नवीन गाम अबै छैथ। नेहा सेहो अप्पन बहिन-बहिनोइक संग गाम आबि गेल रहै छैथ।

नेहाक जिद्दपर दुनू पक्षक सर्वसम्मतिसँ नेहा आ नवीनक विवाह

कचहरीमे सम्पन्न होइ छै। विवाहक पछाइत जखन नेहा आ नवीन नूनूकेँ गोड़ लगै छैथ तँ नूनू आशीर्वाद दैत बजै छैथ- “जो तोहीं जितलेँ हमहीं हारलौं।”

‘सपना साकार’ ऐ पोथीक केन्द्रीय कथा छी। किएक तँ ऐ पोथीक नाओं अही कथापर राखल गेल अछि।

प्रस्तुत कथाकेँ आत्मकथा कहल जाए तँ कोनो अतिश्योक्ति नहि हएत।

मृत्युभोजक बदलामे गरीब छात्र-छात्राकेँ आर्थिक मदैत, चंसगर छात्र-छात्रा सभकेँ सम्मान करब, प्रोत्साहन देब कथाकारक सकारात्मक सोच छिऐन। माए-बापक संपीण्डन दिन साहित्यिक गोष्ठी आ पोथी लोकार्पण कराएब, ईहो एकटा पैघ बात भेल। गामक एगारहटा पढ़ल-लिखल युवक द्वारा ई संकल्प लेब जे हम सभ कर्मकाण्ड आ मृत्युभोजक विरुद्ध एकटा आन्दोलन रूपमे काजकेँ आगू बढ़ाएब, एकटा पैघ उपलब्धि भेल।

फेंकाएल जिनगी नारीपर पुरुषक अत्याचारक मार्मिक कथा छी। जे फेंकनी जन्मक समय फेंकाएल ओकर जिनगी फेंकाएले रहि गेल। फेंकनी, जेकर दोसर नाओं बेचनी सेहो छल, ओ बिआहसँ पहिने नैहरमे भगमन्त बुझल जाइ छेली धरि विवाहक पछाइत सासुरमे पतिक अत्याचारसँ पागल भऽ पोखरिक पानिमे ठिठुरिकऽ प्राण गमेली।

‘निरवासित जीवन’ महिला उत्पीड़नक मार्मिक कथा छी। हमरा तँ लगैत अछि जे एहेन घटना शायद कथाकारक टोल-पड़ोसमे घटल छैन जेकर पात्र बदैल कऽ कथाकार लिपिबद्ध कऽ कथाक रूप देलैन।

‘बुधनी माइक बेथा’ सेहो नारीपर पुरुषक अत्याचारक मार्मिक कथा छी। दबंग बेकती गरीब विधवाक साथ केहेन-केहेन बेवहार करैत अछि तइ बात सभकेँ कथाकार ऐ कथामे उजागर केला हेन। संगहि पुलिस प्रशासनक पोल सेहो नीक जकाँ कथामे खोलल गेल अछि।

बुधनी माए दरोगासँ अप्पन बेथा कहै छैथ मुदा दरोगा बुधनी

माएकेँ टरकाबए चाहैत अछि। जखन बुधनी माए दरोगाकेँ कहलैन- 'जँ अहाँ हमर निशाफ नहि करब तँ हम अपना देहमे अगि लगा कऽ एत्तै जान दऽ देब।'

दरोगा बुधनी माएसँ सलामी मंगैत अछि मुदा बुधनी माए सलामी नइ बुझली। तैपर दरोगा फरिछाकऽ कहलकैन- 'कैंचाऽऽऽ।'

बुधनी माए अप्पन गेठरीमे बान्हल दू साए टका खोलैत दरोगाकेँ कहलखिन- 'हजूर, ई हमर बोइन केलहा ढौआ छी मुदा हम अहाँकेँ देब।'

दरोगा निर्लज्ज जकाँ रूपैआ लऽ अपना जेबीमे रखि लइए। बुधनी माए सोचए लगै छैथ, ठीके लोक कहै छै पुलिस अपना बापोकेँ नइ होइ छै।

'नशामुक्त गाम' कथामे कथाकारक सकारात्मक सोच झलैक रहल छैन। राजू सरक अथक प्रयाससँ अखिर गाम नशामुक्त भइये जाइए, मुदा ऐ लेल हुनका बेस संघर्ष करए पड़ै छैन।

जखन गाम नशामुक्त भऽ जाइ छै तँ जीविका समूह राजू सरकेँ पाँचो टूक कपड़ासँ सम्मान करै छैन। सम्मान पाबि राजू सरकेँ मनमे उठै छैन, वास्तवमे नीक काजक फल नीके होइ छै।

'बहिनक बिआह' कथामे नशाखुरानी गिरोह केना परदेशसँ कमाकऽ लौट रहल बेकतीकेँ नशा खुआ कऽ लूटि लइए, तइ बातकेँ ऐ कथामे कथाकार नीक जकाँ उजागर केलैन अछि। कथा पढ़लासँ स्वत: मनमे विचार उठत जे अपरिचित आ अनजान बेकतीपर विश्वास नहि करवाक चाही।

सुजीत अप्पन छोट बहिन- रेखाक बिआहक लेल की-की सपना संजोगने छल। दिल्लीमे नीक ढौआ कमा जखन पाइ-कौड़ी, गहना-जेबर आ सर-समानक संग गाम अबैत छल तखन दरभंगा बस स्टेण्डमे नशाखुरानी गिरोहक शिकार भऽ गेल। नशाखुरानी गिरोह हुनकर ढौआ-कौड़ी, गहना-जेबर आ सर-समने टा नहि लूटि लेलकैन धरि मारिकऽ बेहोशी केर हलतमे सड़कक कातमे फेंक देलकैन।

सुजीतकेँ जखन अस्पतालमे हेश आएल तँ मइक हाथ पकैड़ कऽ कहए लगल, 'माए, रेखाक बिआह... । केना हेतइ... हे भगवान... ।'

महिला उत्पीड़न, दहेज आ नारी सशक्तिकरणपर आधरित समाजक पिशाँच कथा बेस रूचिगर अछि।

कथाकारक कहब छैन, मनुक्ख जखन संकल्पित भावसँ ठानि लिअए आ जुनुनक संग इमानदारीपूर्वक तैयारी करए तँ सफलता भेटबे टा करतै।

मानसी सासुरमे जखन सासु-ननदि द्वारा प्रताड़ित आ ससुरसँ मारि खा नैहर अबै छैथ तँ एकटा संकल्पक संग चटिया सभकेँ ट्यूशन पढ़बए लगै छैथ संगहि अपनो बिहार लोक सेवा आयोग परीक्षाक तैयारी करै छैथ। पहिल बेरमे ओ असफल भऽ जइ छैथ। मुदा ओ हतोत्साह आ निराश नहि भऽ ऐगला बर्खक परीक्षाक लेल आरो लगनपूर्वक तैयारी करै छैथ आ सफल भऽ प्रखण्ड विकास पदाधिकारीक पदपर नियुक्त होइ छैथ।

एक प्रकारसँ ई कथा प्रेरक कथा सेहो छी।

'कुलदीपक' कथामे कथाकारक बड्डु पैघ सकरात्मक सोच छैन। अखन बेटीकेँ लोक अभिशाप आ भार बुझि रहल अछि। तँए कन्याभ्रूण हत्या होइए। लोक बेटाकेँ कुलक दीपक बुझैए मुदा बेटीकेँ भार, अभिशाप आ पाप आर ने जानि की-की। जइ परिवारमे एकसँ दोसर बेटीक जन्म भऽ गेल तँ ओइ परिवारमे मातम पसैर जाइत अछि। देखल जाए-

राकेश शर्माक पत्नी रूबी जइ दिन दोसर बेटीक जन्म देलखिन तइ दिन घरक चुल्हिमे पजारो ने पड़लै। परिवारजन घोर चिन्तामे डूबि गेला।

एकटा पड़ोसिन बलाटवालीकेँ कानि-कानि राकेशक माए कहि रहल छेली, 'देखियौ कनियाँ, हमरा घरक दिन केहेन खराप भऽ गेलइ। जेठकियोकेँ तीनटा बटीए छै आ छोटकियोकेँ दूटा बेटीए भऽ गेलइ। जानि नहि भगवान हमरा घरमे पूतक मूँह कहिया देखौथिन।'

मुदा कथा नायक राकेशकेँ कोनो चिन्ता-फिकिर नहि होइ छैन। ओ अपना माए-बाबूसँ कहलैन- 'अहाँ सभकेँ बेटाक प्रति एतेक मोह आ बेटीक प्रति एतेक घृणा किए अछि? अहाँ सभ बेटा-बेटीकेँ समान दृष्टिसँ देखियौ।'

राकेशक बात सुनि माता-पिताक तामस चरमपर पहुँच गेलैन। पिताजी जोरसँ बजला- 'राकेश, तूँ हमरा सभकेँ एतेक नहि पढ़ावह। हम किछ नहि बुझवह। हमरा एकटा कुलदीपक चाही जइसँ परिवार आगू बढ़त।'

राकेश बजला- 'बेटा-बेटीमे कोनो फर्क नहि छै। हम एकरहि सभकेँ बेटा बुझि नीक शिक्षा आ संस्कार देवाक प्रयास करब। यएह सभ हमरा सबहक सभ मनेरथ पूरा करत।'

आ से राकेश केलैथ। पहिने पत्नीकेँ परिवार नियोजनक ऑपरेशन करबए कहलैन मुदा जखन रूबी तैयार नहि भेली तँ चुपेचाप अपने नशबन्दी करा लेलैथ। जखन तीन-चारि बर्ख धरि रूबीकेँ ऐगला कोनो सखा-सन्तान नहि भेलैन तँ राकेशक पिताजी सूर्यदेव बाबू आ माए शान्ति देवी निराश भऽ बबाजी भऽ गेलैथ।

राकेश अपना परिवारकेँ दरभंगामे रखि दुनू बेटीकेँ नीक शिक्षा दिऐबाक लेल संकल्पित भऽ ओइ पाछू लागिकऽ पड़ि गेला। बेटी सभ सेहो पढ़ैमे चंसगर आ लगनशील। एकटा बेटी डॉक्टर आ दोसर जिला पदाधिकारी बनलैन।

जेठकी बेटी डॉ. सुप्रिया अपन पति डॉक्टर सुबोध शर्माक सहयोगसँ दरभंगामे रूबी-राकेश नामक पैघ अस्पताल बनबौलैन। ओइ अस्पतालमे इलाजक लेल आधुनिक सभ सुविधा उपलब्ध करौल गेल। ऐ अस्पतालमे गरीब परिवारक मरीजक इलाज कम-सँ-कम खर्चपर होमए लगल।

छोटकी बेटी अनुप्रिया जे जिला पदाधिकारी पदपर नियुक्त छेली, पति अनुपम राय जे जिले पदाधिकारी पदपर नियुक्त छला, संग मिलिकऽ

गाममे राकेश-रूबी गरीब कल्याण विद्यालयक स्थापना केलीह, जेकर उद्घाटन दादा-दादीसँ करबौलैन। ऐ विद्यालयमे आधुनिक शिक्षाक सभ बेवस्था कऽ गरीब-गुरबाक बच्चाकेँ गुणवत्तापूर्ण मुफ्तमे शिक्षा देल जाए लगल।

पूरा क्षेत्रमे सुप्रिया आ अनुप्रियाक नाओं गर्वसँ लेल जात छल। जखन राकेशक पिताजी सूर्यदेव बाबू बेमार पड़ला तँ हुनका रूबी-राकेश नामक ओही अस्पतालमे भर्ती करौल गेलैन। जखन ओ बेसी बेमार भऽ गेला तँ एक दिन दुनू पोती आ पोत जमाएकेँ बजबौलैन।

दुनू पोतीक हाथ अपना हाथमे लऽ कँपैत आवाजमे ओ बजला-

“बेटी मनुक्खकेँ बेटा आ बेटीमे अन्तर नहि बुझवाक चाही। पहिने हम अन्हारमे रही। अहाँ दुनू बहिन अपन कर्मसँ हमर अन्हरजालीकेँ तोड़लौं। हमरा माफ कऽ देब। अहाँ दुनू बहिन हमरा कुलक दीपक छी।”

ऐ तरहेँ कथाकार अपना कथाक माध्यमसँ स्पष्ट कहलखिन हेन जे बेटियो कुलक दीपक भऽ सकैए, वशर्ते कि ओकरा ओहन शिक्षा आ संस्कार भेटइ।

- नन्द विलास राय

भपटियाही, सखुआ

15 मार्च 2023

अप्पन बात

मैथिली साहित्यजगतमे विद्वान रचनाकारक कमी नहि अछि। एक-सँ-बढ़िकऽ–एक विद्वान सभ साहित्यक सभ विधामे अप्पन योगदान कए मैथिली साहित्यक कोषकेँ भरैत रहला अछि। तैबीच हमहूँ अप्पन 'सपना साकार' नामक कथा संग्रह लऽ कऽ अपने सभक समक्ष उपस्थित भेलौं अछि। ई हमर पहिल पोथी छी। एक तरफ तँ आनन्दक अनुभूति भऽ रहल अछि मुदा दोसर तरफ दुगदुगी सेहो बनले अछि जे सुधि पाठकक की प्रतिक्रिया होएत। नीक हुअए आकि बेजाए मुदा हमरा किछु सीखबाक अवसरि तँ अबस्से भेटत।

कौलेजे समयसँ हमर रूचि साहित्यसँ रहल अछि। पत्र-पत्रिकाक संग साहित्यक अनेको विधाक पोथी कीनब, कीनिकऽ नीकसँ राखब, पढ़ब, गुनब आदि हमर आदैत जकाँ रहल अछि। 1994 इस्वीमे, जहिया हम बी.ए. प्रतिष्ठाक तेसर बर्खक छात्र रही, तहियेसँ थोड़-थाड़ लिखब शुरू केने रही, मुदा से हिन्दीमे। कहियोकाल कोनो-कोनो पत्रिकामे छपितो छेलए। वर्तमानमे ओकर थिरीथमन नहि अछि। बीचक दौड़ हमर जीवनक संघर्षशील दौड़ रहल। लगातार नहि लिखि सकलौं। तथापि, जखन जे झोंकपर आएल से लिखैत गेलौं।

साहित्यक प्रति हमर प्रेमक पाछू श्रद्धेय अशोक सेकसरिया, कोलकाता (हिन्दीक मूर्धन्य साहित्यकार आ संत)क आशीर्वाद रहल अछि। किछु दिन हमरा हुनकर सानिध्य सेहो प्राप्त भेल अछि। संग-संग हमर जेठ बहिन श्रीमती सुशीला राय आ बहिनोइ श्री बालेश्वर राय सेहो हिन्दीक लेखक छैथ। श्रीमती सुशीला रायक लिखल पुस्तक 'एक अनपढ़ कहानी' चर्चित रहल अछि। जेकर अनुवाद अनेको भाषामे भऽ चुकल अछि। हमरा हिनका दुनू गोरेसँ प्रेरणा सेहो भेटैत रहल अछि।

मैथिलीक किछु कथा आ उपन्यास सेहो बीच-बीचमे भेट जाए तँ पढ़ि ली। 2001 इस्वीमे 04 मई-के हमर बिआहक कुमरम रहए, ओही दिन डाक द्वारा आकाशवाणी दरभंगाक एकटा चिट्ठी भेटल, जइमे 'नशापानक कुप्रभाव' विषयपर वार्ता लऽ कऽ हम बजाओल गेल रही। भाग लेलौं। प्रसारण भेल। तेकर बाद किछु आरो वार्ता सभक प्रसारण भेल। पछाइत आकाशवाणी दरभंगाक किछु परिचर्चामे सेहो भाग लैत रहलौं।

फेर रोजी-रोटीमे लागि गेलौं आ लेखनक क्रम भंग भऽ गेल। 2015 इस्वीमे आदरणीय मणिकांत झाजी दरभंगासँ फोन केलैन, 'मैथिली नाटकक इतिहास आ सिनेमा' नामक पोथीक लेल अपना गामक 'मैथिली नाटकक इतिहास' आलेखक रूपमे पठाबी। पठौलिऐन। जे उपरोक्त नामक पोथीमे छपल। एतए ई जनतब दऽ दी जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा वर्षोसँ महाकवि विद्यापतिक 'निर्वाण दिवस' पर कार्तिक धवल त्रयोदशी दिनसँ तीन दिवसीय मिथिला विभूति पर्वक आयोजन समारोहपूर्वक मनाबैत आबि रहल अछि। ऐ आयोजनक एकटा बौद्धिक पक्ष होइत अछि- समसामयिक विषयपर राष्ट्रीय संगोष्ठी। ऐ अवसरिपर पोथी सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। ओइमे हम 2015 इस्वीसँ लगभग सभ साल भाग लैत रहलौं अछि। श्री मणिकान्त झा द्वारा सम्पादित आ संस्थान द्वारा प्रकाशित पोथीमे, एखन धरि सभ वर्ष हमर आलेख सेहो स्थान पबैत रहल अछि।

आब कथा क्षेत्रमे केना एलौं से जानि लेल जाए। 2017 इस्वीमे 23 सितम्बर-के मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध कथागोष्ठीमे 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन आदरणीय श्री नारायण यादवजीक गाम डुमरा, अन्धराठाढ़ीमे आयोजित भेल रहए। ई समाद हमर मित्र श्री वैद्यनाथी रामजी, जे अखन सहायक प्रोफेसर छैथ, देलैन आ चलबाक आग्रह केलैन। गेलौं। मैथिली कथाक लेल समर्पित उक्त कार्यक्रम देखि बड़ प्रभावित भेलौं। गोष्ठीमे पैघ-पैघ विद्वान साहित्यकार रहैथ। ओहीठाम

अप्पन पहिल कथा 'बुधनी माइक बेथा' पाठ केलौं। समीक्षक सभकेँ कथा आ वाचन शैली नीक लगलैन। बादमे ई कथा कोलकातासँ बहराइत 'श्री मिथिला' पत्रिकामे प्रकाशित सेहो भेल।

सगर राति दीप जरय कार्यक्रममे मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध विद्वान आदरणीय श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री राम विलास साहु आ श्री नन्द विलास राय मैथिलीमे कथा लिखबाक लेल उत्साहित केलैन। तेकर बाद नियमित रूपेँ कथा गोष्ठीमे भाग लेबए लगलौं आ अप्पन कथा पाठ करए लगलौं। ऐ गोष्ठीक आयोजन हर तीन मासपर समारोहपूर्वक मनाओल जाइत अछि। अर्थात सालमे चारिटा आयोजन, मार्च, जून, सितम्बर आ दिसम्बर माहमे, होइत अछि। ऐठाम हमरा बहुत किछु सिखबाक अवसर भेटैत रहल अछि।

31 दिसम्बर 2022क आदरणीय श्री अशोक झा 'अविचल' जीक संयोजकत्वमे रहुआ संग्राममे सगर राति दीप जरय कार्यक्रम आयोजित भेल रहए। जइमे हमहूँ भाग लेने रही। ओइठाम हम ऐगला कथागोष्ठीक आयोजन सहुरिया नवटोली गाममे हुअए, प्रस्ताव रखलौं जे सर्वस्वीकार्य भेल। अत: 25 मार्च 2023क अपना गाममे करेबाक लेल हम माला उठा लेलौं। मनमे भेल जे जखन एतेक पैघ आ ऐतिहासिक कार्यक्रम अपना गाममे होएत तँ किएक ने अपनो एक गोट पोथीक लोकार्पण उक्त अवसरिपर कराबी। ई बात हम सर्वप्रथम मैथिली सेवक डॉ. उमेश मण्डल लग रखलौं। ओ खूब उत्साहित केलैन आ पोथी छपबाक भार सेहो अपना ऊपरमे लेलैन। तेकरे परिणाम छी जे आइ ई पोथी अपनेक हाथमे अछि।

ऐ पोथीमे लघुकथा आ दीर्घकथा मिलाकऽ कुल नौ गोट कथा अछि। हमरा जनैत कथाकार अप्पन कथाकेँ अर्थात रचनाकेँ समाजमे घटल घटना वा वर्तमान सामाजिक ताना-वानासँ बुनल चद्दैरमे कल्पनाक रंग चढ़ा रंगीन कए सुन्दर बनबै छैथ तँए हमहूँ सएह केलौं अछि। कोनो कथा किनको लक्ष्यकेँ, किनको भावनाकेँ ठेँस पहुँचेबाक उद्देश्यसँ नहि

लिखल गेल अछि। तथापि एहेन किनको बुझना जाए तँ ओ मात्र संयोग भऽ सकैत अछि। जेना, सपना साकार कथाकेँ छपैसँ पहिने जे मित्र पढ़ला आ सुनला ओ हमर आत्मकथात्मक कथा मानए लगला। मुदा सेहो सत्य नहि अछि ओ हमर कल्पना मात्र छी।

हम ओइ समादर बेकतीक प्रति हृदयसँ आभार व्यक्त करै छिऐन जे ई पोथी छपेबामे प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूपसँ सहयोग केलैन। जेना, डॉ. उमेश मण्डल, जे हमरा सदिखन उत्साहवर्द्धन करैत रहला अछि। आदरणीय अभिभावक श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, आदरणीय श्री गजेन्द्र ठाकुर, जे आब हमरा उपन्यास लिखबाक लेल उत्साहित कए रहल छैथ। संगहि आदरणीय श्री नन्द विलास रायकेँ हम बिसैर नहि सकैत छिऐन जे हमर सभ कथाक प्रूफ सेहो देखलैन आ लिखबाक लेल सदिखन प्रेरित करैत रहला अछि।

हम धन्यवाद दइ छिऐन अप्पन अन्तरंग मित्र श्री उमंगजीकेँ, जे पटना सचिवालयमे कार्यरत रहितो अप्पन बहुमूल्य समय निकालि सभ कथाकेँ पढ़ि अपन विचार दैत रहला अछि। बेटी सुश्री शशिप्रभा आ पत्नी रंजना कुमारी (शिक्षिका) सेहो सभ कथाकेँ पढ़ि बरबैर नीक-बेजापर चर्चा करैत रहली अछि। हिनकहु सभक प्रति हम आभार प्रकट करए चाहब।

अन्तमे सुधि पाठकगणसँ निवेदन जे सभ कथाकेँ पढ़िकऽ नीक आ बेजाए केर जनतब दी जइसँ हमरा आगू सिखबाक अवसरि भेटत। अही आशा ओ विश्वासक संग...।

- रामचन्द्र राय

अभिनव शिक्षा निकेतन, सहुरिया- नवटोली

21 मार्च 2023

सम्पर्क: 9931092370

कथा-क्रम

तोहीं जितलेँ हमहीं हारलौं/23

सपना साकार/30

फेंकाएल जिनगी/43

निरवासित जीवन/50

बुधनी माइक बेथा/68

नशामुक्त गाम/78

बहिनक बिआह/88

सामाजक पिशांच/96

कुलदीपक/114

तोहीं जितलेँ हमहीं हारलौं

हमरा गामक बगलमे एकटा गाम अछि बिशनपुर। ओइ गाममे लगभग पाँच-छह जातिक लोक बास करैत अछि। जइमे सवर्ण आ गैरसवर्ण सभ मिलि-जुलिकऽ रहै छैथ। बेर-कुबेर पड़लापर सभकियो एक-दोसरकेँ मदैत करबाक लेल तैयार रहैत अछि।

अही गामक एकटा एहेन युवक जे गैरसवर्ण छैथ, नाम छिऐन नवीन। नवीन गोर-नार सुन्दर सन आकर्षक चेहराबला युवक छैथ। नवीनक पिताजी किसानी करै छेलखिन आओर छोटका काका भारतीय थलसेनामे फौजी रहथिन। काकाकेँ वर्दीबला रूतबा देखि नवीन सेहो फौजी बनबाक सपना देखए लगला। दसमी पास केलाक बादेसँ ओ तैयारीमे जूटि गेला। दौग-धूप, कूद-फान इत्यादि जेतेक तरहक प्रक्रियाक आवश्यकता होइ छै भर्तीक लेल, से नवीन तन-मनसँ करए लगला।

नवीनक घरक ठीक सामने लगभग पाँच साए मीटरक दूरीपर सड़कक कातेमे एकटा सवर्ण परिवारक घर छइ। जइमे नेहा नामक सुन्दर सन कन्या रहै छैथ। तीन बहिनमे नेहा सभसँ छोट। भाए एक्कोटा ने, जखन ई दू बरखक छेली तखने हिनक माइक स्वर्गवास भऽ गेलैन। जेठ बहिन अपना पतिक संग दिल्लीमे रहै छैथ।

आओर मैझली बहिन अपना सासुरमे। नेहा अपना बाबूजीक संग अपना घरमे असगरे रहै छेली। नेहाक पितियौत काका सभक खूब झमटगर परिवार छेलैन।

नेहा, नैन्हिएटा सँ नवीनसँ नेह करैत छली। एक्के स्कूलमे दुनू गोरेक पढ़ाइ-लिखाइ होइ छेलैन। ई दुनू गोरे जेना-जेना नमहर होइत गेलैथ तेना-तेना दुनू गोरेकेँ एक-दोसराक प्रति आकर्षण बढ़ैत गेलैन। दसमी पास केलाक बाद नेहाक पढ़ाइपर रोक लागि गेलैन। हिनकर पिताजी सोचलैन जे मइटुग्गर बेटी अछि, अट्ठारह बरख पूरैत-पूरैत एकरो बिआह-दान करि कऽ निचेन भऽ जाएब। बेटा नइ अछि तँ की भेल...। तीनू जमाइयेकेँ बेटा मानि कोनो-धरानी जिनगी कटिए जाएत।

समयक संग नवीन नीक नम्बरसँ बारहमी पास केलाह। पीठेपर सेनामे भर्तीक लेल विज्ञापन निकललै। टोलक किछु संगी-साथीक संग नवीन सेहो फारम भरलैन। एक्के मासक पछाइत शारीरिक दक्षता जाँचक लेल बजौल गेलैन। नवीन ससमय उपस्थित भेला। मेहनत पहिनेसँ करिते छला से पास भऽ गेला। आब रहि गेलैन मेडिकल। एकर सम्पूर्ण तैयारीमे जूटि गेला। भोरे उठिकऽ आवश्यकतानुसार तीन घन्टा तक खूब कसरत करै छला। समुच्चा देह पसेनासँ तर-बतर भऽ जाइत रहैन। खान-पानपर सेहो बेस धियान रखै छला। किछु दिनक बाद मेडिकल लेल बजौल गेला। ससमय निश्चित जगहपर पहुँचला। मनमे खुशीक संग दुगदुगी सेहो रहैन। की हएत की नहि...। मुदा मेहनतक फल मिठगर होइते अछि किने से ईहो पास कइये गेला। एहिमे फौजी कक्काक आशीर्वाद सेहो किछु काज केलकैन। घरमे खुशीक ठेकान नहि छेलइ। माए-बाबू देवता-पितरक खूब कौबला-पाती केने छेलखिन आओर मने-मन ईहो विचारने रहैथ जे बेटाक पहिल महिनाक दरमाहासँ पहिने कौबले-पाती पूरा करब।

एकर तीन महिनाक बाद कोलकातामे नियुक्ति भेलैन। एक सप्ताहक बाद नवीनकेँ एक बर्खक प्रशिक्षणक लेल मुम्बइ भेज देल गेलैन। नौ मासक कठिन प्रशिक्षणक पछाइत एक मासक छुट्टी

भेलैन। खुशी-खुशी गाम एला। जेना आगिमे तइप कऽ सोना, सोनारक हथौड़ीक चोट खा कुन्दन बनि चमकैत अछि तहिना नवीनमे एकटा अलगे परिवर्तन भऽ गेल छेलैन। ओ अपना बात-विचार आ बेवहारसँ गाम-समाजक लोककेँ अपना तरफ खिंचैत छला। देखिते-देखिते छुट्टी बीति गेलैन आओर निश्चित समयसँ अपन काजपर नवीन पहुँच गेला।

नवीनकेँ पहुँचलाक चारिम दिन भने प्रशिक्षण स्थलक गेटपर भिनसरे-भिनसरे नेहा पहुँचली। गेटपर तैनात सिपाही नेहाकेँ भीतर नहि जाए देलकैन। ओ जइ काजसँ एली हेन से लिखकऽ देबाक लेल कहलकैन। नेहा एकटा कागतपर अपन परिचय लिखैत नवीनसँ मिलेबाक आग्रह केलखिन। गेट परक समदिया समाद लऽ कऽ कार्यालयमे पहुँचा एला। कार्यालयसँ फोटो खिंचनिहार आबि कऽ नेहाक फोटो खिंचलकैन। मैदानमे तखन प्रशिक्षण चलैत रहइ। प्रशिक्षणक बाद नवीनकेँ कार्यालयमे बजा सभ बातक जानकारी देल गेलैन। वरीय पदाधिकारी हिनका कने डाँटबो केलकैन आओर कहलकैन- “यहाँ फिर कभी किसी को मत बुलाना।”

दूटा सिपाहीकेँ आर नवीनक संग लगा देलकैन आओर नेहासँ मिलबाक लेल एक घन्टाक समय देल गेलैन। संगहि गेटसँ बाहर जेबाक आदेश नहि भेटलैन।

नवीन भारी सोचमे पड़ि गेला। चिन्तित मुद्रामे नमहर-नमहर डेगसँ विदा भेला। सोचैत जा रहल छला...। एहेन कोन बात भऽ गेलै जे नेहा एतए तक पहुँच गेली। हम हुनका एतुक्का पता दऽ कऽ बड़का गलती केलौं। नवीनक दिलमे धुकधुकी बढ़ि रहल छेलैन जे की पता आगू की हएत। हे भगवान रक्षा करब...। ताबत धरि छहरदेवालीक गेट लग पहुँच गेलाह। लोहाक गेटमे भरि छाती ऊपरक बाद जाली जकाँ लगौल गेल छेलइ। नवीनक नजैर नेहापर पड़लैन। ओ नेहाक

बगे-बानि देखि असहज भऽ रहल छला जे कोनो अनहोनी ने हुए, मुदा नवीनपर नेहाक नजैर पड़िते नेहाक दिलमे जेना तूफान ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ जोर-जोरसँ कानए लगली। चुप हेबाक नामे ने लऽ रहल छेली। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छेलैन। नेहाक नोरक रेतमे नवीनक दिल जेना भँसिया रहल छेलैन मुदा ओ अपना दिलकेँ मजगुतीक संग सम्हारैत कनियेँ जोरसँ बजला- "चूप भऽ जाउ..। आब नहि कानू..। आओर जल्दी बताउ जे एहेन कोन विकट परिस्थिति भऽ गेल जे अहाँ एतए तक पहुँचलौं अछि..। हमरा अहाँसँ मिलबाक लेल मात्र एक घन्टाक समय भेटल अछि। हम एतए बड़ कड़गड़ अनुशासनमे बान्हल छी।"

परिस्थितिकेँ देखैत नेहाकेँ गेटक भीतर बजौल गेलैन। गेटक बगलमे देवालक कातमे बैस कऽ दुनू गोरे बतियाए लगला। नेहा बजली-

"अहाँ पचीस तारीख-के भोरमे गाड़ी पकैड़ लेलौं लेकिन रातिमे जे अपना सबहक मिलन भेल रहए से हमर पितियौत नूनू भैया देखि लेने रहैथ। साँझमे सभटा गपकेँ आओर बढ़ा-चढ़ा कऽ हमरा बाबूजीकेँ कहि देलखिन। से, बाबूजीकेँ बड़ खराब लगलैन। लगबो केना ने करितैन। रातिमे दुनू गोरे मिलिकऽ हमरा बड़ मारि मारलाह। केतेको निशान हमरा देहमे अखनो अछिए। कारी-सियाह भऽ भऽ गेल अछि। भैयाक तामसक सामने हमर बाबूजी बेबस भऽ गेला। अहुना हिनका कमजोर बुझि ई सभ सभदिन दवेलेमे रखलखिन। ओइ दिन हमरा ई सभ मारि-पीट कऽ घरमे बन्न कऽ ताला लगा देला। हम भरि राति घरमे केना बितेलौं से हमहीं जनै छी। भैया बाबूजीकेँ कहलखिन-

"काका, हमरा काल्हि रोकब नहि। हम काल्हि रातिमे अइ छौड़ीकेँ मारिकऽ गठुला-घरमे गाइर देबइ। ई कुल-खनदानक नाम हँसबैपर लागि गेल अछि। अपना जातिक लड़का रहितै तँ बिआहो

करा दितिऐ, मुदा ई तँ छोटका जातिसँ...। हँ, एकटा गप आओर कहि दइ छी.. जँ हमरा काल्हि रोकब तँ अहूँकेँ देखि लेब..।”

बाबूजी भैयाक डरसँ भोरे-भोर मझिली दीदीक गाम चलि गेला। ऐगला दिन दस बजे हुनकर पत्नी माने हमर भौजी ताला खोललीं आ हमरा प्रति सहानुभूति देखबैत बजली-

“बुच्ची यै, भैया बड़ तमसाएल छैथ। रातिमे पागल जकाँ करै छला। हिनकर तामस बड़ खराप छैन। अहुना भाँग-गाँजा, दारू पीबैबला मनुक्खकेँ कोन बिसवास..। आइ फेर ई रातिमे की करता तकर कोनो ठेकान नहि। ई कसाइ छैथ। हम केना कऽ हिनका लग जीवन बितबै छी से हमहीं जनै छी। हमरा जगहपर दोसर मौगी रहितै तँ रोज गुहाँ-गंजन होइतै। लेकिन हम चुप्पे रहै छी। की करब केतए जाएब, आब तँ कोनो धरानी एतै ने जीवन गुदस करए पड़त। हमरा सहने आ चुप्प रहने तूँ खुश रहबह तँ रहह।

से हे बुच्ची, अहाँ तँ गलती कए चुकल छिऐ। सत्त पूछी तँ हुनको तमसाएब वाजिबे छैन। लेकिन ओ कने हद कय दैत छथिन से हमर विचार अछि जे अहाँ चुपेचाप किछु दिनक लेल मझिली दीदी लग चलि जाउ। मुदा अइ विचारक लेल हमर नाओं नहि खुजबाक चाही। कनी दिन बाद हुनको तामस कम भऽ जेतैन तँ बुझल जेतइ।”

भौजीक देल विचारपर हम किछु नहि बजलौं मुदा कनैत-कनैत हामी भरि देलिऐ। भौजीकेँ घरसँ निकलला बाद हम माएबला सभटा गहना लऽ लेलौं। अहाँक देल किछु रूपैआ संगमे रहबे करए। हम गाछी दिसन जाइक बहन्ने घरमे ताला लगा कऽ ओइठामसँ निकैल गेलौं। अहाँसँ मिलबाक उत्कंठा लऽ जी-जान अवधारिये कऽ चललौं जे अहाँसँ भेँट भऽ गेल तँ ठीक छै नहि तँ बड़की दीदी लग दिल्ली चलि जाएब। आओर अहाँक प्रशिक्षण समाप्त भेलाक बाद..। जीयब तँ

अहींक संग आ मरब तँ अहींक संग।

एमहर गाममे तँ कोहराम मचि गेलइ। नेहाक परिवार दिससँ नवीनपर अपहरण केस कए देल गेलइ। पुलिस नवीनक घरमे दवाब बनबए लगलै। टोलमे तनाव उत्पन्न भऽ गेलइ। दुख-सुखमे संग रहैबला लोकक बीच, मारि-पीटक सम्भावना प्रबल भऽ गेलइ। ई एकटा जातीय मुद्दा बनि गेल आओर दुनू जातिक बीच कखन खून-खराबा होएत तेकर कोनो ठीक नहि छल। मुदा किछु साकारात्मक विचारक लोकक हस्तक्षेपसँ सुलह-समझौता कएल गेल। थानामे रूपैआ-पैसाक लेन-देन सेहो नीके जकाँ भेलइ। खोजवीन केलाक बाद पता चललै जे नहा दिल्लीमे अपना दीदी लग अछि। केस अपने-आप हल्का भऽ गेलइ। ओइ समयमे मोबाइल नहि रहै जे जल्दी पता चलितै। ओइ समय चिट्ठीए-पत्रीसँ काज चलइ।

बड़की दीदी आ हुनकर ओझा नेहाकेँ समझेबाक प्रयासमे एँड़ी-चोटी एक कए देलैन जइसँ नेहा थोड़ेक हिलली जरूर मुदा नूनू भैयाक अपमानजनक बेवहार, गारि-मारि आदि मोन पड़िते नेहा अपन प्रेमपर अडिग रहली।

नवीन प्रशिक्षण पूरा केलाक बाद गाम एला। तावत धरि नेहा सेहो अपना दीदी आओर जीजाक संग गाम आबि चुकल छेली। नेहा नवीनक संग बिआह करबाक जीदपर अड़ल रहली। ओ बजली-

“हमर ब्याह नवीनक संग नहि करब तँ हमरा जे मोन फुराएत से हम करब।”

परिवारक लोककेँ हारि मानए पड़लैन आओर बिआहक दिन तय कएल गेल। दुनू पक्षक सर्वसम्मतिसँ कचहरीमे दुनू गोरेक बिआह सम्पन्न भेलैन। नेहाक परिवारसँ नूनूकेँ छोड़ि सभकियो शामिल भेला।

नूनूजी ओइ दिन भिनसरे चौकपर जा दूध, चीनी, केरा, काजू,

किशमिश आदि अन्यान्य माशाला मिला दू गिलास भाँगक शर्बत पीब लेलैन आओर गामपर आबि अइ घटनापर चिन्तन-मनन करए लगला। भाँगक निशामे कखनो आसमानक सैर करए लगैथ तँ कखनो भूँइयाँमे होथरिया देबए लगैथ। एक मन होइन जे हमहूँ कचहरी चलि जाइ तँ दोसर मन कहैन जे धूर्र कथी ले जाएब। अही तरहेँ सोचैत-सोचैत नूनूकेँ नीन आबि गेलैन।

नूनू थोड़बेकाल सुतला कि दूटा कुकुर-कटौझ करैत आँगनमे आबि उठा-पटक करए लागल जइसँ चहाइत धड़फड़ाकऽ उठि कुकुरपर छुटैत बजला- “सार रौ, तहूँ हमरे चिढ़बैले एलहेँ की।”

नूनूकेँ कनी भक टुटलैन। आगू बढ़ि जा कऽ लघुशंका कए कलपर जा कुरुर कऽ एक लोटा जल पीबि पुन: ओछाइनपर जा पड़ि रहला। ओछाइपन पड़ि तँ रहला मुदा नीन नहि होनि, मनमे उठि गेलैन जे आजुक धिया-पुता गार्जनक केतेक मान रखैत अछि। युवक-युवती आपसी प्रेममे आन्हर भऽ माए-बापक मान-सम्मानक कोनो लेहाज नहि करैत अछि..! पुन: नूनूक मनमे उठलैन, हम नेहाक संग जँ दुर्व्यवहार नहि कऽ प्रेमसँ बुझैबितिऐ तँ किनसाइत भाए-बहिनक प्रेम एकटा युवक-युवतीक प्रेमकेँ जीत सकै छल...।

तही बीच नेहा नवीनक संग नूनू भैयासँ आशीर्वाद लेबाक लेल हाजिर भेल। दुनू गोटे पएर छूबि प्रणाम केलकैन। आशीर्वाद दैत नूनू भायक आँखिसँ नोर टपैक पड़लैन। आत्मविभोर भऽ बाजि उठला-

“तोरा दुनूक प्रेम अडिग छौ। जो तोहीं जितलेँ हमहीं हारलौं।”

❑❑

सपना साकार

अपना गाममे रामेश्वर भाय नीक शिक्षकक रूपमे जानल जाइ छैथ। पठन-पाठनक पछाइत सामाजिक जिम्मेदारी सेहो नीक जकाँ निमाहै छैथ। गामेमे कोनो सामाजिक, धार्मिक आ बेकतीगत काज किए ने होइ, हिनक अहम भूमिका रहै छैन। शादी-बिआह, मुड़न, श्राद्ध-कर्म आदि कोनो काज किनको ऐठाम होनि, एकबेर हिनकासँ जरूर राय-विचार लेल जाइ छैन। ई अपन विचारक संग आवश्यकतानुसार यथासम्भव शारीरिक आओर आर्थिक रूपेँ सेहो मदैत करिते छथिन।

आर्थिक रूपेँ रामेश्वर भाय कोनो बड़ धनिक लोक छैथ से बात नहि, मुदा दिलक जरूर बड़का धनिक छैथ। अइ उदारताक चलते कतेको बेर हिनका ठोकर सेहो लागल छैन। किए तँ समाजमे सभ तरहक लोक होइत अछि किने, लोभी, लालची, स्वार्थी, कुटिचालि केनिहार आदि-आदि। आ तैबीच किछु नीको लोक तँ होइते अछि। आइ-काल्हि 'मुँहमे राम बगलमे छूरी' बला लोकक सेहो कमी नहि अछि। मुदा लोक अपन काज करैत अछि आ रामेश्वर भाय अपना ढंगसँ समाज सेवामे लागल रहै छैथ।

छह बर्खक उमेरमे रामेश्वर भाइक नाओं गामक प्राथमिक विद्यालयमे लिखाओल गेलैन। पहिल दिन विद्यालयसँ पढ़िकऽ एला। साँझमे दलानपर संगी सभक संग खेलाइकाल अपने कुर्सीपर बैस

बाँकी बच्चाकेँ पढ़ेबाक उपक्रम करए लगला। तैबीच हिनक पिताजी किम्हरोसँ एला तँ बेटाक ई किरदानी देखि पत्नीकेँ बजा कऽ अढ़ेसँ देखा देलखिन। दुनू परानीकेँ खूब खुशी भेलैन।

साँझू पहर जखन बौआकेँ पढ़बैले बैठौलखिन तँ बाबूजी पुछलखिन- "बौआ, स्कूलमे नीक लागल किने?"

"हँ बाबू, बड़ नीक लागल। मास्टर साहैब बड़ नीक पढ़बै छथिन। हमहूँ पढ़िकऽ मास्टरे बनब।"

बेटाक ई बात सुनि दुनू परानी अपन हँसी केँ रोकि नहि सकला। दुनू परानी एकेस्वरे कहलैथ-

"तहन तँ खूब मन लगा कऽ पढ़ए पड़त...।"

"हँ, हँ, खूब मनसँ पढ़बै की।"

एकटा मुहावरा छै 'होनहार वीरवानकेँ होत चिकने पात' एकर जे अर्थ अछि से रामेश्वर भायपर सटीक बैसैत बुझि पड़ल। किएक तँ ई बचपनेसँ पढ़ै-लिखैमे बड़ चंसगर छला। छठा वर्गमे जाइत-जाइत अपनासँ निच्चाँबला चटिया सभकेँ टीसन पढ़बए लगला। स्कूलक मास्टर सभ हिनका खूब मानए लगलैन। दसमामे गेलाक बाद अपना वर्गक सहपाठी सभकेँ सेहो पढ़बए लगला। अइ पठन-पाठनक प्रभावसँ दसमासँ स्नातक प्रतिष्ठा तक प्रथमे श्रेणीमे पास होइत रहला।

सन् 2003 इस्वीमे शिक्षा-मित्रक बहाली होइत रहइ। ई अपन एकटा फारम भरिकऽ पंचायत सेवक लग जमा केलाह। मुखियाजी अपन लोक रहैन। बिना किछु खर्चे-बर्चेक अपने पंचायतक एकटा प्राथमिक सह मध्य विद्यालयमे शिक्षक बना देलकैन।

बहालीक समय ई अपने स्नातक प्रतिष्ठाक तेसर बर्खक अन्तिम परीक्षा देने छला। बादमे शिक्षा विभाग द्वारा इंदिरा गाँधी खुला विश्वविद्यालयसँ सभ शिक्षककेँ प्रशिक्षण देल गेलइ। तहूमे ई प्रथम

एला आब ओ प्रशिक्षित शिक्षकक श्रेणीमे आबि गेल छला। हिनक पढ़ौनीसँ चटिया सभ तेतेक खुश रहै छलैन जे ई अपना गामसँ लऽ कऽ आनो गाम तक सुयोग्य शिक्षकक रूपमे चर्चित भऽ गेला।

रामेश्वर भाय तीन भाए-बहिनमे सभसँ छोट। हिनक माए-बाबू गामेमे एकटा गिरहत पकैड़ भरि जीवन हरवाहि आ बोइन-बुत्ता करि कऽ दुनू बेटीकेँ यथासाध्य नीक घर-वर खोजि बिआह कए देने रहथिन। ओ सभ सुख-चैनसँ अपना-अपना सासुरमे बास करै छैथ।

एक दिन रामेश्वर भायकेँ, माता-पिता अपना लगमे बजा कऽ कहलखिन-

“बाउ, अहाँ तँ अपनहि बल-बुतापर एतए तक पहुँचलौं हेन। अपना पैरपर ठाढ़ भऽ गेल छी। आब हमरा सभक कोन ठेकान जे कहिया टपैक जाएब। से आब अहाँ बिआह कऽ लिअ। पुतोहु घर औती, भानस-भात बनौती। हमरा सभकेँ किछु काजक उसास सेहो हएत आ अहूँकेँ नीक लागत।”

माए-बाबूक बात सुनि रामेश्वर भाय बजला-

“हम अखन तक जे किछु केलौं हेन ओ सभ अहीं सभक पुण्य-प्रतापसँ। अपना बलबूते किछु नहि।”

बेटाक मुँहसँ ई बात सुनि माए-बाबूक मन गदगद भऽ रहल छेलैन। गदगदो केना ने होइतैन। सन्तान जखन सभ्य, सुशील, अनुशासित आ आज्ञाकरी भऽ अपना कर्तव्यपथपर आगू बढ़ैत रहए तँ माता-पिताक लेल ऐसँ पैघ उपलब्धि आर की भऽ सकैत अछि।

रामेश्वर भाइक माए-बाबू बेटाकेँ शिक्षक बनने अपना जीवनकेँ धन्य मानैत मने-मन गदगद होइत रहै छैथ। किएक तँ रामेश्वर भाय अपना फरीकमे पहिल बी.ए. पास आ गामक पहिल शिक्षक छला। आब हिनकापर नीक-नीक घरसँ कथा करबाक लेल घटक सभ आबि

रहल छेलैन। एक तरहसँ उपरौंझ भऽ रहल छल। मुदा सफलता भेटलैन अपने पंचायतक मुखियाजीकेँ।

रामेश्वर भाइक बिआह अपने पंचायतक मुखियाजीक सुपुत्री रमासँ ठीक भेलैन। ऐगले मासक लगनमे धुम-धामसँ बिआह सम्पन्न भेल। रमा स्नातक तेसर बर्खक छात्रा। रमा सेहो शिक्षक प्रशिक्षण कऽ शिक्षिका बनबाक सपना देखैत छेली। मनुक्खकेँ जखन सोच नीक रहै छै तँ आगूओक रस्ता नीके भेटै छइ।

बिआहक बाद रामेश्वर भाय खुला विश्वविद्यालयमे हिन्दी विषयसँ एम.ए.मे नामांकन करौला। किछुए दिनक बाद संकुल समन्वयक चुनाव भेलै, जइमे सर्वसम्मति संकुल समन्वयक चुनल गेला। आब हिनका समन्वयकक जिम्मेवारी सेहो बढ़ि गेलैन।

रामेश्वर अपन सभ काजक समय निश्चित कय लेने छला। भोरमे अनहरगरेसँ टीसन पढ़ौनाइ शुरू कऽ दइ छला। एकदम समयसँ विद्यालय पहुँचै छला। कहियो कोइ हुनका देरीसँ विद्यालय जाइत नहि देखने हेतैन। छुट्टीक बाद गामपर अध्ययन-अध्यापन आदिमे व्यस्त रहै छला। एतबे नहि, समय निकालि समाज सेवा सेहो करै छला।

साहित्यक अध्ययनमे हिनका बेस रूचि रहैन। देर राति धरि साहित्य साधनामे लागल रहै छला। लेखन क्षेत्रमे रूचि जगलैन। किछु साहित्यिक पत्रिकाक वार्षिक सदस्य कौलेजे समयसँ बनल रहैथ। समसामयिक घटनापर आलेख आओर हिन्दीमे कहानी लिखय लगला जे किछु साहित्यिक पत्र-पत्रिकामे छपय लगलैन। हिन्दीक किछु नीक लेखकसँ परिचय भऽ गेलैन।

एक दिन हिनका मैथिली साहित्यक चर्चित कथागोष्ठी 'सगर राति दीप जरय'मे भाग लेबाक अवसरि भेटलैन। जइमे मैथिलीक अनेको साहित्यकारसँ परिचय भेलैन।

मैथिली भाषाक एक गोट वरिष्ठ साहित्यकारसँ रामेश्वर बड़ प्रभावित भेला। ओ हिनका मैथिलीमे लिखबाक लेल प्रेरित केलखिन। अइ गोष्ठीमे किछु मैथिलीक पोथी सेहो प्राप्त भेलैन। घरपर आबि सभ पोथीकेँ रामेश्वर पढ़ि गेला। तैसंग मैथिली भाषा-साहित्यक किछु चुनल पोथी सभ सेहो मंगवा कऽ रामेश्वर अध्ययन करए लगला।

किछु दिनक पछाइत मैथिलीमे कथा, कविता लिखनाइ शुरू केलैन। जखन कखनो किछु लिखैथ तँ सभसँ पहिने रमाकेँ सुनबैथ। कए बेर अपनो पढ़ैथ आ जँ नीक नहि लगैन तँ फारिकऽ कूड़ादानमे फेंक दैथ। ई सिलसिला किछु मास धरि चलैत रहल।

पतिकेँ लिखैत देखि पत्नी रमाकेँ सेहो लिखबाक लेल मन कछमछाए लगलैन। संगतिक प्रभाव तँ मनुक्खपर पड़िते अछि किने, से दुनू गोरे योजनावद्ध तरीकासँ लिखय लगला। लिखैत-लिखैत साले-दू-सालमे नीक कथाकारक रूपमे उभरला। कथा संग्रह छपेबाक गप मनमे चलि रहल छेलैन। अचानक एक दिन रामेश्वर भायकेँ मनमे एलैन जे मैथिलीमे उपन्यास लिखल जाए। पत्नी लग सेहो प्रस्ताव रखलैन। रमा हामी भरैत कहलखिन-

“सम्भव अछि तँ लिखू... ।”

रामेश्वर भाय चिन्तन-मनन करए लगला। उपन्यास विषयक तँ कमी नहि अछि मुदा कोन विषयपर लिखल जाए आओर एकर मुख्य पात्र किनका बनौल जाए, समाजमे तँ रंग-रंगक लोक छैथ। नायक, नायिका, खलनायक, खलनायिका किनका बनौल जाए। अही मकरजालमे फँसि गेला। रामेश्वर भाय रहि-रहिकऽ सोचि रहल छला जे गाममे किछु जमीन्दार अछि। जेकर अत्याचारक शिकार गामक गरीब-गुरबा लोक समय-समयपर होइत रहल अछि। मुदा नहि, आब तँ समयमे परिवर्तन सेहो भेल हेन। अइ विषयपर लिखब तँ ई घिसल-

पिटल मुद्दा भऽ जाएत।

तहन नजैर दौड़ौलैन गामक वर्तमान परिदृश्यपर जे कोन तरहेँ आजुक युवक-युवती सोशल मीडियाक सदुपयोग कम आ दुरुपयोग बेसी कए रहल अछि। प्रेमी-प्रेमिकाक संख्यामे बाढ़ि आबि गेल अछि। समाजमे शादी-बिआहक रीति-रिवाज सेहो बदैल रहल छइ। माता-पिताक मतक अवहेलना भऽ रहल छैन। बराबर सुनैत रहै छी जे फल्लनमाक बेटा फल्लनमाक बेटीकेँ लऽ कऽ भागि गेल अछि...।

रामेश्वर भाय सोचैत-विचारैत जेना भँसिया रहल छल कि अचानक रमा टोक देलकैन.. "यौ, सुनै छिऐ.? पता लागल हेन जे आब अपनो टोलमे देशी शराब बिक रहल अछि। ऐँ यौ, एना जे हेतै तँ गाम-घरक बच्चा सभपर केहेन असर पड़तै..!"

रामेश्वर भाइक लेल ई कोनो नव गप नहि छेलैन। हुनका पहिनेसँ पता छेलैन। ओ ई जानि रहल छला जे गामक किछु दुष्ट आदमी समाजकेँ दूषित करैपर लागल अछि। सरकारक नजैरमे बिहारमे पूर्ण शराबबन्दी अछि मुदा सभ गाममे अंगरेजी शराबक 'होम डिलिवरी' चालू अछि। जखन जतए चाहब तेतए तखने उपलब्ध भऽ जाएत आओर देशी दारूक तँ कोनो बाते नहि, ई तँ सभ गामक गली-गलीमे चोरा-नुकाकऽ बीकिये रहल अछि। सरकार आ प्रशासन सभ जानि रहल अछि आओर जनता अपना हिसाबसँ चलि रहल अछि।

रामेश्वर भाय उपन्यासक विषय आओर पात्र चुनैत-चुनैत जेना शराब बन्दी निशामे लटपटाए लगला कि अचानक मोन पड़लैन जे केना ओ बाल्यावस्थामे माए-बाबूक संग गिरहतक खेतपर जाइ छला आ जलखैमे कहियो खुदी रोटी, कहियो मकइयक रोटी आ कहियो मरूआ रोटीक संग, नून-मिरचाय आ पिऔज भेटै छल..। माए-बाबूक गरीबी आ विपन्नतापर गहन विचार रामेश्वर भाय करए लगला। कोन तरहेँ हमर माए-बाबू जऽनमे खटिकऽ बोइन कए-कऽ दुनू बहिनक

बिआह करौलैन, हमरा पढ़ौलैन आओर किछु घराड़ी सेहो किनलैन। भिनसरसँ साँझ धरि गिरहतक ऐठाम कोल्हुक बरद जकाँ जोताएल रहै छला..!

रामेश्वर भाय सोचैत-सोचैत भावुक भऽ गेला। आँखिसँ दहो-बहो नोर टपकए लगलैन। मोने-मोन विचार केलैन जे किएक ने हम हिनके सभक जीवनकेँ केन्द्रित कए मुख्य पात्र बना उपन्यास लिखी आ ओहीमे नीक-बेजा सभक चर्चा करी...।

रामेश्वर भाइक मन मानि गेलैन जे जीवनमे सफल तँ वएह बेकती ने होइत अछि जे मजगूत संकल्प शक्तिक संग काज शुरू करए आ जाबत धरि काज पूरा नहि होइ ताबे धरि निरन्तर करैत रहए।

रामेश्वर भाय दृढ़ निश्चयक संग उपन्यास लिखबामे तेना ने जुटि गेला से साल भरि केना बितलैन से पतो नहि चललैन।एहेन नहि जे किछु बाधा नहि एलैन मुदा सभ विघ्न-बाधाकेँ पार करैत लगातार लिखैत रहला। ठीक डेढ़ बर्खक बाद उपन्यास छपि कऽ आबि गेलैन। उपन्यासक नाम रखलैन 'माँ-बाबूजी'

रामेश्वर भाय सोचि रहल छला जे कोन एहेन दिन चुनल जाए जइ दिन माए-बाबूकेँ समर्पित अइ पोथीकेँ हिनके सबहक उपस्थितिमे लोकार्पण कएल जाए। रामेश्वर भाय निर्णय कए लेलैन जे ऐगले मासमे सरस्वती पूजा अछि। किएक ने ओही अवसरिपर एकटा साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन कएल जाए। जइमे गाम-समाजक लोकसभ सेहो रहता। आ तैसंग किछु विद्वजन साहित्यकार लोकनिकेँ आमंत्रित कए भव्य समारोहक बीच अइ पोथीक लोकार्पण हुअए।

सभ कार्यक्रम तय भऽ गेल छल। पूर्ण तैयारीक संग रामेश्वर भाय आ रमा जोर-शोरसँ बेवस्थामे लागल छेलैथ मुदा कालकेँ जएह मंजूर हेतै सएह ने हएत। निश्चित समयसँ दू दिन पहिने रामेश्वर भाइक पिताजीकेँ पेटमे असह्य दर्द उठलैन। गामपर प्राथमिक उपचारक बाद

दरभंगा लऽ जेबाक तैयारी भेल। मुदा डॉक्टर लग पहुँचैत-पहुँचैत ओ अपन दम तोड़ि देलखिन। दम तोड़ैत काल हुनका माइक कोरामे बाबूक माथा रहैन। बेचारी माए अवाक् भऽ गेली। बोली बन्द भऽ गेलैन। आँखिसँ सिरिफ नोरेटा बहि रहल छेलैन। पतिव्रता स्त्री पतिक बिछोहकेँ बर्दाश्त नहि कए सकली।

गामपर आबि आँगन पहुँचैत-पहुँचैत तेना ने अर्रा कऽ आँगनमे खसि पड़ली जे पुनः उठि नहि भेलैन। देखिते-देखिते माइक प्राण-पखेरु सेहो उड़ि गेलैन।

ई समाचार जिनका कानमे जाए से सन्न रहि जाइथ। रामेश्वर भायकेँ सेहो दिग् हेराए लगलैन। रामेश्वर भाय बदहवास हुअ लगला। मुदा धैर्यपूर्वक अपनाकेँ समहारला। जिगेसामे अबैबला लोकक भीड़सँ आँगन भरि गेल। के की कए सकैत छल। कालक आगू केकरो थोड़े चललै हेन।

रामेश्वर भाइक माता-पिताक दाह-संस्कारक बेवस्था कएल गेल। एक्के संग हुनका दुनूक दाह-संस्कार कएल गेलैन।

एहेन घटना एहि इलाकाक लेल पहिल घटना छल। अन्तिम संस्कारमे एतेक लोक जुटला जेतेक आइ तक गाममे किनको संस्कारमे नहि आएल छेलइ।

ऐगला दिन रामेश्वर भाय आ रमा गहन चिन्तामे डुमि गेला। जे अचानक एना केना भऽ गेल। मुदा दुनू बेकती पढ़ल-लिखल आओर समझदार रहैथ तँए अधैर्य नै भऽ आगूक काज केना हुअए तइ दिस सोचए लगला। रमाक पिताजी मुखिया रहैन तँ कोनो चीजक अभावक तँ बाते नहि। समयसँ ऐगला काजक योजना बनल। भरि काज सौंसे गामक लोक रामेश्वर भाइक मदैतमे तैयार रहै छेलैन।

श्राद्ध-कर्म आ भोजक तैयारी चलि रहल छल। तैबीच जिगेसामे

किछु साहित्यकार मित्र सेहो एलखिन। फेर एकटा नव निर्णय लेल गेल जे माता-पिताक द्वादशा कर्म दिन अइ पुस्तकक लोकार्पण कएल जाए।

रामेश्वर भायकेँ ई निर्णय कनी कठिनाह बुझि पड़लैन मुदा एकटा जुझारू साहित्यिक मित्र उमा बाबू गोष्ठीक आओर लोकार्पणक भार अपना ऊपरमे लेलैन। एहि निर्णयसँ रामेश्वर भाइक मनमे अइ विपैतिक समयमे उत्साहक नव संचार भेलैन आ कार्यक्रमक तैयारी हुअ लागल।

ऐगला दिन दुनू परानी गहन चिन्तामे डुमि गेला। सोचैत-सोचैत अइ निर्णयपर पहुँचला जे हमरा माता-पिताक नाओंसँ किछु एहेन काज करबाक चाही जे समय सापेक्ष होइ, लोककेँ ओइसँ लाभ पहुँचै, समाज आगू बढ़ए, आधुनिक बनए आ हिनका सभक गामक नाओं सेहो रहि जाइन।

ऐगला दिनभने निबन्धन कार्यालयक एकटा जान-पहचानबला मुंशीकेँ रामेश्वर भाय फोन केलखिन-

“हमरा माता-पिताक नाओंसँ एकटा ट्रस्ट’क निबन्धन करेबाक अछि। से केना होएत?”

मुंशीजी केँ सभ किछु बुझल छैन्हे, जेतेक कागज-पत्रक जरूरत पड़ैत अछि से आ केते रूपैआ खर्च हएत से सभटा बता देलखिन आ एक दिनक बाद एबाक लेल कहलखिन।

रामेश्वर भाय व्यवस्थापक संग ससमय कार्यालय पहुँचला। भरि दिन लागि गेलैन। मुदा काज भऽ गेलैन। खुशी-खुशी गाम एला।

एमहर गामक लोक अइ आश्चर्यमे पड़ल रहैथ जे रामेश्वर गरदैनमे उतरी पहीरि ई की कऽ रहल अछि। एहेन परिस्थितिमे आन गाम नहि जेबाक चाही। अखन हुनका माता-पिताक क्रिया-कर्म केना

हुअए, भोज-भात केना हुअए तैपर विचार करबाक चाही। मुदा ई कोट-कहचरी कऽ रहल छैथ।

मुदा रामेश्वर भायकेँ तँ तेसरे जुनून सवार रहैन। हिनका कर्मकाण्डपर बिसवास नहि छैन। मृत्यु भोज सेहो हिनका गला नहि उतरै छैन मुदा अइ परम्पराकेँ अखन तक झेल रहल छला।

ओना, समाजक किछु आधुनिक विचारधाराक पढ़ल-लिखल लोक दबल आवाजमे एकर विरोध जरूर करैत रहला अछि। मौका पाबिते जातीय सम्मेलनक मंचसँ लच्छेदार भाषण सेहो करैत रहला अछि मुदा अपना माथपर जखन काज आबैन तखन ओइ परम्पराकेँ तोड़बाक किनकोमे साहस नहि। बरखोसँ चलैत नाहपर चढ़ि वैतरणी पार भऽ जाइत रहला।

रामेश्वर भाय नीक जकाँ जनै छैथ जे दकियानूसी विचारक लोक हमरा विचारक विरोध जरूर करता। मुदा हमरा हारि नहि मानबाक अछि आओर अपन काज अपना हिसाबसँ करबाक अछि।

माता-पिताक स्वर्गवासक सातम दिन ग्रामीण लोकनिक बैसार करौलैन। अइ बैसारमे आन बैसारक अपेक्षा बेसीए लोक आएल रहैथ। रामेश्वर भाय उठिकऽ ठाढ़ होइत समाजक सामने अपन विचार रखैत खुलिकऽ बजला-

“सम्पूर्ण ग्रामीण समाज हमर प्रणाम स्वीकार कएल जाउ। हम अखन जै विपैतमे पड़ल छी तइसँ हमरा सभकियो मिलिकऽ उबारि दइ जाउ। समाज पबल होइ छैथ आओर हमरा अपना समाजपर बड़ बिसवा अछि।”

रामेश्वर भाय बजैत-बजैत कानए लगला। तइ बिच्चेमे सुभेश्वर काका टब-दे बाजि उठला-

“अँइ हौ मास्टर, हिनका सबहक कर्म तँ तेराइत दिनसँ शुरू भऽ

जेबाक चाही, से अखन तक किएक ने करौलहक हेन? आब भगवान तोरा तँ कोनो चीजक कमियोँ नै देने छथुन।”

रामेश्वर भाय बजला-

“काका, हम माता-पिताक किरिया-कर्म कने दोसर ढंगसँ करए चाहै छी..।”

बिच्चेमे सुभेश्वर काका बजला-

“ओऽऽ से बात..! अच्छा, बाजह केना करबुहुन किरिया-कर्म?”

रामेश्वर भाय बजला-

“समाज सेवाक दृष्टिसँ एकटा ट्रस्ट निबन्धन करेलौं हेन। अइ ट्रस्टमे हम माता-पिताक नाओंसँ सबा लाख रूपैआ दान दऽ रहल छी। ओइ रूपैआक खर्च गामक अनाथ बच्चाक पालन-पोषण आओर एहेन गरीब परिवारक बच्चा जे पैसाक अभावमे आगू नहि पढ़ि पबैत अछि तइ मदमे खर्च कएल जाएत। आ तैसंग गामक जे बेकती शिक्षा आ साहित्यक क्षेत्रमे विशिष्ट काज करता, संगहि गामक जे छात्र-छात्रा दसमी आओर बरहमी बोर्डमे प्रथम स्थान प्राप्त करता तिनका चिह्नित करि कऽ हमर माता-पिताक बरखी दिन अइ ट्रस्टक माध्यमसँ सहयोग एवम् पुरस्कृत कएल जेतैन।”

रामेश्वर भाइक बात सुनि गामक सभकियो सकदम रहैथ मुदा लाल काका बजला-

“अँइ हौ, तखन गरदैनिक उतरी केना तोरेबह?”

“काका, अइले हम ई सोचने छी जे अन्त्येष्टिक बारहम दिन एकटा झमटगर साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन करब। तइमे माता-पिताक सुन्दर तस्वीर मंचपर लगाएब। हुनका समक्ष पुष्पांजलि अर्पित करब आ अपन गलाक उतरी अपनहि हाथसँ तोड़ि हुनका समर्पित

कऽ देबैन। हम एकटा पोथी लिखने छी, ओही दिन तेकर लोकार्पण सेहो कराएब। संगहि अइ वर्षक गामक जे छात्र-छात्रा दसमी आ बारहमीं पास केलक हेन तेकरा सभकेँ सम्मानित करबाक विचार केने छी।”

रामेश्वर भायकेँ चुप भेलाक बाद केतेको तरहक बात-चीत शुरू भेल। कियो बजैथ जे अन्न दान सभसँ पैघ दान छी। कियो कहैत, बिना किरिया-करम केने हिनका माए-बापकेँ मोक्ष केना भेटतैन..! ओ आत्मा तँ सभ दिन वौआइते रहत...। तइ बिच्चेमे जोगीकाका बजला-

“एना जे भोज-भात बन्न हएत तँ केकरो कियो कठियारियो नहि जेतइ। गाममे एहेन तँ आइ तक कियो ने केने छल।”

बच्चेकाकाकेँ नहि रहल गेलैन ओहो बजला-

“तहन लोक किए धिया-पुताकेँ पढ़ौत-लिखौत। जे अपना माए-बापकेँ करमो नहि कऽ सकता, दान-दक्षिणा नहि देत। अपना दरबज्जापर दस आदमीकेँ हाथ नहि धुऔत। एहेन कोन लबका कानून सभ बनि रहल अछि गाममे। धुर्र! ई सभ नै चलत..!”

जिनका जे मनमे आबि रहल छेलैन से बाजि रहल छला। रामेश्वर भाय चुप-चाप सभ बातकेँ घटोसि रहल छला। सोचला जे सभक बातक जवाब देबए लगब तँ कहीं बाते ने बढ़ि जाए। हमरा तँ गम्भीरतासँ काज लेबाक अछि। जँ एकबेर ई रूढ़ि टुटि जाएत तँ कियो ने कियो तँ नकल करबे करता। तैबीच किछु पुरना पंचैतिया सभ उठि विदा भेला। किछु नवयुवक सभ डटल रहला। धमर्थन होइत-हवाइत अन्तमे रामेश्वर भाइक प्रस्तावक समर्थन भेटलैन। मुदा ई निर्णय लेल गेल जे जे सभ कठियारी गेल छला तिनका सभकेँ एको साँझ हाथ धुआएल जाए। एहि बातकेँ रामेश्वर भाय मानि गेला।

गामक नवयुवक सभक एकटा नवका टीम बनल। सुनियोजित

ढंगसँ काज आगू बढ़ए लागल।

माता-पिताक अन्त्येष्टिक बारहम दिन साहित्यिक मंच सजल। बुद्धिजीवी साहित्यकार आ कवि लोकनि मंचपर विराजमान भेला। सभसँ पहिने पोथीक लोकार्पण भेल। प्रखण्ड स्तरीय अधिकांश शिक्षकक उपस्थिति कार्यक्रमकेँ गरिमामयी बनौने छल। कवि सम्मेलनक आयोजन सेहो कएल गेल। एहि अवसरिपर अधिकांश कविता जे पढ़ल गेल ओकर विषय छल:- सामाजिक विद्रूपता, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास इत्यादिक विरूद्ध।

ई कार्यक्रम एहि इलाकाक लेल ऐतिहासिक बनि गेल। अविस्मरणीय क्षण छल। गामक एगारहटा पढ़ल-लिखल युवक कर्मकाण्ड आ मृत्यु-भोजक विरूद्ध संकल्प लैत मंचसँ बजला- “हम सभ एकटा आन्दोलनक रूपमे अइ काजकेँ आगू बढ़बैत रहब। अइ ट्रस्टकेँ सेहो मजगूत करैमे कोनो कसर नहि राखब।”

कार्यक्रमक अन्तमे रामेश्वर भाय आओर रमा अपन-अपन हाथमे पोथी लऽ कऽ शिक्षक बनबाक सपना देखबसँ लऽ कऽ आइ धरिक जीवनकेँ मोन पाड़ैत माता-पिताक जीवन्त तस्वीर दिस एकटक भऽ ताकि रहल छला आओर आँखिसँ दहो-बहो नोर टघैर रहल छेलैन।

❑❑

फेंकाएल जिनगी

भोरे-भोर टोल-पड़ोसमे जगह-जगहपर खूब चर्चा भऽ रहल छेलै जे आइ पगलीकेँ बड़ मारि लगलै हेन। लात-मुक्का आ हरवाही पेनासँ सौंसे देहकेँ ततइर देलकै..! भोरे-भोर पोखैर जाइत काल गाछीमे घरबलाकेँ फैंटपर चढ़ि गेलै आ बेचारी अवला नाहकमे मारि खा लेलक। निर्दय पुरुख हुनकर घरबला, गाछीमे छटपटाइत छोड़िकऽ पोखैर दिस चलि गेलइ। एहेन क्रूर आओर खुनियाँ आदमी गाममे एक्कोटा नहि छइ। भगवान हिनका नीक नै करतैन...।

टोलक महिला सभ दबल आवाजमे पगलीक घरबलाकेँ गरियबैत छेलै आ जे मनमे अबै से बजबो करइ। किछु लड़का सभ पगलीकेँ उठा-पुठा कऽ चौकपर लऽ गेलै, डॉक्टर साहैब लग। सुइया-दवाइ भेलै हेन। आब सुनै छिऐ पानि चढ़ै छइ।

पगलीक लेल ई कोनो नव घटना नइ छी। एना तँ किछु दिनपर होइते रहै छइ। मुदा ऐबेर कनी बेसी दिनपर भेलै, किएक तँ ऐबरे नैहरामे कनी बेसी दिन रहि गेल छल बेचारी।

पगलीकेँ केतोक नाओं छैन। कोइ हिनका मुंड़ी कहै छैन तँ कोइ चमचिकनी, कोइ पनिडुम्मी तँ कोइ पगली। मुदा असली नाओ छेलैन फेंकनी। आब कहब जे हिनकर एतेक नाओं किए..? तँ ई बुझि लेल जाउ जे सभ नामक पाछू हिनक जीवन क्रम जुड़ल अछि कथामे आगू स्पष्ट भऽ जाएत।

फेंकनीक जन्म एकटा निम्न मध्यवर्गीय परिवारमे भेल छेलैन। हिनका माएकेँ, बिआहक दस बरख धरि एकोटा सन्तान नहि भेलैन। एकटा सन्तान भेबो केलैन तँ छबे मासक भीतर निमुनियासँ ग्रसित भऽ मरि गेलइ। दुनू परानी बड़ बेकल रहै छेलैथ। कतेको डॉक्टर-वैद्य, ओझा-गुणीसँ देखेलाक उपरान्त परिवारमे एकटा बेटी जन्म लेलकैन। एकटा ओझहा कहने रहैन जे जन्मक बाद जन्मौटी बच्चाकेँ फेंक दिहैन। जेकरा ओ भेटै तेकरासँ फेर कीनि लीहेँ। तखन ओ जीबतौ। नहि तँ किछु दिनक बाद ईहो मरि जेतउ।

बेकल-बेथित मन तँए सन्तानक खातिर केहनो कठिन काज करैले लोक तैयार भइये जाइत अछि। मुदा ई तँ बहुत भारी काज नहि रहइ। तँए धाइमक आदेशकेँ अक्षरश: पालन कएल गेल। बेटीकेँ जन्मक बाद ओकर बाप ओही जन्मौटीकेँ नुआँमे लपेट पोखैर महारपर एकान्तमे फेंक आएल। चमाइन ओइ बच्चाकेँ उठा अनलक आ ओकरे माए-बापक हाथे बेचि लेलक। तँए अइ नवजातक नीक नाम फेंकनी राखल गेल। मुदा किछु लोक बेचनी सेहो कहै छेलइ।

फेंकनी समयक संग पैघ हुअ लागल। देखबामे बड़ सुन्नर। गोर वरन, चाकर-चौरस देह, गोल माथ, माएसँ मेल खाइत नाक, कजरारी आँखि, पातर ठोर आ नमहर-नमहर कारी केस फेंकनीक सुन्दरतामे चारि चान लगा देने रहइ। घरमे बड़ दुलारू। केहनो शरारत किए ने कऽ लइ मुदा परिवारक लोक कहियो ओकरापर खिसियेबो ने करै छेलैन। फेंकनीक बाद माएकेँ दूटा बालक आरो जन्म लेलक। ईहो दुनू बच्चा खूब नीक। सभकियो नीक नहाँति रहै छल। तँए फेंकनीकेँ घरमे भगमन्त मानल जाइत रहइ।

ओइ समयमे स्त्री शिक्षापर बेसी धियान नहि देल जाइत रहै तँए फेंकनीक पढ़ाइ-लिखाइ नहि भेलै मुदा तैयो फेंकनी नाम-गाम लिखब

सीखि लेलक। बारहे बर्खक उमेरमे पड़ोसी गामक एकटा गिरहस्त परिवारमे नरेश नामक लड़कासँ फेंकनीक बिआह कएल गेल। पाँच बर्खक पछाइत दुरागमन भेलइ। अइ पाँच बर्खमे फेंकनी अपना माए-बाप लग खूब नीक जकाँ रहै छेली। कहियो कोनो वस्तुक अभाव नहि खटकैन। सखी-बहिनपाक संग नैहर-सासुरक गप-सप्प होइ तँ ईहो अपना भावी जीवनक कल्पनामे डुमि जाइ छेली। मने-मन खुश रहैत फेंकनी अपन सासुरमे पति आओर सासु-ससुरकेँ खूब सेवा करती, परिवारमे कहियो किनको कोनो शिकाइतक मौका ने देती.. आदि-इत्यादि सोचैत रहै छेली।

फेंकनीक पति नरेश दसम वर्गक परीक्षा देला पछाइत कलकत्ता चलि गेला। किछु दिन गाड़ीपर रहि खलासीक काज केलैन पछाइत गाड़ी चलौनाइ सीखि लेलैन। लाइसेंस सेहो बना लेलैन आ साल भरिक पछाइत गाम चलि एला। गाम एला बाद गामेमे रहए लगला, पुन: बाहर जाइक विचार मनसँ हटा लेलैन। गाममे खेती-बारीमे लागि गेला। बाप-दादाक अरजल जमीन रहबे करैन। खुट्टापर एक जोड़ बरद, टायर गाड़ी, दमकल इत्यादि खेतीक सभ सरमजान रहबे करैन। तँए खेती-बाड़ीमे लागि नरेशजी अपन जीवनक गाड़ी आगू बढ़बए लगला। कंजुस तँ ओ सभ दिनसँ रहबे करैथ। कोनो जरूरियो काजमे ओ रूपैआ खर्च करब व्यर्थ बुझै छला। खिसियाह मियाद आओर दुष्ट प्रवृत्ति हुनकर पहचान छेलैन।

दुरागमनक बाद फेंकनी जखन सासुर एली तँ पतिक बेवहारसँ खुश नहि रहै छली। सभ सोचलाहापर पानि फेड़ गेलैन। बात-बातमे पतिक डॉट-फटकार गारि-फज्झैत, मारि-पीट होइत रहै छेलैन। किछु मासक बाद फेंकनी अपना पतिक बेवहारसँ रूष्ट भऽ सासु लग सुतए लगली।

पत्नीक अइ बेवहारसँ नरेश तेतेक नाराज भऽ गेला जे ओ शपथ

खा लेलैन जे आब हम जीवनमे एकरा कहियो वरण नहि करब आ दोसरो बिआह नहि करब।

फेंकनी अपना भाग्यमे इएह लिखलाहा बुझि झेल रहल छेली। ओही बीच फेंकनीक पएर भारी भऽ गेलैन। समय पूर भेलापर जुड़बा बच्चा एकटा लड़का आ एकटा लड़कीक जन्म भेल। जन्मासोचमे फेंकनीकेँ बड़ कष्टक सामना करए पड़लैन। बिना डॉक्टरक देख-रेखमे घरेपर बच्चाक जन्म भेलइ। एतए परसौतीकेँ तेते कुभेला भेलै जे फेंकनी बीमार रहए लगली। नैहरसँ गाम लऽ जेबाक लेल माए आदमी भेजलखिन मुदा फेंकनी ई कहि टरका देली जे हमरा भाग्यमे जे लिखल अछि से हम झेल रहल छी। अइ लेल अहाँ सभ किएक परेशानी उठाएब। हमरा सासुरमे दुख हुअए आकि सुख हम एतहि रहब।

टोल-पड़ोसक जनाना सभ बजैत जे बच्चाक जन्मक समय बेसी जोर देलाक कारणेँ फेंकनीक पर्दा फाटि गेलै तेकर ठीक ढंगसँ इलाज नहि करौल गेलै। गाम-घरक दवाइ-दारूसँ घाव तँ ठीक भऽ गेलै लेकिन फेंकनी एक तरहेँ आन्तरिक रूपेँ विकलांग भऽ गेली। फेर कोनो काजमे नैहर गेली तँ भाए दरभंगा लऽ जा कऽ इलाज करा देलकैन। मुदा पूर्णरूपेण ठीक नहि भऽ सकली।

नरेश अपना पत्नीसँ नाराज तँ रहिते छला। अइ घटनाक बाद आब हुनकर चेहरा तक नहि देखए चाहै छला। बातोचीत करब बन्द कए देला। हरदम घृणाक नजैरसँ पत्नीकेँ देखै छला। घरक लोक डरसँ हुनका किछु नहि कहै छेलैन। ओ केकरो बात नहि सुनै छला। जे किछु कहै छेलैन तेकरेसँ झगड़ा करए लगै छला। हुनका कियो कहनिहार नहि रहि गेलैन।

फेंकनीक दिल चुरमचुर भऽ गेल छल। पूरा जिनगी अन्हारे-

अन्हार देखाइ दइ। आब ओ दुखक मोटरी बान्हि कखनो नैहर तँ कखनो सासुर करए लगली। सासु-ससुर आ परिवारक कोनो सदस्य फेंकनीकेँ मदैतो करबाक कोशिश करै छला तँ नरेशकेँ बड़ खराप लगइ। मुदा बेटा-बेटीक देख-रेखमे कोनो कमी नइ करैथ।

किछु दिनक बाद फेंकनीक माथक केश सेहो झड़ए लगलै। धीरे-धीरे माथमे बहुत कम केश रहि गेलइ। तइ चलते लोक फेंकनीकेँ मुरड़ी कहए लगलै। चिन्ता करैत-करैत फेंकनीक मानसिक संतुलन बिगड़ए लगलै। ओ भरि दिन वौआए लगली। आवश्यकतासँ अधिक बाजए सेहो लगली मुदा निच्छत पागल जकाँ नहि। बोली-वाणीमे मधुरता रहै छेलैन। हुनकर बात-विचार टोल-पड़ोसक लोककेँ कहियो खराप नहि लगइ। दिन भरि वौआकऽ अबैत मुदा नरेशक नजैरसँ बँचि कऽ रहै छेली। परिवारक लोक चुपेचाप किछु खाइले दइ छेलैन तँ खा कऽ एकटा कोनहीमे चुपचाप सुति रहै छेली। नरेश दलानपर सुतै छला। ओ आँगनमे कमे अबै छला।

अइ तरहेँ समय बीतैत गेल। किछु वर्षक उपरान्त एकटा नवका बीमारी फेंकनीक शरीरमे उत्पन्न भऽ गेलैन। ओ भरि-भरि दिन कलपर पएर-हाथ धोइत रहै छेली। हुनका हरदम होइ जे हम पानियेँमे रही। किछु दिनक पछाइत भोरहरबेमे उठिकऽ पोखैरमे धँसि जाइ छेली। भरि छाती पानिमे अदहा दिन तक ठाढ़ रहए लगली। पानिमे ठाढ़ रहने साइत हुनका मनकेँ शान्ति भेटै छेलैन। कतेको लोककेँ हुनका पानिमे ठाढ़ देखि डर भऽ जाइत छेलइ। गामक पुरुख सभ तँ हिनका चलते पोखैरमे गेनाइ छोड़ि देला। अपना गामक आ आनो गामक धिया-पुता माल-जाल चरेबाक लेल ओमहर जाइत छल तँ किछु उकट्ठी खरुहाँन सभ हुनका दिस ढेपा-चेपा फेंक हुनका चिढ़बैत रहै छल। फेंकनी उकट्ठी छौड़ा सभकेँ खूब गरियबैत रहै छेली। बच्चा सभकेँ हुनकर गारि खूब नीक लगै छेलइ।

नरेश खेती-बारीक काज करैत गामपर भँजियबैत रहै छला जे करवैन फैंटपर चढ़ए जे खूब मारि मारी। लेकिन फेंकनी मारिसँ बँचबाक लेल खूब कंछी कटैत रहै छेली। तइ दुआरे कए दिन दोसरो गोरेकेँ आँगनमे खा कऽ केतौ अढ़-घाटमे सुति रहै छेली।

फेंकनीक नैहराक स्थिति सेहो बेजा नहि रहइ। भाए सभ खूब नीक स्थितिमे रहइ। गामक किछु लोक सभ हुनका भाएकेँ कहलकैन जे अइ तरहक जीवन जे अहाँक बहिन जीब रहल छैथ से अहाँ सभ नरेशपर दवाब किए ने बनबै छिऐन। ओ अपना पत्नीकेँ पत्नी नहि बुझि वौएबाक लेल छोड़ि देने छथिन। हुनका कोनो कमी तँ नइ छैन। किए ने ओ हुनकर इलाज कराकऽ इज्जतकेँ अपना घरमे रखै छैथ।

ओना, नरेशक गौआँ सभ सेहो हुनका कहि कऽ थेथर भऽ गेलैन मुदा नरेश सनक निर्लज्ज लोकपर कोनो असर नहि भेल।

फेंकनीक भाए-बाप पंचायतक किछु मुँहपुरुखकेँ लऽ कऽ नरेशक घरपर एला। गामक लोककेँ सेहो बजौल गेलैन। बहुत तरहक बात भेलइ। बैसारमे नरेशकेँ खूब बेइज्जत कएल गेलैन, मुदा नरेश एकहिटा जवाब देलैन-

“हमरा अहाँ सभ जे सजा देब से दिअ मुदा हम ओइ महिलाकेँ अपन शरण नहि दऽ सकै छी। हमहूँ तँ कोनो दोसर बिआह कए केकरो संग नहि ने रहि रहल छी। हमरा सबहक जीवन आब अही तरहसँ बीत रहल अछि तँ अहाँ सभकेँ किए खराप लगैए। हम अपना भैंसकेँ कुड़हैरियेसँ नाथब। ई तँ हमर मर्जी छी किने। आब कतेकटा जिनगीए रहि गेल हेन, अहिना बीत जाएत।”

ताबत धरि फेंकनीक उमेर चालीस बरख पार भऽ गेल रहइ। बैसार खतम भेल। फेंकनी सेहो कोनहीमे बैसल सभ गप सुनै छेली। चट-दे उठि कऽ पोखैर तरफ विदा भेली। फेंकनीक जीवनक

अधिकांश समय पोखैरमे बीतल। पानिमे अधिक समय रहलाक कारणेँ हाथ-पएर सड़ि जकाँ गेल रहइ। पानिमे खड़ा भऽ ओ हाथसँ पानिकेँ ऊपर-निच्चाँ करैत रहै छेली। बेर-बेर पानिकेँ मुँहमे लऽ फेंकैत रहै छेली ताकि बटोहीकेँ लगै जे पानिमे कोनो महिला नहा रहल अछि। पानिमे अनेको तरहक उपक्रम करैत ओ एक दिन दोसर गामक पोखैरमे ठिठुरि कऽ अपन जान गमा देलक। माघ मास रहइ। भरि राति लाश पोखैरमे पड़ल रहइ।

प्रात भने, भोरे गाममे खबर एलै-

“पगली पोखैरमे डुमिकऽ मरि गेल।”

गामक लोक लाशकेँ गाम आनलक आ अन्तिम संस्कारक कए देलक। बेटाक हाथसँ आगि पड़लै। नरेश संस्कारोमे शामिल नहि भेल। मुदा मने-मन खूब खुश छल जे एकटा बला टलि गेल।

फेंकनीकेँ जन्मक बाद जेना फेंकल गेल रहैन तहिना बिआहक बाद पूरा जिनगी ओ फेंकाएले रहली। मरलाक बाद नैहर आओर सासुरक लोक मिलिकऽ क्रिया-कर्मक संग झमटगर भोज केलैन। संगे थारी-लोटा सेहो बँटलैन। एहने ठीन कहल जाइ छै जे ‘जीतामे नूना भाता आ मुइलामे दूधा भाता’।

आब नरेश घरमे असगरे रहै छैथ। बेटा-पुतोहु परेदशमे रहै छैन। कियो भनसा बनाकऽ दइबला नहि छैन। अपनेसँ झड़का-फड़का कऽ खाइ छैथ। अपना जीवनमे कएल कुकर्म आब नरेशकेँ खूब मोन पड़ै छैन। रातिक सुनसान समयमे ओछाइनपर पड़ल-पड़ल फेंकनीक चेहरा दिमागमे घुमैत रहै छैन।

❑❑

निरवासित जीवन

भुटकुन भाय भिनसरमे सुतिकऽ उठला। बाहर निकलला तँ देखै छैथ दुरुखपर चारि-पाँचटा जनाना आपसमे बतिया रहल अछि। जइमे अपन श्रीमती सेहो रहैन। जखन बाहर निकलए लगला कि श्रीमती टोकि देलकैन-

“यौ, सुनै छिऐ रातिमे भरामवालीक घरमे चोरि भऽ गेलै हेन।”

भुटकुन भाय आश्चर्यचकित होइत बजला-

“भरामवालीक घरमे चोरि भऽ गेलइ..! कहीं चोरबे सबहक बुधि चोरी भऽ गेल छेलै की.? कहू तँ हुनका घरमे की भेटल हेतइ..!”

बजैत भुटकुन भाय चापाकलपर जा कुरुड़ कऽ एक लोटा पानि पीलैन आ तमाकुल चुनबैत विदा भेला। भरामवाली भौजी ऐठाम पहुँचला तँ देखै छैथ जे लोकक भीड़ लागल अछि। भौजी ओसरापर बैस लोक सभकेँ रौतुका चोरीक वृतान्त सुना रहल छेलखिन।

भुटकुन भाय बजला-

“भौजी, की सभ घरसँ चोर लऽ गेल यै, चलू अहाँ बँचल छी ने। हमरा तँ चोरीक बात सुनिकऽ अहींक चिन्ता होइत रहए।”

भौजी बजली-

“धूर्र बौआ, अहाँकेँ तँ हरदम मजाके देखाइ दइत रहैए। देखै नै छिऐ घरक सभ चीज-वौसक हालत आ बक्सा आ बक्सा बाड़ीमे लऽ

जा कऽ फेंक देने अछि। एकटा कनियेँटा टिनही पेटी छेलै तेकरा बाधमे लऽ जा कऽ तोड़ने अछि। बरतन-बासन, लत्ता-कपड़ा जे छल से सभटा लऽ कऽ चलि गेल। आँगनक चुल्हियोकेँ फोरि देने अछि। हमरा तँ नाक महक छक जहन घिचलक तखन हम बुझलिऐ। हमरा तँ डरसँ हल्लो ने कएल भेल। घिंघिया कऽ जाबे किछु बजिऐ-बजिऐ ताबे ओ सभ नौ-दू-एगारह भऽ गेल।”

थोड़ेकाल चुप भऽ भौजी फेर बाजए लगली-

“यौ बौआ, ई चोरि थोड़े छिऐ, ई तँ उछन्नर दऽ रहल अछि जे कहुना एतएसँ चलि जाए। मुदा आब हम आरो नइ जाइवाली छिऐन।”

भुटकुन भाय ओतएसँ फराक भऽ पोखैर दिस चलि गेला। पोखैरमे हाथ-पएर मटिया कुर्रा-आचमन कऽ गामपर दिस विदा भेला। रस्तामे भरामवाली भौजीक जीवनपर गम्भीर रूपसँ सोचए लगला। बेचारीक जिनगी बड़ संघर्षमय रहल अछि। ईहो अपना जिनगीमे बड़-बड़ पापड़ बेलने अछि। कहियो एकरा जीवनक पूरा कथाजे बुझितौं तँ बड़ आनन्द अबितए। अच्छा बेस... सोचै छिऐ अइ पर..।

भुटकुन भाय अपने एकटा छोट-छिन किसान छैथ। दूटा बेटा छैन। दुनू बेटा बाहर खटै छैन। बेटी एक्कोटा ने छैन। तँए कोनो चिन्ता-फिकिर भुटकुन भायकेँ नहियेँ छैन। घरपर सिरिफ अपने दुनू परानी रहै छैथ। खेती-वारी सेहो कोनो बड़ मनसँ करै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। बुझू जे खेतीक सिरिफ मजा लइ छैथ। हिनका भरिदिन दरबज्जे-दरबज्जे गप लड़बैमे, एक-दोसरोक खिधांश करैमे आ तास खेलैमे मन लगै छैन।

लोको बुझै छैथ जे कोनो गपक प्रचार करेबाक हो तँ भुटकुन भाइक कानमे जेबाक चाही। देखिते-देखिते सौंसे गाम कऽ देता।

खेबा-पीबामे बड़ चटोर सेहो छथिए। सभ दिन नीके-निकुत आ चटगरे-मटगर चीज भुटकुन भायकेँ चाहिऐन। तइले ओ अपन श्रीमतीसँ ताना सेहो सुनैत रहै छैथ।

भरामवाली घरक चोरिक एक हपता बाद भुटकुन भाय पुन: भरामवाली भौजीसँ भेँट करैक योजना बनबए लगला। रवि दिनक भिनसरमे नित्य-क्रियासँ निवृत्त भऽ चाह-ताह पीलाक बाद सोचलैन जे आइये भरामवाली भौजीसँ मिलबाक अछि। मुदा पत्नीकेँ की कहि कऽ निकलता से किछु फुरिये ने रहल छेलैन। सोझे मुँह हुनकासँ मिलबाक नाम कहथिन तँ एक साए सवाल पत्नी पुछबे करतैन। पुछबे करतैन जे अहाँकेँ ओकरासँ कोन मतलब अछि। मुदा किछु झूठो कहिकऽ निकलब नीक नहियेँ बुझि पड़ै छैन।

सोचलैन जे फुलकाहा बाधक खेतक रस्ता हुनके घर लग दऽ कऽ गेल अछि। पता लागल हेन जे ओही खेतमे मटि-कट्टी भऽ गेलै से ओ खेत देखबाक बहन्ने निकलब ठीक रहत। भौजीसँ गप करब सुतैर गेल तँ ठीके छै वा नै तँ खेत देखकऽ आबि जाएब। एलाक बाद पत्नीकेँ सभगप कहबैन। भुटकुन भाय सएह केलैन। खेत देखबाक बहन्ने निकलला।

रस्तामे केतोको तरहक बात मनमे जोर पकैड़ रहल छेलैन। भौजीसँ पहिने की पुछबैन। हुनका ऐठाम दलान तँ छैन नहि तँए हठात् आँगने केना चलि जाएब। जँ हालचाल पुछैत चलियो जाएब तँ कनियेँ देरमे गप तँ हएत नहि। दुइये गोरे बेसी देर तक गप-सप्प करब तँ ईहो अनसोहाँते हएत। कहीं कोनो अबलट लागि गेल तँ गाममे मुँह उठा कऽ केना चलब। जुग-जमाना खराप छै। लोक नीक बातक कम आ खराप बातक परचार बेसी करैए। यएह सभ सोचैत-विचारैत भुटकुन भाय भरामवाली भौजीक घरक सामने पहुँच गेला। ओइठाम पहुँचते

हिनका दिलक धड़कन तेज भऽ गेलैन। घरक मुँह दिस तकैत आगू बढ़ि गेला। किछु डेग बढ़लाक बाद मनमे होनि जे घुमि जाइ। मुदा घुमला नहि, आस्ते-आस्ते आगूए दिस बढ़ैत रहला। खेत दिस गेला मुदा जल्दीए आपस आबि गेला।

ऐगला दिन अन्हरौखेमे उठि कऽ भुटकुन भाय छहर दिस विदा भेला। ई सोचैत जे पछबारि बाधसँ खेत-पथार देखि अबै छी। आपसी बेरमे हुनके घर दिस होइत आएब। जँ कहीं ओ भेँट भऽ गेली तँ किछु गप भऽ जाएत।

छहरसँ पहिने एकटा पोखैर छेलइ। ओइठामसँ दिशा फराक भऽ हाथ मटिया कुरुड़ कए जखन छहरपर गेला तँ बुझेलैन जे सामनेसँ भरामवाली भौजी आबि रहली अछि। पहिने तँ भेलैन जे कहीं मनमे भ्रम तँ ने भऽ रहल अछि। मुदा धियानसँ देखलापर, तैबीच ओ लगीच सेहो भऽ गेल छेली, बिसवास भऽ गेलैन जे भ्रम नहि छी। हुनकर खुशीक ठेकाना नहि रहलैन। अपन खुशीकेँ दबबैत जखन लगमे गेला तँ कहै छथिन-

"गोड़ लगै छी भौजी।"

भरामवाली भौजी बजली-

"नीके रहू बौआ।"

"की भौजी, ठीक छी किने। आर की हालचाल अछि?"

भरामवाली भौजी सभदिनुका बज्जकर लोक छथिए। कोनो गपकेँ चिबा-चिबाकऽ बजैक आदत हिनका छैन्हे। बजली-

"की कहूँ बौआ, हाल तँ ठीके अछि किछु दिन पहिने बरखा भेले छल लेकिन हमर चाले गड़बड़ भऽ गेल अछि। घरमे चोरिक बाद बेराम भऽ गेलौं। सौंसे देह फुलफुलाह भऽ गेल अछि। डाकडर लग गेल छेलौं। दवाइ खाइ छी। किछु आराम तँ बुझा रहल अछि।

डाकडर कहलक भोर-साँझ एक घन्टा टहलैले। तँए टहैल रहल छी।

लेकिन यौ बौआ, की टहलब। छहरक काते-काते, जेतए-ततए तेना ने पुरुख सभकेँ देखै छिऐन झाड़ा फिरैत से अपने लाज भऽ जाइत अछि। पता नहि किछु पुरुख सभ एतेक निर्लज्ज किए होइ छैथ। देखता... जे सड़कपर महिला आबि रहल छै तैयो मुड़ी गोंति कऽ पैखाना करबाक लेल बैस जेता। रस्ता कातमे ठाढ़ भऽ कऽ मुतब तँ पुरुख सभकेँ आदतमे शुमार छैन। सएह सोचैत रहै छी जे एना जे स्त्री सभ करए लागए तँ इएह पुरुख सभ केतेक अचरी-कचरी बजता। बजबे करता जे हे.. फल्लाँक बेटी, कि फल्लाँक पुतोहुकेँ एना देखलिऐ...। स्त्री सभ जखन बाजार हाट जाइत अछि तँ हुनका सभकेँ की पेशाव नहि लगै छैन, कहाँ एना करैए ओ सभ। एहि ढंगकेँ बहुत एहेन बात अछि जे पुरुख करता तँ बड़ नीक आ महिला करती तँ बड़ खराप। पता नहि ई पुरुख परधान समाज कहिया तक स्त्री सभपर राज करैत रहता।”

बिच्चेमे भुटकुन भायकेँ बजबाक मौका भेटलैन कि चट-दे बजला-

“हँ भौजी, से तँ ठीके कहै छी। आ अहूँ तँ साइत अही पुरुख प्रधान समाजक ज्यादतीक दंश ने भरि जिनगी झेल रहल छी।”

भौजी गुम भऽ गेली। फेर किछु सोचैत बजली-

“हमरा साथ तँ बड़-बड़ अत्याचारि आ अन्याय भेल अछि। हम जेतेक सहलौं तेतेक आबक स्त्री थोड़े सहत। खाएर हमर वयस तँ आब बीत गेल लेकिन लगैत अछि जे अबैबला समय स्त्रीएक हेतइ। सरकार सभ किछुमे अदहा-अदही आरक्षण दऽ देलकै हेन। देखै नै छिऐ स्कूलमे जेतेक मास्टर तेतेक मास्टरनी। पंचायत चुनावमे जेतेक सीटपर पुरुख तेतेक सीट महिलाक लेल सेहो सुरक्षित अछि। स्त्री

शिक्षापर सेहो सरकार आब खूब धियान दऽ रहल अछि। गामे-गामे जीविका दीदी सभ समूह बना-बना स्त्रीकेँ जगा रहली अछि। आब तँ सुनै छिऐ जे कोनो एहेन क्षेत्र नहि बाँचल अछि जइमे महिलाक भागीदारी नइ छैन। आब पहिनेबला जबाना नै रहलै। आब तँ स्त्री सभ पुरुख सभकेँ चैनपर घैला फोरतैन।”

भुटकुन भाय जोरसँ हँसैत बजला- “भौजी, आब घैलाक जमाना कहाँ अछि, आब तँ घर-घरमे नलसँ जल पहुँच रहल अछि।”

भुटकुन भाइ सोचलैन जे भौजी सभ दिनसँ मुँहक जोर रहली हेन। बाजए लगै छैथ तँ तर्कशील आ तर्कहीन दुनू तरहक गप बजै छैथ। साइत हिनक निरवासित जीवनक ईहो एकटा कारण भऽ सकैए। तँए हिनकासँ काजक गप कएल जाए। गपकेँ आगू बढ़बैत भुटकुन भाय बजला- “भौजी, एकटा गप कहू, खराप नहि ने लागत। हमरा अहाँक जीवनक कथा सुनैले बड़ मोन लागल अछि।”

भौजी मजकिया लहजामे मुस्कान दैत बजली- “हौ मुनसा, एतेक दिवस बीत गेल आर आइ तोरा हमरा जिनगीक कथा सुनबाक मन भेलह हेन। कोनो पलान-तलान बना कऽ आएल छह की।”

“नहि भौजी, तेहेन बात नहि अछि। मुदा अहाँसँ भरि मन गप करबाक इच्छा बहुत दिनसँ संजोगने छी। मुदा तेहेन तूके ने भेटै छल। से आइ होइत अछि जे पूरा भऽ जाएत।”

“अच्छा ठीक छै.. मुदा हमरा जीवनक कथा कहैमे आओर सुनैमे तँ बड़ समय लागत। ठीक छै तँ आइ जे हेतै से हेतै, बाँकी आनो दिन सुना देब।”

भुटकुन भाय तँ गप करबाक घात लगौनहि छला से मनक बात पूरा होइत देखि खुशी-खुशी दुनू गोटे छहरक कातमे पीपरक गाछ लग बैस कऽ बतियाए लगलैथ।

भौजी गप शुरू केलीह- “हम अपन माए-बापक तीन सन्तानमे सभसँ पैघ छेलौं। हमर बाबूजी नीक किसान छला। लगभग दस बीघा जमीन हमरा बाबूजीक हिस्सामे रहैन। मुदा बाहरक कोनो आमदनी नहि रहैन। ओइ समयमे बेसी बिआह बच्चेमे होइत रहइ। हमरा माए-बाबूकेँ इच्छा रहैन जे किछु जमीन बेचि कऽ जेतेक जल्दी हएत से नीकसँ नीक घर ताकि कऽ बेटीक बिआह कए लेब। जेठ सन्तान रहबाक कारणेँ हम बड़ दुलारू रहिऐ। जखन जे चीज कहैत रहिऐ से पूरा होइत छल। जखन हम दस बर्खक रही तखने हमर बिआह भऽ गेल। केना की भेलै से किछु नहि बुझलिऐ। महफापर चढ़िकऽ सासुर आएल रही से याद अछि। पाँच-छह दिन सोसरामे रहलौं। खेलौं-पीलौं, खेललौं-धूपलौं आओर आपस गाम आबि गेलौं।”

भुटकुन भाय बिच्चेमे बजला-

“भौजी, अहाँक बिआहमे दहेजोक लेन-देन भेल रहए की?”

“हँ-हँ, हमरा बिआहक खर्चा लेल हमर बाबूजी एक बीघा जमीन बेचने रहथिन। एकतीस हजार रूपैआ नगद देने रहथिन। बरकेँ घड़ी, साइकिल, रेडियो, सोनाक चेन आ औंठी देने रहथिन। एक साए बरियाती आएल रहइ। तेसर दिन भने बरियातीकेँ विदाइ कएल गेल रहइ। उच्च कोटिक खानाक बेवस्था कएल गेल रहइ। हमरा गाममे एहेन धूमधामसँ केकरो बिआह नै भेल रहइ। एतए हिनको बाबूजी सरकारी नोकरी करैत रहथिन। जमीन जायदाद, मकान सभकिछु रहैन। कथुक कमी नहि रहैन। हमर माए-बाबू एहेन घरमे बेटीकेँ बिआह कऽ खूब खुश रहैथ।

ठीक छह बर्खक बाद हमर दुरागमन भेल रहए। एकटा बात आअरे मोन पड़ि गेल बौआ, जहन हम सोलह बर्खक रही तँ कातिक पूर्णिमाक मेला देखए गेल रही। हम अपना सहेली सभक संगमे रही।

हमर बर सेहो अपना संगी-साथीक संग मेला देखबा लेल आएल रहैथ। हमरा गामक एकटा सुआसीन हुनका चिन्ह गेलैन आओर हमरा आबि कऽ कहली जे अहाँक बर सेहो आएल छैथ। आब हमरा छटपटी लागि गेल। आब तँ हुअए कोन दऽ कऽ पराइ मेलासँ। फेर मनमे आएल जे कनी अढ़ो-घातसँ एक झलक देखि लितिऐ जे केहेन छैथ। हम लटगेना दोकानपर सहेली सभक संग किछ-किछ कीनैत रही। ओही दोकानपर ईहो सभ भजिया कऽ पहुँच गेला। हमरा जेना कियो इशारा केलक जे उजरा गमछाबला तोहर बर छथुन। हम नजैर झेप कऽ हुनका देखि लेलिऐन। लाजो हुअए, कियो देखत तँ की कहत..। हम एकटा बहिनपाक संग भागल-भागल गामक रस्ता पकड़लौं। कनी दूर गेलाक बाद पता चलल जे दूटा युवक गमछासँ मुँह झपने हमरा आगू-पाछू कए रहल अछि। हमरा सोल्होअना बिसवास भऽ गेल जे वएह छैथ। कोनो गप-सप्प नहि भेल। घर एलौं तँ घरो पर एहि बातक चर्चा भेल। हमरा बाबूजीक डर हुअए जे ओ बाजैथ नहि जे मेला देखए किए गेलैं। लेकिन एहेन किछ नहि भेल।

किछुए दिनक पछाइत हमरा सासुरसँ हमर ददिया ससुर दू गोटेसँ दुरागमनक दिन लऽ कऽ एला। घरमे खूब धमर्थन भेल। माए-बाबूजीक इच्छा रहैन जे एक बर्खक बाद बेटीक दुरागमन करब। लेकिन हमर ददिया ससुर जिद्दपर अड़ल रहला। हारिकऽ दिन मानए पड़लैन आओर खूब धूम-धामसँ हमर दुरागमन भेल। हेऽऽ आब दुरागमनक बादबला बात शुरू करब तँ बड़ समय लागत। हमरा दवाइयो खेबाक अछि। आब आइ रहए दियौ, बाँकी गप काल्हि करब।”

भुटकुन भायकेँ उठबाक मन तँ नहियेँ रहैन मुदा भौजीक समर्थन करैत बजला-

“ठीक छै भौजी, बाँकी बात काल्हि करब।”

ऐगला दिनक भेँटमे भौजी गप शुरू केली- “जहन दुरागमनक बाद सासुर एलौं तँ हिनक घर दुआरि आ हिनका सभक रहन-सहन देखिकऽ मन खूब खुश भेल। बुझाएल हम एहि घरमे महरानी बनिकऽ रहब, लेकिन से कालकेँ मंजूर कहाँ रहइ। ठीक दूइए मासक बाद हमरा जीवनक दुखद अध्याय शुरू भऽ गेल। हमर सासु हमरासँ कटल-कटल रहए लगली। हम हाजिरजवाबी आओर उचित बात बाजए वाली सभ दिनसँ रहलौं। अनसोहाँत हमरा एकदम पसिन नहि। हुनका सभक अनोन बातपर हम जवाब देबए लगलिऐन। ई हुनका सभकेँ बड़ खराब लगैत रहैन। हमर पति सेहो रातिमे दारू पीबि कऽ आबए लगला। विरोध केलापर गारि-फज्झैत, मारि-पीट करए लगला। तेतबे नहि, माए-बहिनक उल्टा-पुल्टा बातपर बिसवास कए ओ हमरा प्रताड़ित करए लगला। किछु दिनक पछाइत हमर ससुर नोकरीपर सँ गाम एला। हुनका एलाक बाद बुझाएल जे आब ओना नहि हएत। लेकिन दुनू माए-बेटा हुनको तेना ने उनटा पाठ पढ़ौलकैन से उहो वएह सूर पकैड़ लेलाह। हमरा छोटका दियर आ छोटकी ननैदकेँ हमरापर दया जरूर अबैत रहैन मुदा ई सभ हुनका सभक डरसँ किछु बाजि नहि सकैथ।

घर-दुआर हवेली जकाँ रहै बड़का खरिहान। नमहर आओर ऊँचगर छहरदेवाली। बड़का टा गेट, दू जोड़ा बरद, भैंस, टायर गाड़ी, दमकल, माने सभ किछु रहइ। जन हरवाह रोज खटैत रहइ। बाहरसँ तँ हुनक परिवार स्वर्ग नजैर अबैत मुदा भीतरमे नरकक बास रहइ। घरक बातकेँ बाहरी लोक कोइ बुझि नहि सकैत छल। गाम-समाजमे कुलीन परिवारमे हिनका परिवारक गिनती होइत रहइ। लेकिन ‘बाहरसँ जीट-जाट, अन्दरसँ मोकामा घाट’ बला कहावत छेलइ।

ओही बीचमे एक दिन हमर बाबूजी अपन संगीक संग सनेस लऽ कऽ एला। हम घरक कोणमे जोर-जोरसँ खूब कनलौं। ओही

समयमे गामसँ कोइ अबैत छेलै तँ नवकनियाँकेँ कनबाक प्रथा रहइ। बाबूजी चुप कराबए लेल एला आओर समाचार पुछलैथ, हम दुखक बात किछु नै कहलिऐन। दुखक घड़ीमे सुखक चद्दैर ओढ़ि अपने आपकेँ खुश देखेबाक प्रयास केलौं। ऐगला दिन बाबूजी विदागरी मंगलखिन, मुदा ई सभ विदागरी करबाक लेल तैयार नहि भेला आओर बाबूजी आपस चलि गेला।

बाबूजीकेँ एलाक बाद दू-चारि दिन समय ठीकसँ बीतल, तेकर बाद फेर वएह कहानी शुरू भऽ गेल। अहाँक भाइ साहैब दारू-तारी पीब कऽ घर अबैथ आ अपन सोगारथ पूरा कए उल्टा-सीधा बात शुरू कए दैत छला, जे उग्र रूप धारण कऽ लैत छल। एहि बीच हमर पएर सेहो भारी भऽ गेल। हम मने-मन खुश भेलौं। सोचलौं जे किछु दिन दुख सहि लइ छी, बच्चा जन्म लऽ लेलाक बाद कहीं हिनका सभमे परिवर्तन भऽ जेतैन। मुदा हुनका जहन एहि बातक पता चललैन तँ ओ जेना तिलमिला गेला। कहलैन चल दरभंगा, सफैया करा दइ छियौ। मुदा हम हरगिज तैयार नहि भेलौं। ओइ दिन हमरा मुँह बन्द कए कऽ जे मारि लागल से हम की कहूँ।”

भौजीक बात सुनि भुटकुन भायकेँ तँ ब्लडप्रेशर हाइ हुअ लगलैन, जोर सँ साँस लेला आओर बजला-

“बाप रे..! भौजी, एहेन-एहेन अन्याय अहाँक संग भेल अछि..!”

भौजी बजली-

“हूँ-हूँ.. अखैन कहाँ, अखैन तँ दारुण कथा बाँकीए अछि, एतबेमे हड़बड़ा गेलौं। जहन पुछलौं तँ पूरा सुनिये ने लिअ।”

“हँ-हँ कहियौ भौजी।”

“एक दिन रातिमे माछ बनल रहै। होइत-हवाइत, खाइत-पिऐत

आन दिनक अपेक्षा सुतैमे कनी लेट भऽ गेले रहइ। अहाँक भैया खा-पीकऽ पहिले जा कऽ सुति रहला। हम सभ काज-उदम करि कऽ जखन घरमे प्रवेश केलौं तँ हमरा कने मटिया तेलक गन्ध सन बुझाएल, लेकिन हम कोनो धियान नहि दऽ औछाइनपर जा कऽ पड़ि रहलौं। नीन नहि पड़ल रही, गबदियौने रही, ताकि हुनका बुझाइन जे हम नीनमे छी। लगभग एक घन्टाक बाद ओ चुपे-चाप उठला। पलंग तरसँ मटिया तेलक गैलन निकालि हमरा देहपर देला। हम धड़फड़ा कऽ उठलौं। हुनका बमा हाथमे सलाइ रहैन। जाबे ओ आगू किछु करितैथ की हम चट-दे पूरा तागत लगा हुनकर हाथ पकड़लौं आ अपन मौका सुतारैत अनचोकेमे पेटमे खूब जोरसँ एक मुक्का मारि देलिऐ। ओ पेट पकैड़ कऽ धरामसँ गिरला। हम बाहर निकललौं तँ गलीक दरबाजामे ताला लागल देखलिऐ। हम मकानक छतपर चढ़ि गेलौं बगलमे पड़ोसीकेँ एकटा फुसक घर रहइ। ओइ घरपर कुदि गेलौं। फेर हुनका आँगनमे कुदलौं। हम अर्धनग्नावस्थामे रही। हुनका ओसारपर किछु कपड़ा पसारल रहै। ओहीमे सँ एकटा साड़ी लऽ तेजीसँ लपेटलौं। देहसँ मटिया तेलक दुर्गन्ध अबैत रहए। हम गामक बाट छोड़ि गाछी दिस पड़ेलौं। सोचि नहि पाबि रहल छेलौं जे थाना जाइ कि माँ-बाबूजी लग जाइ। नैहरे जेनाइ उचित बुझना गेल। अनहरिया राति रहइ। चौकपर गेलौं तँ कुकुर सभ झौं-झौं कऽ छूटल। कोनो तरहेँ आगू निकललौं। ऐगला गामक बाट छोड़ि देलिऐ। बाधे-बाध विदा भेलौं। पता नहि चलि रहल छल जे हम केतए जा रहल छी लेकिन ई बूझल रहए जे हमर गाम एम्हरे अछि। आगू एकटा सरकारी स्कूल बुझाएल। हम ओही स्कूलमे शरण लेलौं। डर हुअए जे केम्हरोसँ कियो आबि ने जाए। कहुना राति बिता भोरहरबामे विदा भेलौं। जखन घर पहुँचलौं तँ हमर दुर्दशा देखि घरक लोक आश्चर्यचकित भऽ गेला। फेर सभ पुछए लगै गेला जे एना केना एलौं। काने-कान सौंसे

गाम भऽ गेल जे गीता सासुरसँ भागि कए आबि गेल अछि। जिज्ञासा वस दाइ-माइक भीड़ लागए लगल। हमरा किछु फुराइये ने रहल छल जे हम गप केतएसँ शुरू करी। धैर्य नहि रहल आओर बोम फारि कऽ कानए लगलौं। कनिते-कनिते हमरा फीट आबि गेल हम किछु ने बुझलिऐ। प्राथमिक उपचारक बाद हमरा होश आएल।

ऐगला दिन भने हमर बाबूजी, काकाकेँ संग कए हुनका ओइठाम पहुँचला। ओ सभ उल्टे बाबूजीकेँ तेतेक उलहन-उपराग देलखिन जे पूछू जुनि। हमरा ऊपर कुलक्षिणी आओर चरित्रहीनताक आरोप लगबैत कहलखिन जे ओ एहि परिवारक लाइक नइ अछि। पता नहि अहाँ केहेन बदचलन बेटी जनमौने छी। ओ अपने सँ भागि-पड़ाकऽ गेल हेन। आब हम अपना ऐठाम टपए तक नहि देबैन, हमरा परिवारकेँ कलंक लगा कऽ चलि गेल। हमर बाबूजीकेँ जेना पएर तरक माटि खिसकए लगलैन। आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। तखन ओ बेसी बात बढ़ाएब उचित नहि बुझलैथ आओर उल्टे पएर गाम आपस चलि एला।”

गप सुनैत-सुनैत भुटकुन भाइक मन कछमछाए लगलैन। ओ अंगैठीमोचार करैत बजला-

“यै भौजी, बड़ नमहर आओर दर्दनाक खिस्सा अछि अहाँक जीवनक।”

भौजी बजली-

“बुझाइए आब अहाँ अकैछ गेलौं, सुनैत-सुनैत। ठीक छै छोड़ू आब एतै खतम करू। लेकिन हेऽ.. ई तँ हमर सतरहे सालक उमेर तकक खिस्सा छी। एहि अवस्था तक केना पहुँचलौं से जँ कहए लागब तँ आओर दंग रहि जाएब।”

भुटकुन भाय बजला- “नै भौजी, हम-अहाँ जीवनक सभटा

खिस्सा सुनब लेकिन आइ रहए दियौ बाँकी काल्हि सुनाएब।”

ऐगला दिन फेर निश्चित समयपर दुनू गोरेक भेँट होइ छैन आओर आगूक खिस्सा शुरू करैत भौजी बजली-

“हमर बाबूजी सोचला जे झगड़ा-दन सभ परिवारमे होइते रहै छै। किछु दिनक बाद हुनका सभक मन अस्थिर भऽ जेतैन। अखन हड़बड़ा कऽ कोनो कदम उठौनाइ ठीक नहि होएत। थोड़ेक दिन कोनो तरहक बात-चीत नहि कएल गेल। समय पुरला उपरान्त हमरा बेटा जन्म लेलक। जेकर नाम प्रहलाद राखल गेल। मोनमे हर्ष आओर विस्मय दुनू रहए।

किछु मासक बाद बाबूजी टोह लेबाक लेल एहि गाम एला तँ दोसर-दोसरसँ पता चललैन जे हुनकर दोसर विवाहक गप-सप्प चलि रहल छैन। हमर बाबूजी चोटाएल तँ रहबे करैथ फेर मनमे जोरगर चोट लगलैन। आपस घर एला। विचार करए लगला जे आगू की कएल जाए। बहुत मंथनक बाद निर्णय लेल गेल जे सामाजिक स्तरसँ एकबेर सुलह करबाक प्रयास कएल जाए। दिन तय करि कऽ हमर बाबूजी पाँचटा पंचकेँ लए पहुँचला। एत्तौसँ पंच सभकेँ बजौल गेल रहइ। घमर्थन होइत-होइत कोनो सार्थक फैसला नहि भए सकल। अन्तमे बाबूजी कहलखिन जे हमर दहेज आओर गहना वापस कएल जाए, लेकिन ओ सभ किछु आपस करबाक लेल राजी नहि भेला। आओर किछु दिनक बाद हमर ससुर अपना बेटाकेँ दोसर विवाह कए देलखिहीन।

तेकर बाद हमर बाबूजी केस कए देलखिन। बरखो-बरख तक केस चलैत रहलै। लेकिन हिनका सभकेँ पैसा आओर पैरवी दुनू रहैन। केसो केँ खा गेलखिन। कोट-कचहरी करैत-करैत बाबूजी तबाह भऽ गेला। अबला आओर कमजोर-के कियो मदैत करबाक लेल तैयार नहि

भेला। अन्तमे केस हारि गेला। अइ घटनासँ हमर बाबूजी बहुत चिन्तित रहए लगला। माएकेँ दिलपर की बीतल हेतैन से तँ सोचिए सकै छी। धीरे-धीरे बाबूजीकेँ बेवहार परिवर्तन होमए लगलैन। किछु महिनाक बाद ओ अर्धविक्षिप्त भऽ गेला। राँचीमे इलाजमे मारे रूपैआ खरचा भेल मुदा ओ ठीक नहि भेला। एक दिन रातिमे घरसँ भागि गेला। भिनसरे-भिनसरे सड़कक किनारमे हुनकर लाश पड़ल रहैन। कोनो गाड़ीक ठोकरसँ हुनकर दर्दनाक मृत्यु भऽ गेलैन। परिवारपर तँ बुझू जे बज्रपात भऽ गेल। लेकिन कएल की जा सकैत छल। कालक आगू केकर चलल अछि।

अइ सदमासँ उबरलाक बाद परिवारक भार अपना ऊपरमे आबि गेल। माइक बाद हमरासँ छोट दूटा भाए रहए। अपन बेटा सेहो पाँच-छह बर्खक भऽ गेल रहए। आब हिनका सभकेँ पालन-पोषण, पढ़ेनाइ-लिखौनाइ हमर कर्तव्य भऽ गेल। हम हूबा बान्हलौं। माएकेँ बोल-भरोस देलिऐ आ अपन कर्तव्यपथपर चलि पड़लौं। आदमीक ऊपर केतबो विपैत अबै छै तँ एकटा ने एकटा रास्ता जरूर खुजल रहै छइ।

हमरा गामक बगलमे एकटा छोट-छन बाजार छै। ओतए जा कऽ एकटा महिला लग कपड़ा सिलाइयक काज सीखए लगलौं। सीखलाक पछाइत ओही बाजारमे टेलर खोललौं जइमे सिरिफ स्त्रीए टाक काज होइ, पुरुखक प्रवेश वर्जित कए देने रहिऐ। खूब काज आबए लागल। आस्ते-आस्ते स्टाफ राखए लगलौं। आमदनी सेहो हुअ लागल। बादमे समयक मांग देखि स्त्री सभक रोजगारोन्मुख बनयबाक लेल 'गीता सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र' सेहो खोललौं। अइमे भीड़ जुटए लागल। हम गीता दीदीक नामसँ इलाकामे प्रसिद्ध भऽ गेलौं।

माए हमर दोसर बिआहक लेल प्रयास करए लगली। हम दोसर

बिआह नइ करबाक निर्णय लेलौं। सोचलौं एक बेर भेलहा बिआहक दंश तँ झेल रहल छी आ दोसर बिआह केलासँ हम खुशहाले रहब तेकर कोन ठेकान। माए कहली, हमरा चिन्ता भऽ रहल अछि... तोहर। एतेकटा जीवन केना बिततौ। नारी जीवनमे बड़ तरहक उतार-चढ़ाव अबैत रहै छै। जान-अनजानमे कहीं कहियो पएर पिछैड़ गेलौ तँ कलंक लागि जाएत।

मुदा हम दृढ़ संकल्पशक्तिक संग माएकेँ बिसवास दियौलिऐन जे हम अपना जीवनमे कोनो एहेन कदम नहि उठाएब जइसँ परिवारकेँ कलंक लागत आ अहाँ सबहक आत्माकेँ ठेँस पहुँचत। माए बिसवास केलीह आओर हम आगू बढ़ए लगलौं।

हम अपना बेवसायक बलपर दुनू छोट भाएकेँ बी.ए. करा देलिऐ। बिआह-शादी भऽ गेलै आओर दुनू भाँइ अखन दिल्लीमे खूब बढ़िया रूपैआ कमा रहल अछि। हमर बेटा सी.बी.एस.ई. बोर्डमे नीक नबरसँ बारहवी पास केलक। आब ओकर भार मामा उठा लेने छइ। ओ दिल्लीमे मामा लग रहिकऽ प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी कए रहल अछि। ओ दृढ़संकल्पित अछि जे हम कोनो बड़का अफसर बनब। देखियौ, भगवान ओकर इच्छा कहिया पूर करै छथिन।

आब दोबारा अइ गाम हम केना एलौं से तँ साइत अहाँ जनिते हएब। आब हम की कहू।”

भुटकुन भाय बजला-

“नहि भौजी, हमरा बहुत बात नइ बुझल अछि सेहो कहिए दिअ।”

“ठीक छै आइ आब देरी भऽ जाएत, बाँकी काल्हिले रहए दियौ।”

दुनू गोरे उठिकऽ अपना-अपना घर दिसक रास्ता धेलैन। मुदा

तैबीच भौजी एकबेर बजली-

“अइ गामक किछु परेदशी नवयुवकसँ दिल्लीमे हमरा बेटाकेँ दोस्ती भऽ गेलइ। बात-चीतक सिलसिलामे सभकेँ हमरा सभक वास्तविकताक पता चललैन। अइ गामक युवक सभ अपना गामक विकासक लेल दिल्लीमे एकटा संघ चलबै छला। हमर प्रहलाद सेहो एकर सदस्य बनल। ओइमे मासे-मास सदस्यता शुल्क जमा करए पड़इ। एक दिन संघक बैसारमे हमर उजरल परिवारकेँ बसैपर जोरदार चरचा भेल। सभ सदस्य एक्के सुरमे निर्णय लेला जे हेतै से हेतै मुदा हम सभ एहि परिवारकेँ जरूर बसाएब। संघमे सामूहिक निर्णय लेल गेल जे जटेश्वर बाबू (हमर पति) केँ गामसँ सटले सड़कक कातमे पाँच कट्ठा जमीन छैन। तैपर संघक माध्यमसँ कब्जा कएल जाए, आओर ओहीपर हिनका वास्ते घर बनौल जाए।

होली पावनिक अवसरपर संघक अधिकांश सदस्य गाम आएले छला। पावनिक बाद एक दिन सुतली-रातिमे जे.सी.बी.सँ ओइ जमीनसँ माटि काटिकऽ रस्ताकात दिससँ भरल गेलइ। आओर सभ सदस्य मिलिकऽ भिनसर होइत-होइत घरो चढ़ा देलकै। भिनसरे जहन हुनका सभकेँ पता चललैन जे ई घर हमरा ले बनौल जा रहल अछि तँ सभ चुप रहि गेला। परिवारक किछु सदस्य विरोध जतौलैन लेकिन संघक शक्ति आओर युवकक एकजुटता देखि हुनका सभकेँ हिम्मत नहि भेलैन जे आगू किछु करितैथ। घर तैयार भऽ गेलाक बाद हमरा खबर भेल। हमर भाय आ बेटा सेहो दिल्लीसँ आएल रहए। हम जहिया एतए एलौं, हमरा देखबाक लेल लोकक भीड़ लागि गेल। गामक लोकक हमरा तेतेक सहयोग भेटल एकरा हम जीवनमे बिसैर नहि सकै छी।

यौ भुटकुन बौआ, आब हुनको सभक दिन लदि गेल छैन।

समय सभकेँ सभ दिन एक्के रंग थोड़े रहै छै। जे आइ अमीर अछि ओ काल्हि गरीब हएत आ जे गरीब अछि ओ काल्हि अमीर हेता। ई समयक चक्र छिऐ। आओर ई बात एकदम सत्य अछि जे जीवन कर्मपर निर्भर करै छै, जेहने करब तेहने ने पएब।

देखियौन ने अन्याय आ अत्याचारक फल केहेन भेटै छै। एतेक सम्पैत रहितो आइ हमरा सासु-ससुरकेँ हगनी-मुतनी करेबाक लेल परिवारक कोनो बेकती तैयार नहि छैन। खूब गंजन भऽ रहल छैन। हमरा तँ अखनो दया लागि रहल अछि लेकिन हम कइए की सकै छिऐ। जाबे पैरुख छेलैन ताबे भरि जीवन धने सम्पैतटाकेँ मोजर देलखिन। मनुक्खपन तँ कहियो एबे ने केलैन। आओर ओहने संस्कार बेटोकेँ देलखिन। ईहो जँ कम-सँ-कम मनुक्ख रहितैथ तँ हमरा जीवनमे एहेन घटना नहि ने होइतए। समदाही महक तीनू बेटा नहियेँ ने पढ़लकैन-लिखलकैन। तेतेक धन सम्पैत छैन जे बेचियो कऽ बेटा सभकेँ बड़का अफसर बना सकै छला। आब सुनै छिऐन जमीने बेच-बेच कऽ सभ खा रहल छैथ।

पता लागल हेन जे हमरा हाकिमकेँ समदाहियोसँ आठ बरखसँ बाजब-भुकब बन्न छैन। कहाँदिन सपत-सपतान भेल छैन, जन-हरवाह जकाँ दरबज्जेपर जलखै-खेनाइ भेटै छैन। बेटा सभ सेहो बेकहल भऽ गेल छैन आओर हरदम तनातनी रहै छैन। हूँ-हूँऽ.. देखैत ने रहियौ आगू की सभ होइ छै, ओइ परिवारमे...।

एतए एला बाद हम आइ तक हुनका सभसँ किछु मंगबाक लेल नहि गेलिऐन हेन, मुदा सुनै छिऐ हुनकर बेटा सभ बजैत रहै छैन जे एकरा सभकेँ कोनो हिस्सा-बखरा नहि देबइ। बताउ, एहनो केतौ भेलै हेन..।

हम अइ गामक भोँटर छी, हमरा सभ तरहक पहचान-पत्र पर

पतिक स्थानपर हुनकर नाँ जटेश्वर चौधरी लिखल अछि। हमरा बेटाक पहचान-पत्र पर सेहो पिताक जगहपर हुनकहि नाँ लिखल अछि। गाम-समाजक लोक जनिते छैथ जे हम कोन तरहेँ ई निर्वासित जीवन जीब रहल छी। तेकर बादो एहेन तरहक बात..। से हमरा तँ होइत रहैए जे 'नाशहिकाल विनाशहि बुद्धि' बला बात हिनका सभपर आबि गेल छैन।

जँ नइ किछु देता तँ समाज छै, संविधान छै। हम ने अवला छेलिऐ आ ओहन समय छेलै तँ सहि लेलिऐ, मुदा आब से थोड़े हेतैन। कनी हमरा बेटाकेँ सफल हुअ ने दियौ। हुनका जे उचित बुझैतैन से करता। बुझै छिऐ कि नहि जे ऐगला पीढ़ीकेँ खुशहाल बनयबाक लेल वर्तमान पीढ़ीकेँ बलिदान देबए पड़ै छै, तँए हमर जीवन बलिदाने बुझू...।"

दुनू गोरे उठि कऽ अँगैठी-मोचार करैत घर दिस विदा भेला।

❑❑

बुधनी माइक बेथा

गामक किछु युवक, जगत केर दलानपर बैसारक आयोजन केने छल। पूरा गाममे खबर देल गेल रहै जे साँझ छह बजे तक सभकेँ उपस्थित हेबाक अछि। गामक अधिकांश मुँहपुरख लगभग समयसँ उपस्थित भऽ गेला, मुदा चरणबाबूकेँ पहुँचबामे किछु बिलम्ब छेलैन। चरणबाबू पेशासँ वकील आओर गामक सभसँ पैघ मुँहपुरख लोक छैथ। गामक पंचैतीमे जजक भूमिका निमाहै छैथ। हुनकर सुनौल फैसला सर्वमान्य होइत अछि। जगतसँ हुनका नीक हेमछेम रहै छैन। जगतक घाक सेहो गाममे कम नहि। सदिखन चाप-रुआबमे रहैबला बेकती। पढ़लो-लिखल कम नहि, मुदा भितुरका लम्पट आ चरित्रहीन प्रवृतिक छथिए।

अइ बैसारमे बिनु बजौल महिलाक उपस्थिति सेहो कम नहि छल। ओ सभ दलानक सामने अन्हरिया माथे थहा-थही कऽ रहल छेली। किछु स्त्रीगण कोन्टा-फड़की धेने आपसमे फुसराहटमे लगल छेली। सभकेँ ई जिज्ञासा छेलैन जे देखिऐ बुधनी माए आइ केकरा फँसबै छै वा कोन तरहेँ ई राज खोलै छइ।

एमहर बुधनी माए इन्दिरा आवाससँ बनल पुरान ढहल-ढनमनाएल घरमे बैस कऽ अपन दीनतापर चिन्तित भऽ सोचि रहल छेली। हुनका ई पता छैन जे हमरापर आइ पंचायत बैसौल गेल अछि। दुखक पहाड़सँ दबल ओ सिसैक रहल छेली जे अखने बज्रपात होइतै

आ तइमे मरि जइतौं तँ नीक होइत। मुदा नहि, हमरा तँ पापीकेँ देखार करबाक अछि। ओ हिम्मत बान्हि कऽ सोचि रहल छेली जे केना हम भरल लोकमे अपन बात बाजब। हे भगवान, हमरा धैरज दिअ आओर हमरा अइ दुखसँ उबारि दिअ। हुनकर छाती धक्-धक् कऽ रहल छेलैन। आँखिसँ दहोबहो नोर टपैक रहल छेलैन। बेटी बुधनी लगमे बैसल रहइ। बुधनीक बिआह साल भरि पहिने पाँच धूर घराड़ी बेचि कऽ केने रहइ। बुधनी अपना मायकेँ समझा रहल छेलै जे किएक कनै छेँ? नै कान। जे सच बात छै से सभकेँ बता दिहैन। झूठ तँ बजबाके नहि छौ। जे हेतै से बुझल जेतइ। ओ अपना मनकेँ मजगूत केलक आओर आश्वस्त भऽ गेल जे हमरा की बजबाक अछि।

ताबत धरि चारि-पाँचटा महिला आँगनमे प्रवेश केलकै जइमे जगत केर पत्नी सेहो छेली। हिनका टोलमे कहबैका मानल जाइ छैन। ई बुधनी मायकेँ दियादे छथिन। आओर सम्बन्धमे छोट दियादनी लगथिन। ई किछु सहानुभूति देखबैत बजली-

“यै बुधनी माय, चलियौ ने दलानपर पंच बजा रहल छैथ।”

बुधनी माए धड़फड़ा कऽ उठल, नोर पोछलक आर भगवानकेँ सुमिरैत विदा भऽ गेल। स्त्री सभ चारूकातसँ घेर लेलकै आ पुछए लगलै-

“यै, अहाँ बड़ गाढ़ छी। केकर छी, की छी से कनी हमरो सभकेँ कहितौं किने। यइ, आबो कहू ने केकर नाम कहबै। बुझल रहत तखन ने अहाँक पक्षमे हम सभ रहब आ किछु बजबो करब।”

बुधनी माए-

“नहि नहि, ओत्तै कहबै। अहाँ सभ आइ सभटा बुझि जेबइ। एतेक दिनसँ अहाँ सभ हमरा मान चढ़ा, की नै बजलौं हेन। अबनी-गबनी सुनैत-सुनैत हमर कान बहीर भऽ गेल। दोसर कियो रहैत तँ

कहिया ने जहर-माहूर खा कऽ मरि गेल रहैत, मुदा हम। हम ओना नै मरैवाली छी।”

बुधनी माइक बात सुनि कऽ सभ स्त्रीगण चुप भऽ गेली।

बुधनी माए जा कि दलानक आगू आएल आकि चरणबाबू तमतमाकऽ बाजए लगला-

“कीऽऽ बुधनी माए, अहाँ केहेन बेशर्म छी। लाज-विचारकेँ धो कऽ पी नेने छी? एतेक बड़का पाप, एहेन कुकर्म करि कऽ अखैन तक जिन्दा केना छी। छी: अहाँकेँ तँ चुरुक भरि पानिमे डुमि कऽ मरि जेबाक चाही। छुछुनैर कहीं के..! अखैन तक तँ गामक छौंड़ा सभकेँ एकरा जिन्दा जरा देबाक चाही। हूँह, केकरो जहरो नै भेटलौं जे एहि कुलकलंकनी, बदचलन मौगीकेँ खुआ कऽ मारि दैतही। ई तँ दियाद सहित पूरा गामकेँ कलंकित कऽ देलकै। देखै छिऐ ठाढ़ जे अछि ढीठ जकाँ।”

चरणबाबूक समर्थनमे किछु लोक टिटकारी भरै छल। किछु छौंड़ा सबहक देह सेहो कसकसा रहल छेलै हाथ साफ करबाक लेल। आकि टुनटुनबाबू बिच्चेमे बाजि उठला-

“यौ ओकिल साहैब, हम कहै छी जे जँ ई छुतहरिया एहेन काज कैये लेलक तँ एकरा गिराइयो सकै छेलै किने? कोनो दवाइये खा लितै वा नहि तँ दड़िभंगा जा कऽ साफे करबा लैत। तखैन तँ कनिये लोक बुझितै किने। आ अखन जे ई सौंसे सोरहा भऽ गेलै से तँ नइ होइतै। कहू तँ एहि विधवा औरतकेँ ई किरदानी..! छी: छी: छी:।”

बरकू काकाकेँ नहि रहल गेलैन। बजला-

“वाह.. सभकोइ ओकरे बेइज्जत करियौ आ ई नै सोचै जाइ छिऐ जे अपनेसँ अपना पेटमे लऽ लेलकै की? कोनो पुरुखेकेँ किरदानी ने हेतै यौ? ओहो एकर बराबरक दोखी हएत किने। अवैध सम्बन्धमे

दुनूकेँ बराबर दोखी मानल जाए। आब ओहो बेचारीकेँ बाजए दियौ। आर सुनियौ एना भेलै केना।”

चरणबाबू बजला-

“धूर ई कुलक्षनी की बाजत। एकर आब समाजमे बजबाक मुँह छै।”

बिच्चेमे कन्टीरबाबू कहलखिन-

“हँ हँ, ओकरो बजबाक मौका देबाक चाही।”

पुन: कन्टीरबाबू जगतक पत्नी दिस मुखातिव होइत बजला-

“पुछथुन ने केकर पाप पेटमे पलि रहल छै।”

जगतक पत्नी बुधनी माएसँ पुछए लगलखिन-

“यै, बाजू ने केकर कारनामा छिऐ, जे अहाँक संग एहेन काज केलक से अपन भोगत। ओ आबौ एतए आ एकरा लऽ कऽ रहौ आ खेबा-खरचा जोरौ।”

जगत ओइ दिन बीचमे नै बैस कऽ कात धेने रहए। ओकर छाती धौकनी जकाँ धकधका रहल छेलइ। अपन परेशानीकेँ बेर-बेर छुपयबाक प्रयास कए रहल छल। पत्नीक बातपर गुस्सा आबि रहल छेलै जे ईहो आइ गपकेँ खूब चेथाइर रहल अछि।

बुधनी माए नमहर साँस लेलक। मुँहपर सँ नुआँ हटा कऽ कनी देखार कए बाजए लगल-

“हम सभ पंचकेँ पैरनाम करै छिऐन। हम कल जोरै छिऐन जे हमर सब बात सुनथुहुन। हम सबटा आइदसँ अन्त तक कहि दइ छिऐन। हे भगवान हम झूठ बाजी तँ हमर देह नै काज आबए, हमरा देहपर बज्जर खसए।”

पंचमे सँ किछु लोक संकेत कएलक- “ठीक छै बाजू।”

स्त्रीगण सेहो इशारा केलखिन-

“हँ-हँ, किएक ने बाजब। सभकेँ बजबाक अधिकार छै।”

बुधनी माएकेँ जेना कनी बल भेटलै, लाज-धाक छोड़ि बाजए लगल- “बड़का बाढ़िमे, जइ दिन बान्ह टुटल रहै सभ अपन-अपन ऊँचगर स्थान ताकि गर धऽ लेलक। के केतए गेल कोनो ठीक नहि। हम गामेपर पानिसँ घेरा गेलौं। हमरा किछु नै फुराइ छल जे हम केतए जाँउ। पहिले बुझितिऐ जे बान्ह टुटबे करतै तँ बेटियो लग चल जइतौं मुदा कोनो मौका नहि देखि हम अप्पन बुझि जगतकेँ घरपर गेलौं। जे हुनकरे कोठापर रहि जाएब। कहुना जान बँचि जाएत। मुदा हुनकर कनियाँ कुत्ता जेना फटकारलक, हम चोट्टे ओइठामसँ घुरि गेलौं। तब हम गिरहत ऐठाम गेलौं। सभ जनै छिऐ जे हम हुनका ओइठाम बोइन करै छी। आ हुनकर बरतन-बासन धो कऽ गुजर करै छी। लेकिन ओहो सभ नै रहए देलैन। ताबे सौंसे टोलामे भरि ठेहुन पानि भरि गेल रहै, केतौ आओर जाइक साहस नहि भेल। हम अपने घर आपस आबि गेलौं। आ अँगनाक मचानपर छत्ता तानि बैस रहलौं। जोरगर बरखा आ हवामे छाता कोनो काज नै केलक। पूरा देह भीजि गेल। जी जान अबधारि कऽ ओसारापर देल चौकीपर चल गेलौं। लेकिन देहपर घर गिरबाक डर बनल रहए। सोचलौं, मरब तँ मरब आब केतौ नै जाएब। आबैत काल हमरा जगत देखने रहए। ओकरा विश्वास भऽ गेलै जे आब ई केतौ जाइबाली नहि अछि। हम आइ तक केकरो अपमान बरदास नै केलिऐ, आइ पहिल दिन हमर एहेन बेइज्जती भेल। जखन थोड़े राति बितलै तँ पानि जमलाक कारणेँ अगल-बगलक घर सभ गिरए लगलै तँ हमरा डरे हवाश उड़ए लगल। हुए भोकारि पारि कऽ कानए लागी। मुदा छातीपर पाथर राखि एकटा फटलाहा चेफरी ओढ़ि लेलौं आ घोकरिया कऽ चौकीपर पड़ि रहलौं। मुसलाधार बरखा आओर झटकी एहेन नै देखल। कनियेँ आँखि लागल की

आँगनमे छपर-छपर होइत आवाज सुनलौं। हम डरे निसबद भऽ गेलौं। पएर-हाथकेँ आरो घसमोरि कऽ गबदियौने पड़ल रही। बुझना गेल जे कोइ ठाढ़ अछि। असथिरसँ देहपर हाथ दैत फुसफुसाएल, भौजी यै भौजी? हम चिचिया उठलौं, धड़फड़ा कऽ निच्चामे गिर पड़लौं। भूत-भूत भूत। मुदा हमरा लगमे जिन्दा भूतकेँ रूपमे जगत ठाढ़ रहए। हमर देह घामे-पसीने नहा गेल। जगत फुसफुसा कऽ बाजल- 'भौजी चुपु ने, किएक एते जोरसँ बाजै छी'।

हम खिसिया उठलिऐ- एहेन विकराल समयमे अहाँ कथी ले एलौं हेन। जाउ-जाउ एतएसँ कोइ देखत तँ की कहत। साइत अहाँ हमरा दाग लगबैले आबि गेलौं हेन। हम भगवाक प्रयास केलौं लेकिन असम्भव छल। जगत हमरा भरि पाँज कऽ पकैड़ लेलक आ फुसलाबए लगल। ओकर बहुत पहिलेसँ हमरापर नजैर रहइ। हम कहियो हाथ नै लगए देलिऐ, लेकिन ओइ दिन हम अवला नारी बेबस भऽ गेल रही हमर शरीर जेना निष्प्राण भऽ गेल। फेर की भेलै हम किछु नै बुझलिऐ। होश आएल तँ हम कहलिऐ गाममे हम सभकेँ कहि देबै तँ जगत कहलक, जँ केतौ बजलें तँ हम जानसँ तोरा मारि देबौ। हमरा जब महिना रूकि गेल तँ हम एक दिन जगतकेँ कहलिऐ लेकिन ओ कोनो धियान-बात नहि दऽ सीधे कहलक जे ओ हमर नै केकरो अनकर हेतौ। हे भगवान जँ हम एकोटा बात झूठ बाजल होइ तँ हमरा कुष्टी फुटए।"

बुधनी माइक बेथा सुनि बैसल सभ स्त्री-पुरुख 'दाँते आँगुर काटए' लागल। सभ एकदम शान्त छल। सभ कियो एक-दोसराक तरफ देखि रहल छल।। स्त्री सभ दबले आवाजमे काना-फुसी कए रहल छेली जे 'बाप रे बाप केना कऽ एतेक बात बाजल भेलै बुधनी माएकेँ..! एकोटा बात केतौ अतरेबो ने केलइ। जेना रट्टा लगा कऽ आएल छल। जगत एकबेर बीचमे बजैक प्रयास केने रहै मुदा पंच नै

बाजए देलकै।

जगतक पत्नी सनसना कऽ उठल- “नै नै ई सभटा झूठ बात अछि। ई पपियाही हमरा आदमीकेँ फँसा रहल अछि। ई सतभतरी केतेक लग गेल हएत। एकर पाछू जरूर कोनो साजिस अछि। गामेक कोइ एकरा सीखा-पढ़ा कऽ पास कऽ देने छै।”

पत्नीक बल पबिते जगतपर जेना भूत सवार भऽ गेलै ओ आव देखलक ने ताव सनैक कऽ उठल। बुधनी माएकेँ झोंटा पकैड़ कऽ गिरा देलकै आर लाते-चमेटे धूनि देलकै। पंचायतमे अफरा-तफरी मचि गेलइ। लोक बीच-बचाव करए लागल।

बेचारी बुधनी माएकेँ बढ़ियाँ जकाँ मारि लागि गेलइ। दाँती-पर-दाँती लागए लगलै। स्त्री सभ पानि पियौलकै चानिपर तेल देलकै। माइक ई दुर्दशा देखि बुधनी सेहो डरि गेल आ हबोडकार भऽ कानए लगल। अफसोस करए लगल। बिना कोनो फैसला केनहि पंच सभ विदा भऽ गेला ई बात बजैत जे जगत एकदम नजायज केलक। जगतक धाकक चलते केकरो बेसी बजबाक साहस नहि भेलै, मुदा किछु नवयुवक जगतक विरुद्ध कानाफुसी करए लागल।

बुधनी माइक आँगनमे देर राति तक महिला सबहक एनाइ-गेनाइ लागल रहल। दुनू माए-बेटी कना-खीजी करैत भुखले सुति रहल, मुदा नीन केतएसँ हएत। गाम जब निशोवद भऽ गेल तखन तीनटा नवयुवक एकदम चुपचाप दुनू माए-बेटीसँ मिलि कऽ किछु कानाफुसी केलक। दुखयारीकेँ भरोस जगलै। आओर दुनू माए-बेटी निसिभाग रातिमे जेना-तेना थानापर विदा भऽ गेल। थाना पाँच किलोमीटर दूर छइ। पहुँचैत-पहुँचैत भोर भऽ गेलइ। ओतए कियो ने भेटलै। बगलमे हनुमानजीक मन्दिरपर थाकि कऽ दुनू माए-बेटी पड़ि रहल। बेटी माएकेँ जाँतए लगल। भिनसरे छह बजे दरोगासँ भेँट भेलइ। जगतक नाम सुनैत देरी दरोगा झिड़की दैत बाजल- “जाओ

गाममे पंचैती करके फरिया लेना।”

दरोगा ओकर बात सुनबाक लेल तैयार नहि छल। बुधनी माए कहलकै- “हजूर कनी बातो तँ सुनियौ।”

दरोगा- “हमको कुछ नहीं सुनना है, जाओ किसी ग्रामीण को लेकर आना।”

बुधनी माए कनी जोरसँ बाजल- “अहाँ हमर बात नै सुनब आर निसाफ नइ कऽ देब तँ हम एतै देहमे आगि लगा कऽ मरि जाएब। लेकिन हम गाम आपस नहि जाएब।”

दरोगा गुम्हैर कऽ बुधनी माए दिस ताकि बाजल- “जाओ बारह बजे तक तुम्हारे घरपर आऐंगे।”

बुधनी माए बाजल- “से नै हएत, हमरो साथे लऽ चलू नहि तँ गामपर उ सभ हमरा जानसँ माइर देत।”

दरोगा सोचलक ई तँ बड़ जिद्दी औरत अछि, बाजल- “लाओ भोरे-भोरे सलामी कितना लाई है?”

बुधनी माए सलामीक माने नै बुझलकै तँ फेर दरोगा कहलकै-

“कैंचाऽऽ। अरे भाइ जाएंगे सो तेलो का खरचा दोगी कि नहीं?”

बुधनी माए गेठरी खोलि कऽ दू साए रूपैआ दरोगाक हाथमे दैत बाजल-

“हजूर, ई हमर बोइन केलहा पाइ छी। खाएब जे सेहो उपाए नहि अछि, मुदा अहाँकेँ हम जरूर देब।”

दरोगा निर्लज्ज जकाँ रूपैआ अपन पॉकेटमे राखि लेलक। बुधनी माए सोचए लागल- “लोक ठीके कहै छै जे ‘पुलिस अपना बापोक ने होइ छइ।”

ठीक एक घन्टाक पछाइत दरोगा अपन दल-बलक संग विदा

भेल। पुलिसक जीपमे बैसल बुधनी माए सोचि रहल छेली, पता नहि गामपर आइ की सभ हएत। हठात् मन उत्साहित भेलै, आब गिराएब तँ नहिएँ। जँ कहीं भगवान बेटा दऽ देला तँ हमर सभ आश पूरा भऽ जाएत। 'आदमीकेँ हिम्मत नै हारबाक चाही, आशा कखनो ने छोड़बाक चाही। परवचनमे सुनने रहिऐ जे दुख भोगलाक बादे सुख भेटै छइ'।

जीप जगतकेँ दरबज्जापर पहुँच गेलइ। जगतक दरबज्जासँ एक घरक बाद बुधनी माइक घर अछि। देखा-देखी बहुत लोक जमा भऽ गेलइ। दरोगा गामक किछु मुँहपुरुखकेँ बजा कऽ जगतकेँ बजौलक। दरोगा बाजए लगल- "क्या जगत बाबू! हम तो समझ रहे थे आप अच्छे आदमी हैं। आपके विरुद्ध इस तरह का केस शोभा नहीं देता। आखिर क्या मामला है? गाँव में आपलोग क्या-क्या खिचड़ी पकाते रहते हैं।"

जगत दरोगासँ फराक भऽ गप करए चाहै छल मुदा गामक नवयुवक सेहो तरे-तर तेवरमे छल। जगत भाँपि गेल जे हमरा विरुद्ध योजना तैयार अछि। किछु बजबाक साहस नहि भेलइ।

बुधनी माए मौका देखि दरोगाकेँ कहलक- "हजूर, हमरा कनी बाजए दिअ।"

"ठीक है बोलिए।"

"हजूर, पनरह साल पहिने हमर पतिकेँ देहान्त भऽ गेल। एकटा बेटी भेल रहए, सोचलौं एकरे लऽ कऽ दिन काटि लेब, लेकिन आब सोचै छी तँ लगैत अछि जे हमर फैसला गलत रहए। विधवा जीवन बितौनाइए समाजमे बड़ कठिन छइ। तहूमे जँ बोनिहारिन, दुखिया छी तखन तँ जीवन पहाड़े बुझू। एतेक दिनमे कोन-कोन पागबला, मोछबला बाबू, भैया ने हमरा तरफ खराप नजैरसँ देखलक मुदा हम

अप्पन इज्जत-आबरू बँचबैत रहलौं। केतौ दाग नै लागए देलिऐ। लेकिन ई जगतबा एक दिन हमर सभकुछ लूटि लेलक। ओकरे कएल पाप हमरा पेटमे पलि रहल अछि। आब सगर नगर घिनाइये गेलै तँ चाहे जे भऽ जाए, हम एहि बच्चाकेँ जनम दऽ कऽ रहबै आ ओकर बाप जगतबे कहौते। आब तँ सुनै छिऐ डागदरियो जाँचसँ पता चलि जाइ छै जे केकरा पेटमे केकर बच्चा छिऐ। हजूर, जँ बिसवास नइ होइत अछि तँ अहाँ जाँच करबा कऽ देखि लियौ।”

जगतकेँ पक्षमे एकोटा ग्रामीण बजबाक लेल तैयार नइ रहइ। दरोगा सभ बात बुझि गेला। जगतकेँ थानापर लऽ गेला। बुधनी माएकेँ जीवन भरिक खेबा-खर्चा देबाक कागज बनौल गेल। जगतकेँ कहल गेलै- “बात आगे बढ़ने से आप बड़ी परेशानीमे पड़ जाएंगे।”

दरोगा जगतसँ घूस-घास लेलक, बात आगू नइ बढ़लै।

बुधनी माए अपना घरमे रहए लागल। जगत कहियोकाल किछु दऽ दइ छेलइ। समय पुरलापर सुन्दर सन बालकक जन्म भेल। बुधनी माइक खुशीक ठेकान नहि रहल। बच्चा कोरामे छेलै, जीवन भरिक बेथाकेँ मोन पाड़ैत बुधनी माइक आँखिसँ नोर टपैक रहल छल। ओ अपना जीतपर गर्व महसूस कऽ रहल छल।

❑❑

नशामुक्त गाम

राजू सर अपने गामक मध्य विद्यालयमे प्रभारी प्रधानाध्यापक रूपमे कार्यरत छैथ। चटिया सभकेँ पढ़बै-लिखबैमे सभदिन सँ मनलग्गू आ तेज-तर्रार रहला अछि। अपने, अनुशासनक पालन करैत राजू सर विद्यालयक विद्यार्थी सभकेँ सेहो सदिखन अनुशासनक पाठ पढ़बैत रहै छैथ आ अपना गामक विकासक लेल सेहो सदिखन तत्पर रहिते छैथ।

हालक किछु बर्खसँ सामाजिक वातावरणमे जे परिवर्तन भऽ रहल अछि, किशोर आ युवाक दिशा जे बदैल रहल अछि तइसँ राजू सरजी खिन्न रहै छैथ। पहिले गामक बच्चा सभ साँझ पड़ैत-पड़ैत लालटेन नेसिकऽ दलान वा ओसरापर पढ़ैले बैस रहैत छल, मुदा आब ओ मोबाइलमे व्यस्त भऽ जाइत अछि।

राजू सर पनखौक आदमी छैथ। माने हुनका पान खेबाक हिस्सक छैन। मुदा विद्यालयक समयमे ओ कखनो आ कहियो ने पान खाइ छैथ। हुनकर मानब छैन जे पान-गुटखा खा कऽ चटिया सभक बीचमे नहि जेबाक चाही। राजू सर अपन अइ धारणापर सभ दिनसँ अडिग रहला अछि। हँ, तखन विद्यालयक कार्यसँ निवृत्त होइते हुनका मुँहमे पान चाहबे करिऐन। ओ कहै छैथ जे पेटमे अन्न रहए वा नहि मुदा मुँहमे पान रहलासँ मुहोँ लाल आ मनो लाल रहैत अछि।

एक दिन साँझुपहर चौकपर सँ पान खा कऽ राजू सर आबि

रहल छला। रस्तामे महाकान्त आओर भोला भाय हुनका भेट गेलैन। हिनका देखिते ओ दुनू गोरे एक्के स्वरमे बजला-

“सर, अहींक इंतजार हम सभ कए रहल छेलौं।”

राजू सर बजला-

“किए? कोनो विशेष गप अछि की?”

दुनू गोरे बजला-

“सर, की कहूँ.. गामक स्थिति तँ बड़ खराप भेल चल जा रहल अछि। आब तँ ननकियो छौड़ा सभ देशी दारू पीब रहल अछि। गाममे तीन-तीन आदमी देशी दारू बेचि रहल अछि। तीनू दोकानदार तीन उमेरक अछि। जे जेहेन उमेरक अछि तेकरा लग तेहने उमेरसँ मिलैत-जुलैत गहिंकी दारू पीबाक लेल पहुँचैत अछि। पहिले बिहारमे दारू बन्न नहि छेलै तँ अइ इलाकामे एक्केटा गाममे बनौआ दारू भेटै छेलइ। ओतए गिनल-चुनल लोक पहुँचैत छल। मुदा आब दारू बन्न भेने सभ गामक गली-गलीमे चोरी-छिपे दारू भेटि जाइत अछि। तइमे अप्पन गाम तँ आब नाम कए रहल अछि। एना जे रहतै तँ गाम की विकास करत। से सर.. अहाँ सँ निवेदन अछि जे थानामे खबर दऽ कऽ गामसँ दारू बेचनाइ बन्द करबा दितिऐ।”

राजू सर सभ बात सुनिकऽ गम्भीरतासँ बजला-

“लेकिन एकर उठौनाबला गाहैंक तँ अहूँ दुनू गोरे छी। संग-संग गामक किछु मुँहपुरुख सभ बेचबै छथिन। आओर ओ सभ तँ रोजे ओइ अड्डापर जाइत रहै छैथ। हिनके सभक देखा-देखी ने आब नवतुरियो सभ पीनाइ शुरू कऽ देलक अछि।”

परदेशी नवयुवक सभ जखन गाम अबैत अछि तँ गुट बनाकऽ रोजे माछ-मासु आ मदिरा इत्यादिक पार्टी करैत अछि। जगह-जगहपर जूआक अड्डा बनल रहै छइ। गाछी-बिरछीमे दिन-राति पार्टी

चलैत रहै छइ। ओ सभ तँ सोचैत अछि जे हम सभ तँ जे छी से छीहे, हमरासँ छोट सभ सेहो हमरासँ नीक नहि बनि जाए। एकरे नकल ई नवतुरिया सभ ने कऽ रहल अछि।

गामक अधिकांश बच्चाक पिता परदेश खटैत अछि आ माए गामपर रहै छइ। माएकेँ ई बच्चा सभ नहि गुदानै छै। आसानीसँ ठकि लइ छै। कहै छिऐ जे माए-बाप बच्चाकेँ जेहेन संस्कार देतै बच्चा तेहने ने बनतै। मुदा कोन माए-बाप चाहैत अछि जे हमर धिया-पुता नीक नहि बनए।

आइ ई नवतुरिया सभ गलत रस्तापर जा रहल अछि तँ एकर सभसँ पैघ दोखी समाजेक किछु दुष्ट प्रवृतिक लोक ने छैथ।

महाकान्त आ भोला भाय, दुनू गोरे सुनैत रहला। किछु कालक बाद भोला भाय बजला-

“हँ सर, से तँ ठीके कहै छिऐ अपने। मुदा एकर समाधान केना हएत?”

एकर समाधान थाना आ पुलिसकेँ कहने नहि हएत। किएक तँ ओ सभ सेहो एकरा सभसँ मिलल रहै छै। जे दोकानदार समयसँ सप्ताहिक नहि पहुँचाबै छै तकरे टा पकड़ैत अछि आ तेकरो लेन-देन भेलाक बाद छोड़ि दइ छइ।

दारू बेचनाइ बन्द करेबाक सभसँ नीक तरीका अछि जे गामक सभकियो दारू पीनाइ छोड़ि दिऐ। ने गाँहैक जेतै आ ने ओ बेचत। तेकर बादो ओ धन्धा बन्न नहि करत तँ ओकरापर सामाजिक दबाव देल जेतइ।

मुदा ई एतेक आसान काज नहि अछि। हँ, सर हम सभ साफ कऽ छोड़ि देब। जे सप्पत खुआ लिअ, कहियो नहि पीयब। गामक स्थिति देखिकऽ हमहूँ सभ आजीज भऽ गेल छी। सर, अहाँ कनी

धियानसँ सोचियौ, कोनो ने कोनो रस्ता जरूर निकलतै।

राजू सर समाजक सुबेवस्था आओर कुबेवस्थापर चिन्तन-मनन करैत घर एला। हाथ-पएर धो कऽ एकटा पत्रिका लऽ पढ़ए लगला मुदा मने ने लागैन।

पत्नी पुछलकैन-

“मुँह किए लटकल अछि यौ, की सोचि रहल छी.? चाह पीयब, बनाबी?”

“हँ.. हँ.., जरूर.. जरूर.. बनाउ।”

राजू सर सोचए लगला। समाजक विकास लेल अर्थ जरूरी अछि, गाम घरमे रोजगारक घोर अभाव छै तँए लोक शहर धेने अछि। निचला तबका आ निम्न-मध्यवर्गीय परिवारक लोक घर-परिवारकेँ छोड़िकऽ शहर चलि जाइत अछि। तइमे किछु गिनल-चुनल लोककेँ नीक नोकरी भेट जाइ छै आ ओ अपना परिवारकेँ लऽ कऽ बाहरे रहए लगैत अछि आ ओतहि धिया-पुताकेँ पढ़ाबए लगैत अछि। ओतइ सभ किछु उपलब्ध रहने ओ परिवार आगू बढ़ि जाइत अछि। तहूमे सभ नहि, किछु भुतियेबो करैत अछि।

एमहर गाममे नवतुरिया आ नवयुवा सभ स्कूल आ कौलेजमे नाओं लिखबैत अछि तँ माए ओकरा होशियार बुझए लगैत अछि। आब बड़का मोबाइल सभकेँ चाहबे करी... गारजन जँ नहि कीनि देतै तँ ओ घरमे अठबज्जर कऽ देत। आब मोबाइल जीवनक अंग बनि गेल अछि। ई बच्चा सभ एकर सदुपयोग कम आ दुरुपयोग बेसी करैत अछि तइ कारणेँ अधिकांश युवा राहसँ बेराह भऽ रहल अछि। ज्ञान-विज्ञान आ टेक्नोलॉजीकेँ आगू बढ़ने विकास वा विनाश, शिक्षा-संस्कृतिक उन्नैत वा अवनैत दुनू भऽ रहल अछि। एहि चकाचौंधमे ई नवजेनरेशन जेना भुतिया रहल अछि। खाएर जे.. से..।

ओही दिन-रातिमे सुतैसँ पहिने राजू सर गामकेँ नशामुक्त करबाक संकल्प लेलैन। ऐगला दिन भने गामक किछु एहेन बेकतीसँ भेँट केलाह, जे नशा नहि करै छैथ, हुनका सभ लग अपन विचार रखलैन। ओ सभ कहलकैन-

“विचार तँ बड़ नीक अछि। मुदा अछि बड़ असम्भव।”

राजू सर बजला-

“अहाँ सभ सिरिफ साथ दिअ, असम्भवकेँ सम्भव कएल जा सकैत अछि।”

सभ कहलकैन- “ठीक छै, हम सभ अहाँक संग छी। ऐगला योजना बनाउ जे ई केना भऽ सकैत अछि।”

दू साए घरक बस्तीमे मात्र पाँच बेकती संग देबाक आश्वासन देलकैन। मुदा ई बुझि रहल छला जे ईहो सभ ऊपरे-ऊपरे कहला हेन। तथापि राजू सर खुशीए रहैथ जे किछुओ लोक तँ संग दइले तैयार भेला किने।

ऐगला दिन भने गामक मध्य सामुदायिक भवनपर सौंसे गामक बैसार करौलैन। बैसारमे राजू सर अपन विचार विस्तारसँ रखलैन। नशापानक कुप्रभावपर प्रभावी चर्चा केलैन। ग्रामीणसँ आग्रह आओर निवेदन केलैन जे ई काज छोड़ाएल जाए। अइसँ गामक नव जेनरेशन बिगैड़ रहल अछि।

बैसारमे चारू तरफ लोक कानाफुसी करए लागल। हिनका विचारकेँ जोरदार विरोध कएल गेल। एकटा पियक्कर पीबकऽ आएले रहए। ओ हिनकापर उनैट गेल- “हे यौ मास्टर साहैब, अहाँक काज छी धिया-पुताकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ। गामपर हुकुम चलौनाइ नइ। के दारू पीबैत अछि आ के नहि पीबैत अछि, के बेचैत अछि आ के नै बेचैत अछि, अइसँ अहाँकेँ कोन मतलब..?”

दोसर बेकती बजला-

“देश स्वतंत्र छै, जेकरा जे मन हेतै से से करत। केकरो खाइ-पीबैपर, बिजनीस-बेपारपर अहाँ रोक लगबैबला के..? बलौसँ अहाँ अपन बनल बनौल प्रतिष्ठाकेँ किए धुमिल करए चाहै छी।”

तेसर बेकती बाजल-

“अहाँ तँ पीबै छी नहि, तँए अहाँ की बुझबै एकर आनन्द। अपने जेकाँ सभकेँ नहि बुझियौ। अहाँकेँ सुधारलासँ समाज नहि सुधैर जेतइ।”

जेकरो किछु बजबाक अवगैत नहि, सेहो अपन दबल आवाजमे राजू सर पर टोन्ट कसए लागल। सभ उठिकऽ विदा भऽ गेल। बिना किछु निर्णय भेने चिन्तित मुद्रामे राजू सर घर आपस एला।

घरमे पत्नी सेहो झिड़की देलकैन-

“सौंसे गामकेँ सुधारैक ठीका अहीं नेने छी। किछु नै फुराइत अछि तँ नबावी करए लगै छी। छोड़ि दियौ गाम-समाजकेँ। जेतए जाइ छै, जाए दियौ। अनेरे दुनियाँ-संसारक टेंशन अपना ऊपर कथीले लइ छी।”

ओइ दिन राजू सरकेँ रातिमे नीन नहि होइन। अधरतियामे पत्नीकेँ बुझेबाक मन भेलैन। मुदा अपने मनमे भेलैन जे गामक सभकियो अइ विचारक विरूद्ध छैथ। कोनो पंचायत प्रतिनिधिकेँ कहबैन तँ सेहो संग नहियेँ देता। सभ तँ ओहन कुकृत्यमे डुमले रहै छैथ। पुन: मोन पड़लैन जे वर्तमान मुखिया तँ दारू नहि पीबै छैथ। काल्हि हुनका समक्ष प्रस्ताव राखब। ओ जरूर संग देता। जँ संकल्प लेलौं तँ हमरा चुप नहि बैसबाक चाही। अपन परियास अन्तिम-अन्तिम तक करैत रहक चाही।

राजू सर ऐगला दिन मुखियाजी लग जा कऽ प्रस्ताव रखलैन।

ओ भरपूर सहयोगक आश्वासन देलकैन। तेकर बाद प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी लग सेहो गेला। हुनका लग अपन बात रखैत राजू सर बजला-

“श्रीमान्, हम अपना विद्यालयक छात्र-छात्राक द्वारा विशेष नशामुक्ति अभियान चलाबए चाहि रहल छी। हम छात्र-छात्राकेँ जागरूक कए नशामुक्तिसँ जुड़ल ‘गीत’ आ ‘नारा’क संग सप्ताहमे एक दिन प्रभातफेरी निकालए चाहै छी, से हमरा कार्यालयी आदेश देल जाउ।”

प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी हिनक प्रस्तावसँ खूब प्रसन्न भेला। आओर विद्यालयक पठन-पाठन प्रभावित केने बिना ई काज करबाक आदेश देलखिन। संगहि एकटा लिखित आवेदन सेहो जमा करबाक लेल राजू सर केँ कहलकैन।

राजू सर अपना विद्यालयमे गुणवतापूर्ण शिक्षाक संग नशमुक्ति अभियानसँ जुड़ल गीत, नारा आओर नुक्कर नाटकक तैयारी जोर-शोरसँ कराबए लगला। छात्र-छात्रा सभ सेहो बड़ उत्साहित छल।

ऐगले मास नशामुक्ति दिवस रहए। राजू सरकेँ मन कहलकैन जे किए ने ई अभियान शुरू करबाक लेल ओही दिनक चुनाव कएल जाए।

नशामुक्ति दिवसक भिनसरे पूर्ण तैयारीक संग प्रभातफेरी निकालल गेल। जे देखलक से दंग रहि गेल। ई कार्यक्रम तेतेक ने सफल भेल से गामे भरिमे नहि, पंचायतसँ प्रखण्ड तक चर्चाक विषय बनि गेल। गामक युवक सभ विडियो बना-बना कऽ सोशल मिडियापर वायरल केलक।

उत्साहित भऽ कऽ राजू सर आब सभ प्रत्येक सप्ताहक सोम दिन प्रभात-फेरी निकालए लगला। संग-संग नशामुक्तिपर नुक्कर नाटकक आयोजन सेहो करए लगला। अभिभावक लोकनि अपना बच्चाकेँ

प्रतिभाक प्रदर्शन देखि खुशीसँ झुमि उठला। कल्पनासँ बाहर छेलैन ई बच्चा सभ एहनो प्रदर्शन कऽ सकैए। राजू सरकेँ खूब जश भेटए लगलैन। मुदा राजू सर तँ एहेन जाहुरी छैथ जे कोयलाक खानसँ हीरा तलाशनाइ जनै छैथ।

ठीक एक मासक बाद आस्ते-आस्ते गामक माहौल बदलए लगल। दारू पियाकमे किछु कमी हुअ लगल।

ऐगला मास अभिभावक, शिक्षक मासिक गोष्ठीमे राजू सर छात्र-छात्राक माताक उपस्थितिपर सेहो बल दिअ लगला। परिणामस्वरूप शत-प्रतिशत माता उपस्थित भेली। एहि गोष्ठीमे विद्यार्थी सभक पठन-पाठन आ अनुशासनसँ लऽ कऽ नशामुक्ति अभियान तक पर जोरदार चर्चा कएल। राजू सर अभिभावक सभकेँ समझा रहल छला जे बिहार सरकारकेँ दारू बन्द करेबाक पाछू की उद्देश्य छल आओर लोक एकरा कोन तरहेँ लऽ रहल अछि। दारू पीने हानियेँ-हानि होइ छै, लाभ किछु ने। तेकर बादो लोक चोरा-नुका कऽ पीब रहल अछि। सालमे सैंकड़ो लोक जहरीला दारू पीब कऽ मरैत अछि। ई दारू देहमे अनेक तरहक बीमारीकेँ जन्म दैत अछि। दारू पीलासँ मोनमे नीक विचार तँ कखनौं नहि उत्पन्न होइ छै। अनेरे घरसँ लऽ कऽ टोल-पड़ोस तक हो-हल्ला, गारि-गरौऐल आओर मारि-पीट तक भऽ जाइ छइ। अइसँ असामाजिक वातावरणकेँ सेहो बढ़ावा भेटै छै आओर समाज उन्नतिक बदला अवनतिकक तरफ चलि जाइत अछि। आ सभसँ पैघ बात नव जेनरेशन बिगैड़ रहल अछि।

सुनै छिऐ जेतेकमे एक गिलास देसी दारू भेटै छै तेतबेमे एक लीटर दूध भेटै छै। तखन बताउ, एक गिलास दारू नीक आकि एक लीटर दूध नीक..?”

सभ कियो एक्के स्वरमे बजली- “सर, दूधे ने नीक।”

“तँए, हम अहाँ सभसँ हाथ जोड़िकऽ निवेदन करै छी जे हमरा

एहि अभियानमे सहयोग करी। हमरा बिसवास अछि जे एक दिन सफलता जरूर भेटत।”

सभ महिला एक्के स्वरमे बजली-

“सर, हम सभ कियो अहाँक संग छी। अहाँ जे कहब, हम सभ करबाक लेल तैयार छी।”

बीचमे गामक जीविका दीदी सेहो छेली। ओ उठि कऽ बजली-

“आब हमहूँ सभ चुप नहि बैसब। काल्हियेसँ गाममे दारू बिकेनाइ बन्द भऽ जाएत।”

सभ कियो आपसमे विचार केलीह जे काल्हि की करबाक अछि।

ऐगला दिन सभ महिला एक जगह जमा भेली। जइमे गामक किछु आओर लोक शामिल भेला। सभ मिलिकऽ दारूक दोकानपर पहुँचली। गाममे तीन गोरे दारू बेचैए। तीनू दारूबेच्चाकेँ खूब बेइज्जत करैत महिला सभ चेतबैत कहलकैन-

“ई काज आइसँ बन्द भऽ जेबाक चाही, नहि तँ हम सभ मिलिकऽ अहाँ सबहक विरुद्ध बहुत आगाँ तक लड़ाइ लड़ब। अहाँ सभकेँ जहल भेजबा देब।”

दोकानदारक घरमे जेतेक दारू रहै, सभकेँ फोरि-भाँगि कऽ माटिक निच्चाँ गाड़ि देल गेल। गाममे अलगे माहौल बनि गेल। हिनका सभक उग्र रूप देख दारू पीबएबला सभकेँ सेहो सीटी-पीटी गुम्म भऽ गेलइ।

जीविका दीदीक नाम सुलोचना छिऐन। ओ बड़ हिम्मतवाली स्त्री छैथ। सभ कियो अइ काजकेँ सम्पन्न कए गामक सामुदायिक भवनपर बैसली। पंजीपर नशामुक्ति अभियान’क नामसँ एकटा समूह बनौली। अइमे गामक लगभग सभ परिवारसँ एक-एकटा महिला

सदस्या बनली। आओर सर्वसम्मतिसँ ई निर्णय लेल गेल जे आइसँ गामक जइ परिवारक जे बेकती दारू पीने नजैर औता तिनका केश कटा, कारीख-चून लगा गाममे घुमाओल जाएत। सभ कियो अइ प्रस्तावकेँ समर्थन केलीह आ अपना संकल्पपर अडिग रहली। आस्ते-आस्ते ऐ तरहेँ गाम नशामुक्त भऽ गेल।

ऐगला बैसारमे समूहक सभ सदस्यक द्वारा ई निर्णय लेल गेल जे राजू सरजीक मेहनत आ अथक प्रयाससँ गाम नशामुक्त भेल अछि, तँए समूहक तरफसँ हिनका सम्मानित कएल जाए।

राजू सर लग ई खबर गेल तँ ओ अइ सम्मानक आनाकानी करए लगला। मुदा सबहक जोरपर हुनका तैयार हुअ पड़लैन।

ऐगला रवि दिन ओही जगहपर जैठाम राजू सर पहिल बैसार केने छला, हुनका पुष्प मालाक संग पाँचो टुक कपड़ासँ सम्मानित कएल गेलैन। अइ कार्यक्रममे गामक अधिकाधिक लोक आओर छात्र-छात्रा सभ उपस्थित रहैथ। राजू सरजीक मनमे उठलैन, वास्तवमे नीक काजक परिणाम नीक होइ छइ। ❑

बहिनक बिआह

सुजीत एकटा होनहार युवक। नमगर-छड़गर गोर रत-रत, एकहरा शरीर। नेनपनेसँ बड़ चंसगर। पढ़ै-लिखैमे अपना किलासमे कोनो चटियासँ कमजोर नहि। किलासमे सभ साल प्रथम अबैत छल। जखन ओ आठम वर्गमे पढ़ैत रहए, तखने पिताजीक देहान्त भऽ गेलइ। सुजीतक माँ कोनो तरहेँ सुजीतकेँ मैट्रिक करा देलकै लेकिन आगू पढ़बाक कोनो आशा नहि रहि गेलइ। जँ घरक स्थिति नीक रहितै आ आगू पढ़बाक अवसरि भेटितै तँ ओ बहुत आगू बढ़ि सकैत छल।

सुजीत पाँच भाए-बहिनमे सभसँ छोट। दू बहिनक बिआह पिताजीक जिवितेमे भऽ गेल रहै आ तेसर बहिनक बिआह जइ साल ई मैट्रिकमे पढ़ैत रहए तही साल भेल रहइ। एहि बिआहमे बहिन-बहिनोइक नीक योगदान रहलइ। माए किछु करजा-बरजा लऽ तेसर बेटीक बिआहसँ मुक्त भेली।

आब सुजीतपर परिवारक भार आबि गेल छेलइ। तीन बेकतीक परिवार। जमीन-जत्था नहियेँ सन। माए केकरो खेत-पथारमे बोइनो-बुता करितै से गाममे आब खेतियो-पथारी चौपट्टे सन भऽ गेल रहइ। सुजीत जेठ बहिनोइक संग नोकरी करए दिल्ली निकैल गेल। ओ अपना जीवनमे कहियो शहरक मुँह नहि देखने छल। ट्रेनक सेहो ई पहिल अनुभव छेलइ। गाड़ीमे बैसल-बैसल सुजीतक आँखिक आगू कखनो माइक चेहरा तँ कखनो बहिनक चेहरा आबि जाइ। थोड़ेकालक बाद कुहेस फाटए लगइ तँ कखनो भविष्यक चिन्ता सताबए लगइ।

सोचैत-सोचैत सुजीतकेँ झपकी आबि गेलइ। ट्रेनमे बैसले-बैसले नीन मारलक। भक खुजलै। फेर चिन्तामे सुजीत डुमि गेल। मनमे उठलै, बेसी पढ़ल-लिखल छी नहि। आ ने बेसी उमेर भेल अछि जे नीक काजो पकड़ाएत। जन-मजदूरमे खटए पड़त। कहियो मेहनतबला काज केलौं नहि। बुझाइत अछि कोनो होटले-तोटलेमे कप-प्लेट धुअ-माँजए पड़त।

खाएर जे करए पड़त से करब। दोसर कोनो रस्तो तँ नहियेँ अछि। जँ नीक काज भेट जाएत तँ जी-जाँतिकऽ पाँच बरख करब। तहीमे करजो सठि जाएत। माए-बहिनकेँ महिने-महिने खर्चा पठा देल करबै। बाँकी रूपैआ जमा करब ताहीसँ छोटकी बहिनक बिआह करब। तेकर बाद अपन दुनियाँ लेल सोचल जेतइ।

दिल्लीमे किछुए दिनक बाद एकटा कोठीमे सुजीतकेँ काज भेटि गेलइ। कोठीएमे खाना-पीना आ रहनाइयोक बेवस्था रहइ। खूब जतनसँ सुजीत काज करए लागल। काज तँ खूब करए पड़ैत रहइ। साँझ तक खटैत-खटैत चूर-चूर भऽ जाइ छल, मुदा बेचारा करितए की। एतेक कम उमेरमे परिवारक भार एकटा होशियारे बच्चा ने उठा सकैत अछि। सुजीतकेँ काजमे मन लागि गेलइ। कोठीमे बन्हौटा भोजन भेटै छेलइ। शरीर सेहो नीक होमए लगलै। छबे मासमे सुजीतक दोहारा देह भऽ गेने सुन्दरतामे चारि चान लागि गेलइ।

कोठीमे झाड़ू-पोछा लगेबाक लेल एकटा लड़की अबैत छेलइ। ओकर नाओं रूणा रहइ। उमेर सोलह-सतरह बरख होइत हेतइ। गेहुमा रंग आकर्षक चेहरा। आर मुस्कान तँ एहन जे कियो मोहित भऽ सकैत छल। सबहक नजैरसँ बँचिकऽ रूणा कखनो काल सुजीतकेँ देखि अपन मधुर मुस्कान छोडए लागल। ओकर चालि-चलैनसँ किछु दिनक बाद सुजीतकेँ बुझाए लगलै जे ई छौड़ी हमरा चाहि रहल अछि। मुदा हमरा अखन प्रेम-प्यारक चक्करमे नहि फँसवाक अछि।

फेर बहिनोइक कहलाहा बात मोन पड़लै जे आबैत काल ट्रेनमे कहने रहथिन-

“हे शहरक लड़की सभसँ बँचिकऽ रहब। एतए लड़की-लड़काक बीच खुलेआम प्यार चलै छइ। जेकरा जेहेन आमदनी रहै छै तेकरा तइ हिसाबसँ कइएक टा यार-यारी भेट जाइ छै। किछु लड़की बिहारी लड़काकेँ अपना जालमे फँसा कऽ बिआह करबाक लेल मजबूर कऽ दइ छइ। ओ प्रेमक तेहेन ताना-बाना बुनैत अछि जे बिआहसँ पहिने अपना प्रेमीकेँ गॉड आ बिआहक बाद डॉग बुझए लगै छइ।”

ई बात सोचैत-सोचैत सुजीतकेँ अप्पन माए आ बहिनक चेहरा मोन पड़ए लगलै। सोचलक हम जे एतए प्रेम-प्यारक चक्करमे पड़ब तँ हमर माए-बहिनक की हालत होएत।

एकर किछु दिनक बाद एक दिन फुटेकमे रूणा सुजीतसँ मोबाइल नम्बर मंगलकै। मुदा सुजीत अप्पन नम्बर नहि देलकै। रूणा बाजल-

“दो न यार, क्या हो जाएगा?”

“क्या करेगी मेरा नम्बर लेकर?”

“कभी-कभार बात करेंगे।”

“नहीं, मैं किसी लड़की से बात नहीं करता। बात ही करना है तो तीन साल बाद करना।”

रूणा अप्पन चौअनियाँ मुस्की दैत बाजल-

“ठीक है, मैं इंतजार करूँगी।”

आब तहियासँ बेर-बेर सुजीतकेँ रूणाक चेहरा याद आबए लगलै। ओकर मोबाइल नम्बर मांगबाक तरीका, सुन्दर आवाज आ मुस्की हँसी ‘ठीक है मैं तीन साल इंतजार करूँगी’ ई सभकिछु

सिनेमाक दृश्य जकाँ मनमे अबै आ चलि जाइ।

सुजीत तँ रहए युवे ने...। मन कने आगू-पाछू हुअ लगलै मुदा कोनो तरहेँ मनकेँ मनौलक। सोचलक जे एहि साल तँ नहि होएत मुदा ऐगला साल तक पहिने बहिनक बिआह कऽ लेब पछाइत किछु सोचब।

देखिते-देखिते दिल्लीमे सुजीतकेँ साल भरि समय केना बितलै से पतो ने चललै। माए फोन केलकै-

“बौआ, छठिमे छुट्टी लऽ कऽ गाम जरूर अबिहह।”

सुजीत जवाब देलकै-

“नइ माँ, रेखा ले लड़का देखही आ ऐगला साल तक रेखाक बिआह कऽ ले। एक्के बेर हम बिआहेमे एबौ।”

सुजीतक माएकेँ बेटाकेँ देखबाक इच्छा चरमपर चढ़ि गेल रहैन। मुदा बेचारी की कऽ सकैत छल। घरक प्रति बेटाक चिन्ता देखि माइक मन विह्वल भऽ गेलइ। आँखिसँ टप-टप नोर खसए लगलै। अनायास मुहसँ निकैल गेलै-

“हे भगवान! सबहक बेटा एहने होइ।”

सुजीत खूब धूम-धामसँ रेखाक बिआह करबाक सपना संजोने छल। किएक तँ बहिनकेँ ई कखनो ने बुझि पड़ए जे बाबू नहि छैथ, हम बपटुग्गर छी। हम कोनो चीजक कमी नहि रहए देबइ।

रेखाक बिआहक लेल माए तत्पर भेली। कइयेक जगहसँ देखा-सुनी हुअ लगलै। होइत-हवाइत ऐगला साल तक घनश्यामपुर गामक राकेशक संग रेखाक बिआह ठीक भेल। दहेजमे दू लाख रूपैआ नगद, दू भरि सोन आ एकटा अपाची गाड़ी गछल गेलइ।

सुजीतकेँ अपना माएसँ फोनपर सदैत सम्पर्क बनल रहैत छल।

फोनेसँ बहिनक बिआहक सभ ओरियान गामपर करबा लेने छल। कपड़ा-लत्ता, गहना-गुरिया दिल्लीएमे कीनि लेलक। सुजीतक मालिक-मलिकानि सुजीतकेँ खूब मानै छेलइ। बियौहती बरक वास्ते सोनाक चेन आ औंठी मालिक कीनि देलके। अबैत काल मलिकाइन एक लाख रूपैआ नगद देलकै आ कहलकै-

"नीकसँ बहिनक बिआह करिकऽ आ तँ तोहर तनखा आरो बढ़ा देबउ।"

मालिक बिहार सम्पर्क क्रान्तिमे दरभंगा धरिक टिकट एक महिना पहिनहि कटा देने रहइ। सुजीत खूब खुशी-खुशी गाम विदा भेल। दूटा दोस्त दिल्ली स्टेशनपर गाड़ीमे चढ़ेबाक लेल आएल रहइ। बहिनोइ आओर आओर बाँकी दोस्त कहलकै-

"अहाँ ताबे चलू हमसभ बिआहक दिन लगिचाकऽ आएब।"

सुजीत गाड़ीमे बहिनक बिआहसँ सम्बन्धित केतेको तरहक बात सोचि रहल छल। चोरी-चपाटीक डरसँ गाड़ीमे कखनो सुतबो नहि कएल। माए-बहिनसँ रातिमे केतेको बेर फोनसँ गप केलक। मोबाइलपर गेम खेलाइत-खेलाइत केना राति बीति गेलै से पतो ने चललै। समयसँ सकुशल दरभंगा स्टेशनपर उतरल। सुजीतकेँ बुझा रहल छेलै जे दरभंगा आबि गेलौं तँ घर आबि गेलौं। सामान बेसी रहै तँए कुलीक मदैतसँ सभ चीज लऽ कऽ स्टेशनसँ बाहर भेल।

ऑटोसँ सभ सामान लऽ बस पकड़ैले दिलीमोड़ लग एन.एच. 57क पुलक निच्चाँ ऑटोबला उतारि देलकै। खुदरा करेबाक उद्देश्यसँ बगलक एकटा दोकानपर एकटा स्प्राइट बोतल किनलक। पान खेलक आ ओही दोकानदार लग ठाढ़ एकटा अनठिया सुजीतसँ पुछलक-

"सर, अहाँ केतए जाएब?

ओ कहलकै- "केतए केर गाड़ी चाही अहाँकेँ?"

सुजीत बाजल-

“हमरा मधुबनी जेबाक अछि।”

ओ कहलकै-

“अहाँ ओइ गेट लग चलि जाउ, ओतहि बस भेट जाएत।”

सुजीत लग एकटा बड़का ट्राली बैग, एकटा बैग हाथमे आ एकटा बैग पीठपर टांगल रहइ। सुजीतक सुन्दर शरीर नीक परिवारक सदस्यक सूचना दऽ रहल छेलै जे शहरसँ कमाकऽ गाम जा रहल अछि।

सुजीत सभ सामान लऽ बस पड़ावक मुहाँनपर पहुँचल आ अखियासए लगल। जे बस एहि रस्ते निकलत। एतए भेटत तँ भेटत वा नहि भेटत तँ पड़ावक भीतर तँ भेटबे करत। सुजीत ई सभ सोचिये रहल छल कि दोसर अनठिया बेकती आबि कऽ पुछलकै-

“सर, कहाँ जाएब?”

सुजीत झट-दे बाजल-

“बाबूबरही।”

“बाबूबरही! बाबूएबरही तँ हमरो घर अछि। बाबूबरहीमे केतए?”

सुजीत अप्पन गामक नाओं बाजल-

“दुदाही।”

“अच्छा, रामेश्वर बाबूकेँ तँ चिन्हते हेबैन। हुनका परिवारसँ हमरा दोस्तियारे चलैत अछि।”

सुजीतकेँ खुशी भेलै जे अपना तरफ-के एकटा बेकती भेट गेला। उत्सुकतासँ सुजीत पुछलक-

“अहाँ, इमहर केतए घुमि रहल छी?”

“धूर्र! की कहूँ। हमरा भौजीकेँ डिलेवरी छेलैन्ह। हुनके लऽ कऽ डाक्टर लग आएल रही। हुनका पाँच दिनक वास्ते भर्ती हुअ पड़लैन आब आपस गाम जा रहल छी।”

“बसेसँ जाएब किने?”

“नहि, हम स्कार्पियो लऽ कऽ आएल छी। हे देखै छिऐ एन.एच.पर लागल अछि। खालीए जा रहल छेलौं तँ मनमे भेल जे देखिऐ अपना तरफ-के कियो हेता तँ नेने जेबैन। चलू अहाँ चलब तँ।”

सुजीत सोचलक संयोग नीक अछि। गाम लगहक गाड़ी भेट रहल अछि। किएक ने अहीसँ चलल जाए। दुनू गोरे मिलि कऽ सामान सभ गाड़ीक डिक्कीमे रखलक। गाड़ीमे एकटा महिला आ एकटा पुरुष सेहो बैसल रहइ। सुजीत गाड़ीमे बैसल। माएकेँ फोन लगा सभ बात कहैत बाजल जे एक-डेढ़ घन्टामे पहुँच जेबौ।

माए खुशी-खुशी बेटाक लेल नीक-नीक तीमन-तरकारी आ तरूआ-बघरूआक ओरियान करए लागल।

एन.एच.57 पर गाड़ी आस्ते-आस्ते चलि रहल छल। किछु किलोमीटर आगाँ चलिकऽ गाड़ी एकटा दोकानपर रूकल। ड्राइवरकेँ बगलमे बैसल बेकती एकटा स्प्राइटक बोतल निकालक आ चलती गाड़ीमे सभकियो पीलक। सुजीतसँ सेहो स्प्राइट पीबाक लेल आग्रह कएल गेल। ओ पीबैसँ आनाकानी करए लगल। लेकिन बेसी आग्रह केलाक बाद सुजीत अनजान, अल्पकालीन मित्रक प्रेमपूर्ण सोभाव आओर आग्रहकेँ ठुकरा नहि सकल।

ठीक एक घन्टाक बाद सोशल मीडियापर सुजीतक फोटो वायरल भेल। सकरीक आसपासमे एन.एच.सँ निच्चाँ एकटा छोट-छीन सड़कक कातमे सुजीतक देह लहुलहुआन भेल बेहोसीक हालतमे पड़ल छलइ। डरसँ देहमे कियो भिड़बे ने करइ। पुलिस आबिकऽ

अस्पतालमे भर्ती करा देलकै।

सोशल मिडिया पर गामक लोक आओर सम्बन्धी सभ चीन्हि गेल जे ई दुदाही गामक सुजीत छी। सभ चिन्तित भऽ गेल। सुजीतक माए-बहिनकेँ जखन पता चललै तँ ई सभ हाकरोस करए लगली। माए उठा-उठा देह पटकए लगली। दाँती-पर-दाँती लागए लगलै आ आँखिक आगू चौन्ह आबए लगलै। लोक सभ बोल-भरोस दैत रहइ।

तैबीच गामक किछु युवक चारि चक्का गाड़ीसँ सकरी अस्पताल विदा भेल। सुजीतक माए नहि मानलखिन। ओहो गाड़ीमे बैस गेली। अस्पताल पहुँच बेटाक हालत देखि माए बदहवास भऽ गेली।

सुजीत जखन होशमे आएल तँ माएकेँ हाथ पकैड़ कऽ कहए लगल-

“माँ, रेखाक बिआह...। केना हेतइ...। हे भगवान...!” ❑

सामाजक पिशांच

मानसी कुहरैत रहए। बेंतक मारिसँ देह लाल भऽ गेल रहइ। चोटक चेन्ह बेसी पिट्ठी, पाँजर आ कान्हपर रहइ।

माए बेचारी बेटीक ई दुर्दशा देखि कानए लगली। थोड़ेकालक बाद माइक मुहसँ दुर्भाखा निकलए लगलैन। बेटी चुप केलकैन। माए चुप तँ भेली मुदा दुनू गोरेक दिलमे तूफान चलि रहल छेलैन। बुझा रहल छेलैन जे ई तूफान समाजमे कतेको अन्यायी, अत्याचारी, पापी आओर कुकर्मीकेँ मुहेँ भरे गिरौतइ। लेकिन समय वलवान होइत अछि किने। एकरा संग तँ सभकेँ चलैये पड़ैत अछि तैठाम ई बेचारी अवला...।

मानसी अपना माए-बाबूक असगरे सन्तान। केतेको धाइम, ओझा, गुनी, वैद आ कौबला-पातीक पछाइत ई एहि दुनियाँमे आएल छेली, से माए-बाबूक बड़ दुलारू। बड़ चंचल। बातुनी सेहो कम नहि। पढ़ै-लिखैमे सेहो चंसगर। मानसी अपनहि गामक स्कूलसँ आठमी पास केलीह। गामसँ तीन किलोमीटर दूर उच्च विद्यालय रहै, जेतए ओ नवमीमे नाओं लिखौली। रोज साइकिलसँ स्कूल जाए लगली। गामक छात्र-छात्रा आओर पास-पड़ोस गामक छात्र-छात्रा संगहि स्कूल जाइत छल। खास कऽ स्कूलक समयमे सड़कपर छात्र-छात्रक साइकिलक होड़ लागल रहैत छेलइ। जहियासँ मुख्यमंत्री साइकिल योजना चललै तहियासँ माध्यमिक शिक्षा किछु गति पकड़लक। मुदा छात्र-छात्रामे उच्छृंखलता सेहो बढ़ि गेल।

मानसी देखैमे सुन्नैर। श्याम वर्ण, सुगठित स्वस्थ शरीर। शरीरक सभ अंग जेना तरासल होइ।

मानसीकेँ अपनहि क्लासक किछु लड़का आगू-पाछू करए लगलै।

जखन मानसी दशमी वर्गमे गेली तखन एक दिन सड़कपर साइकिलक होड़मे पड़ोसी गामक एकटा छात्र—मनीष—क साइकिलसँ मानसीक साइकिल टकरा गेलइ। मानसी सड़कक कातमे जोड़सँ खसि पड़ली। खसल तँ मनीषो मुदा मनीषकेँ कम चोट लगलै, मुदा मानसीकेँ बाम हाथक हड्डी टुटि गेलइ। मानसी जोर-जोरसँ कानए लगली। मनीषकेँ तँ डरसँ हतास उड़ि गेलइ। सभ संगी-साथी मानसीकेँ उठा-पुठा कऽ घरपर अनलक। घरक लोक मानसीकेँ हड्डीबला डॉक्टर लग लऽ गेलैन। हाथमे प्लास्टर भेलइ। इलाजक सभ खर्च मनीषक बाबूजी देलखिन। मनीष सेहो संगहि रहइ।

हाथक प्लास्टर भेलाक बाद मानसी चिन्तित भऽ गेली। मन खसि पड़लैन। उदास रहए लगली। मनीषो तँ डेराएल रहबे करए मुदा मानसीकेँ एहेन स्थिति देखि भावुक भऽ गेल। ओ दबल आवाजमे एक बेर मानसीकेँ कहलक-

“मानसी, हेऽ हम जानिकऽ नइ मारलियौ, धोखासँ लागि गेलउ। तोरा बड़ कष्ट भऽ गेलौ। हे हमरा माफ कऽ दिहेँ।”

मनीष मानसी दिस अपराधी जकाँ डेराएल ताकि रहल छल। एतेक बाजि मनीष अपन मुँह घुमा लेलक। मानसी बुझि गेल जे मनीषकेँ आँखिमे नोर ढबढबा गेल छै।

मानसी बाजल-

“आब छोड़ ने, जे होनी छेलै से भेल। आब चिन्ता-फिकिर केलासँ की हेतइ। आगू जे हेबाक हेतै से हएत।”

मानसी एहनो स्थितिमे अपन पढ़ाइ-लिखाइ करैत रहली। आगामी फरवरी मासमे दसमीक बोर्ड परीक्षा भेलइ। परिणाम निकललै तँ दुनू गोरेकेँ प्रथम स्थान आएल छेलइ।

मानसी खुश छेली। ओ सोचि रहल छेली जे विकटो परिस्थितिमे आदमीकेँ मनोबल ऊँचा रखबाक चाही आओर अपना कर्ममे लागल रहबाक चाही।

दशमीक पछाइत दुनू गोरे एकहि महाविद्यालयमे नाओं लिखौलक। महाविद्यालय गामक लगीचेमे छइ। मनीष गणित आओर विज्ञान विषय चुनलक आ मानसी कला संकायसँ अप्पन अध्ययन करए लागल। बादमे मनीष इंजीनियरिंगक तैयारक उद्देश्यसँ कोटा चलि गेल।

मानसीक घरक आर्थिक स्थिति नीक नहि रहइ। बाबूजी पहिले कलकत्तामे कमाइत रहथिन मुदा बिमरियाह शरीर रहने आब ओ गामहिमे रहए लगला अछि।

मानसी अपन तैयारीक संग गामक चटिया सभकेँ ट्यूशन पढ़ाबए लगली। आस्ते-आस्ते ट्यूशन खूब जमि गेलइ। गामक एकहुटा परिवार ओहन नहि रहलै जइ परिवारक बच्चा मानसी लग ट्यूशन पढ़ैले नइ अबैत हुअए। मानसी खासकऽ लड़की सभक शिक्षापर बेसी धियान दइ छेली।

पढ़बैत-पढ़बैत मानसीक आत्मविश्वास बढ़ए लगलैन। आब ओ अपन भावी जीवनक कल्पना सेहो करए लगली। पढ़ि-लिखकऽ सरकारी नोकरी प्राप्त करबाक सपना सेहो देखए लगली मानसी।

देखिते-देखिते मानसी बारहमी परीक्षा सेहो फस्ट डिविजनसँ पास कऽ गेली।

आब मानसी बी.ए.मे नाओं लिखौली। प्रतिष्ठामे इतिहास विषय

चुनलैन आ संगमे राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र तथा हिन्दी-मैथिली।

आब मानसी माएकेँ बेटीक बिआहक चिन्ता सताबए लगलैन। माए सोचए लगली जे पढ़ैमे एकरा एतेक मन लगै छै। हम एकरासँ बेसी पढ़ल-लिखल बर केतए खोजब? एतेक दहेज केतएसँ आनब?

मानसी अप्पन माएकेँ चिन्तित देखि बजली-

“माँ, तूँ हमर बिआहक चिन्ता एतेक किए करैत रहै छेँ। हम पढ़ि-लिखि लेबौ तँ योग्य लड़का अपने हमरा खोजि लेत। आ बिना दहेजक हमर बिआह हएत।”

माएकेँ अपना बेटीपर नीक भरोस छेलैन तँए ओ निश्चिन्त भऽ गेली।

मानसी गाममे ट्यूशन पढ़बैत बी.ए.क सभ विषयक गहन अध्ययन करए लगली। महाविद्यालय जेबा-एबाक क्रममे किछु प्रोफेसरसँ नीक जान-पहिचान भऽ गेलै जे नोट सभ बनबैमे मदद करैत रहलखिन। जहन बी.ए.क तेसर वर्षमे मानसी पढ़ै छेली तँ दुर्गापूजाक छुट्टीमे मनीष गाम आएल। गाममे दुर्गापूजा खूब धूम-धामसँ मनौल जाइत रहइ। भरि मेलामे मनीष मौकाक ताकमे रहए जे कखनो मनासीसँ दुटप्पी बात भऽ जाए। मुदा मेलामे मौका नहि मिललै। मूर्तिक भसान दिन अचानक दुनू गोरेकेँ भेँट भऽ गेलइ।

मनीष बजला-

“की मानसी, ठीक छी किने? पढ़ाइ-लिखाइ केना की चलि रहल अछि?”

“ठीके चलि रहल अछि। ऐबेर बी.ए. थर्ड पार्टमे छी।”

“एक वर्ष बाद हमरा इंजीनियरिंग फैनल भऽ जाएत। बेसी उम्मीद हमर केम्पस सेलेक्शन हएत। अहाँ बी.ए. पास करि लिअ। बिआहक लेल हड़बड़ाएब नहि। जँ अहाँ स्वीकार करी तँ हम अहींक

संग बिआह करब। कने अहाँ अप्पन मो. नम्बर हमरा दऽ दिअ।”

मानसी लजा गेली। एकदम गुम भऽ गेली। डर हुअ लगलैन। बेसी गप करब तँ लोक की सोचत। ओ जल्दी-जल्दी अपन मोबाइल नम्बर मनीषकेँ दऽ ओतएसँ सहैट गेली। ओतए बेसी देर रूकली नहि, सखी सभक संग लगले गाम आबि गेली।

ओइ दिन मानसीकेँ कोनो काजमे मन नहि लगैन। मनमे खुशी होनि कि गम से मानसी अपनो नहि बुझि रहल छेली। सोचए लगली। मनीषक गाम हमरा गामसँ दू किलोमीटरक दूरीपर अछि। पंचायत एक आओर जातियो एकहि अछि से बिआहमे कोनो तरहक बाधा तँ नहियेँ हएत। मुदा मनीषक परिवार तँ हमरा परिवारसँ बेसी सम्पन्न छै। हुनकर माता-पिता तैयार हेतैन की नहि। दहेज-तहेज तँ किछु भेटतैन नहि। एहेन नहि हुअए जे बादमे हम ऊँच-नीचक खदहामे गिर पड़ी। खाएर ई काज तँ मनीषक छिऐन। अपना घरक बात ओ फरियाबैथ। बेकारे हम एतेक चिन्तन कए रहल छी। देखिऐ तँ आगू की होइ छइ।

तहियासँ कहियो काल मनीष मानसीकेँ फोनसँ गप हुअ लगलैन। मानसी मनीषक रूप-बेवहारसँ मनीषक संग बिआहक लेल तैयार भऽ गेली।

एमहर मानसीकेँ बी.ए. फाइनल भऽ गेलैन आओर मनीष सेहो देशक नामी कम्पनीमे काज करए लगला।

नौकरीसँ अवकाश भेटलाक बाद मनीष गाम एला। गाममे माता-पिता मनीषक बिआहक चर्चा केतेको जगह छेड़ देने रहथिन। नीक-नीक परिवारसँ कथा आबि रहल छेलइ। एक दिन मौका पाबि मनीष अपना माएकेँ अप्पन बिआहक सम्बन्धमे बतौलखिन। माए-बेटामे अगाध प्रेम होइते छै किने से माए मानि गेलखिन मुदा पिता मानबाक लेल तैयार नहि।

पिताक कथन रहैन जे हम अपने फौजसँ अवकाश प्राप्त केने छी। बेटा इंजीनियर, घर-दुआर, जमीन-जायदादसँ सम्पन्न छी। एतेक नजदीक आओर एहेन नि:सहाय परिवारमे बेटाक बिआह..! नहि, ई कदापि नहि भऽ सकैत अछि।

धिया-पुताक जिद्दक आगू माए-बापकेँ हारि तँ मानैये पड़ै छैन, चाहे बादमे परिणाम जे होउ। अन्तमे बाबूजी सेहो मानि गेला।

ई सभ बात मानसी माएकेँ बतौली। माँ आओर बाबू दुनू गोरेकेँ खूब खुशी भेलैन। समाजकेँ देखेबाक लेल दुनू तरफसँ घरदेखी भेल। आओर ऐगले लगनमे मानसीक बिआह मनीषक संग धूम-धामसँ सम्पन्न भेल।

जेना सभ घरमे होइत अछि तहिना मानसी जखन बिआहिकऽ अप्पन सासुर एली तँ हिनको संग भेलैन। सासुरक सम्पन्नता देखि मानसी खुश छेली। मनीष मास दिनक बाद ड्यूटीपर चलि गेला। किछु दिनक पछाइत मानसी नैहर आबि गेली।

मानसी सासुरक भरल-पुरल घर हँसी-खुशी माहौल, सासु-ससुरक सुन्नर सन बेवहार आओर पतिक प्रेमपूर्ण निश्छल सोभावसँ प्रसन्न छेली।

ओ अपना माए-बाबूकेँ विश्वास दिआ देलैन जे हमरा बड़ नीक घर-बर भेटल। ओ अपना सखी-बहिनपाक बीच सेहो अपन सुखितगर घर आ सुखमय नवदाम्पत्य जीवनक चर्चा करैत नहि थाकै देली।

सौन-भादोक पछाइत फेर मानसी सासुर गेली। दुर्गापूजाक छुट्टीमे मनीष सेहो गाम एला। माए-बाबू पूजा-पाठमे मगन रहैथ। मानसी हिनका सभक सेवामे सदिखन तत्पर रहै छेली। दशमीक किछु

दिनक पछाइत मनीष फेर आपस चलि गेला। ई छुट्टी केना बीति गेलैन से मनीष किछु अनुभव नहि कऽ सकला।

मनीषकेँ एकटा छोट बहिन सेहो छैन। ओकर नाओं छिऐ-सुधा। सुधाक चालि-बेवहार ओकर नामक ठीक उनटा छइ। ओ थोड़ेक घमण्डी सेहो अछि। कखनो-कताल हँसी-ठठ्ठामे भौजीकेँ निच्चाँ देखेबाक प्रयास करैत रहैत अछि। सुधा ई देखाबए चाहैत अछि जे हमर माए-बाप बड़ धनीक अछि आ अहाँ गरीब घरसँ आएल छी। तँए, भैयाकेँ किछुओ दहेज नहि भेटलैन।

मानसी पहिने एहि सभ बातकेँ नजरअन्दाज कऽ दइ छल। मुदा धीरे-धीरे बात बढ़ि रहल छेलइ। आ मानसीकेँ बुझि पड़लैन जे आब हमरा स्वाभिमानकेँ ठेँस पहुँच रहल अछि।

सासु-ससुरक टोन सेहो गड़बड़ा रहल छेलैन। ओही बीच मनीषक पीसी आएल रहथिन। मानसी अपना कानसँ सुनली जे हुनकर सासु अपना ननैदकेँ कहि रहल छेलखिन-

“दूर्र! तेहेन जरलाहा घरक छिऐ जे किछु नइ देलकै। अही ठाँ लोकक घरमे देखै छिऐ जे बेटा बिआहमे लाखक-लाख रूपैआ, दुचकिया, चरिचकिया, टी.बी., फ्रिज, आलमारी, वाशिंग मशीन, रंग-बिरंगक फर्नीचर नहि जानि की-की ने दइ छै। चीज-बौससँ घर भरि दइ छइ। मुदा ई तँ हमरा सबहक सबटा सख-मनोरथ डाहि देलक। सभसँ एकर माए केहेन छै यै दीदी...। बेटी बिआह ले तँ लोक कइएक साल पहिनेसँ चीज-बौस कीनैत रहैत अछि। ओकरा कोनो सखो नहि लगलै।”

पीसी बजली-

“तँ ऐमे कनियाँक कोन दोख। अहाँक बेटा जेहेन घरमे बिआह करत तेहने ने चीजो-बौस भेटत। आब ई सभ गप नै बाजू। कनिया

सूनत तँ तकलीफ हेतइ।”

ऐगला दिन पीसी अपना गाम चलि गेली। मानसीकेँ बुझैमे भांगठ नहि रहलैन जे हिनका सभकेँ हाथी जकाँ दू तरहक दाँत छैन, खाइबला अलग आ देखबैबला अलग।

आस्ते-आस्ते घरमे कुफ्फड़ शुरू भऽ गेल। बात-बातमे मानसीकेँ उलाहना सुनए पड़ैत छल। फोनसँ मनीषकेँ सभ बात नहि बतौल होइत रहइ। किएक तँ दुराचारी ननैद कौखन संगे नहि छोड़ैत छेलइ। मुदा हुनक माए-बाबू छोट-छीन बातकेँ बतंगर बना कऽ बेटाकेँ कहैत छेलखिन। मानसीपर रोज-रोज इल्जाम लगैत छल। आइ रोटी नहि फुलल अछि, आइ तरकारी नुनगर, अजुका तरकारीमे नोने नहि। आइ भाते गील भऽ गेल। तँ आइ आठ बजे तक सुतले छल। इत्यादि-इत्यादि। माने नाना प्रकारक शिकायत मानसीक मनीष लग हुअ लगल।

ऐ तरहक तनावपूर्ण वातावरणसँ मानसीक मन बेचैन हुअ लगलैन। मौका पाबि जखन मनीषकेँ मानसीसँ गप होइत रहै तँ मनीष कहैत रहथिन-

“माए-बाबूक बातपर अहाँ धियान नहि दियौ जे बजै छथिन से बाजए दियौन।”

“लेकिन जेकरा झेलए पड़ैत अछि सएह बुझैत अछि। दिलक हाल दोसर के बुझि सकैत अछि।”

मानसी परेशान रहए लगली। अपना माँ-बाबूकेँ अपन दुखड़ा नहि कहैत छेली किएक तँ हुनका सभकेँ तकलीफ हेतैन। असगरे सासु-ससुर आ ननैदिक ताना सुनि मानसी वर्दाश्त करैत रहली। रोज-क-रोज घरमे किच-किच होइत रहै छेलइ।

ओमहर मनीष शहरमे घरक वातावरणसँ चिन्तित रहै छला।

हुनक माए-बाबू लोभी-लालची आ कड़क मिजाजी छेलैन से ओ नीकसँ जनैत छला। हुनका लेल दूध-माछ दुनू बैरी भऽ गेल छेलैन। सभसँ पैघ समस्या छेलै जे मानसीसँ नीकसँ बात नहि भऽ रहल छेलैन।

सोचला जे गाम जाएब तँ सभकेँ समझा-बुझा देबइ। सभ ठीक भऽ जाएत। आ नहि तँ मानसीकेँ किछु दिनक लेल बाहरे लऽ आनब। मुदा गामोमे लोक की कहत जे बिआह भेलै आ कनियाँकेँ लऽ कऽ बाहरे रहए लगलै। खाएर जे हेतै से गाम गेलाक बाद बुझल जेतइ।

एक दिन घरक वातावरण विषाक्त भऽ गेल रहै, किएक तँ मनीषकेँ माए-बाबू मानसीकेँ गरियाबए लगलैन। मानसीकेँ बुझेलैन जे गन्दा नालीक गन्हाएल पानि आब हमरा गरदैनिक ऊपरसँ बहि रहल अछि, हुनका वर्दाश्त नहि भेलैन। ओ जवाब दैत बजली-

“आइ धरि हम अहाँ सभक अत्याचार बड़ सहि लेलौं। जेतए तक सम्भव भेल हम अहाँ सभक सम्मान केलौं मुदा आब हम चुप नहि रहि सकै छी।”

कने ठमैक कऽ मानसी पुन बजली-

“अहाँ सभ दहेज लेल हमरा जे एतेक प्रताड़ित करै छी से ई किएक नहि बुझै छी जे दहेजप्रथा समाजक अभिशाप छिऐ। दहेज लेब आ देब दुनू पाप आओर कलंक छिऐक।”

मानसी बजिते छेली कि ससुर आओर तैश मे आबि गेला आ बाजए लगला-

“अच्छा तँ ई हमरा सभकेँ उपदेश देबाक लेल एली हेन। एहि घरमे मुँह लागल बजनाइ केहेन होइ छै से अखने हम हिनका सिखा दइ छिऐन।”

लगमे एकटा बेंत भेट गेलैन आओर मानसीक देहपर चलाबए

लगला। सासु आओर ननैद बीच-बचावमे एलखिन मुदा ऊपरझपकीए। मानसीकेँ पिटाइ लागि चुकल छेलैन। हुनका दाँती-पर-दाँती लगैत आँखि चोन्हरा गेल छेलैन। किछु समझमे नहि आबि रहल छेलैन जे ई की भऽ गेल। ओ राति भरि अपना कमरामे कुहरैत रहली। ननैदकेँ ओइ दिन लगमे नहि सुतए देलखिन। भीतरसँ केबाड़ बन्द कए लेली। ओइ रातिमे मनीषक फोन एलैन मुदा तामसमे ओ नहि उठेली। भोरमे बात करए चाहली तँ मोबाइलक सूइच ऑफ बता रहल छेलैन।

मानसीकेँ ई शंका भऽ गेलैन जे मनीषो अपना माए-बाबूक साजिशमे शामिल छैथ। किएक तँ ओ अखन तक हमरा तरफसँ कोनो मजगूत पक्ष नहि लेला हेन।

परात भेलइ। मानसी अपना घरक केबाड़ नहि खोललली। खिड़की सेहो सभटा बन्न कए लेने रहैथ। चमचिकनी ननैद भिनसरे केबाड़ पीटए लगली। भौजी, घर खोलू ने।

सासु सेहो कइएक बेर आवाज देलखिन। मुदा मानसीपर कोनो असर नहि। ओ ओछाइनपर सकदम भऽ पड़ल रहली। सासु-ससुर बेर-बेर पसीना पोछैत रहैथ। अपनापर खौंझ सेहो उठए लगलैन जे रातिमे हम ई की कऽ लेलौं। दुनू परानीकेँ डरसँ हवाश उड़ए लगलैन। जे मानसी कहीं रातिमे फँसरी तँ ने लगा लेलक।

सुधा कानि-कानि कऽ केबाड़ पीटए लगली-

“भौजी, गोर लगै छी केबाड़ खोलू ने।”

सभकियो थाकि गेला मुदा मानसी केबाड़ नहि खोललकैन। अन्तमे सभकियो कानए लगला। आब केबाड़ काटबाक जोगाड़ हुअ लागल। ताबत धरि अगल-बगलमे सेहो ई बात पसैर गेल। दियादक सेहो किछु लोक जमा भेला। विचार भेल केबाड़ काटैसँ पहिने

पुलिसकेँ जनतब देल जाए।

मानसी बाहरक सभ बात धियानसँ सुनै छेली। पीड़ासँ पीड़ित तँ छेबे केली मुदा मने-मने हँसियो रहल छेली जे सभकेँ तौलो लेलिऐन। मकानक रोशनदान तोड़िकऽ देखबाक योजना जखन बनए लागल कि मानसी धराक-दे केबाड़ खोलि देलखिन।

सभकेँ जान-मे-जान एलै। सासु-ननैद लगमे जा ढाब-ढूब करए लगलैन। मानसी बजली-

“हम गाम जाएब।”

सभकियो बोल-भरोस देबए लगलैन। मौका पाबि माँकेँ फोन केलीह आओर कहलखिन-

“गाड़ी लऽ कऽ केकरो भेज-दे हम गाम एबौ।”

तैबीच मनीषक फोन एलैन मुदा मानसी गप करबाक लेल तैयार नहि भेली। मनीष जखन बहुत व्यग्र भऽ गेला तँ गप केलखिन। मनीष कहलखिन-

“मानसी, हम गाम आबि रहल छी।”

मानसी बजली-

“अहाँ हमर भलाइ चाहैत छी तँ हमरा गाम जाए दिअ।”

किछुकालक बाद पितियौत भाए गाड़ी लऽ कऽ आबि गेलैन। मानसी अपन गहना-गुरिया आ किछु कपड़ा-लत्ता लऽ कऽ माए लग आबि गेली।

मानसी माएकेँ देखिते कानए लगली। माए, बेटीक ई हालत देखि दंग रहि गेली। माए अप्पन बेटीक देह उघारिकऽ देखलक तँ केतेको जगह दू-दू दालि फूटल रेगहा देखलैन। तुरन्त दर्दबला गोली आओर मलहम मंगा बेटीकेँ सेवा-सुश्रुषा करए लगली। बीमार बाबूकेँ

जखन सभ बातक पता चललैन तँ ओ घोर चिन्तामे डुबि गेला।

ऐगला दिन अचानक मानसीसँ मिलबाक लेल मनीष पहुँचला। मनीष अपन गलती स्वीकार करैत माए-बाबूकेँ तरफसँ घटी मानलैन। मुदा मानसियो कम जिद्दी नहि, ओ सासुर जाइसँ साफ इंकार करैत बजली-

“हम अहाँ परिवारक लाइक नहि छी वा अहाँक परिवार हमरा लाइक नहि अछि। अहाँ जाउ। हमर पिंड छोड़ू। हमरा स्वतंत्र छोड़ि दिअ। आब हम जाबे अपन लक्ष्य नहि प्राप्त करब ताबे जीवनक लेल किछु नहि सोचब। हँ, ईहो बुझि लिअ जे हम दोसर बिआहो नहि करब। अखन तक जे भेल से सिनेमाक एकटा दृश्य छल। ऐसँ हम अपन जीवनमे बहुत किछु सीखलौं।”

मानसीक बात सुनि मनीषक सामने अन्हार पसैर गेलैन। ओ हुनका मनेबाक लेल सभ तरहक उपाय केलाह मुदा सफल नहि भऽ सकला। निराश भऽ गाम आपस चलि गेला। विदा हुअ काल बेर-बेर मानसीक चेहरा दिस ताकि रहल छला आ आँखिमे नोर ढबढबा गेल छेलैन।

मानसी गाममे फेरसँ ट्यूशन पढ़ौनाइ शुरू केलीह। सभ वर्गक छात्र-छात्राकेँ अलग-अलग खेमामे पढ़बए लगली। छात्र-छात्राक संख्या बेसी भऽ गेने नौमी-दसमीक तेजगर विद्यार्थीक द्वारा निच्चाँ वर्गक विद्याथीकेँ पढ़बबैत छेली। ऐसँ पढ़बैबला विद्यार्थीमे आत्मविश्वास जगैत छेलइ। इएह क्रम कमो-बेस सभ विद्यार्थीपर लागू कएल जाइत छल।

किछुए बर्खक पछाइत गामसँ चुनल विद्यार्थी सभ निकलए लागल। गामक जे परिवार आर्थिक रूपसँ सबल छला ओ अपना विद्यार्थीकेँ उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक लेल शहर भेजए लगला। ओ

विद्यार्थी सभ अपना रूचिक अनुसार विषय चुनैत छल आ अपना क्षेत्रमे परचम लहरबैत छल। सभ विद्यार्थी शहरमे पढ़िते मानसी दीदीसँ सम्पर्कमे रहैत छल। मानसी दीदी सभ छात्र-छात्राकेँ प्रेरित करैत रहै छेलखिन। एकर परिणाम ई भेल जे किछुए आगामी बर्खमे गाम शैक्षिक आ आर्थिक रूपेँ सबल भऽ गेल।

एमहर मानसी ट्यूशन पढ़बैत-पढ़बैत बिहार लोक सेवा आयोग आ सिविल सेवा परीक्षाक सम्बन्धमे पूर्ण जानकारी प्राप्त कऽ लेली। मानसी मने-मन निश्चय करि लेली जे हमरा कोनो पदाधिकारी बनबाक अछि।

मनुक्ख जखन संकल्पित भावसँ ठानि लिए आ जुनुनक संग इमानदारीपूर्वक तैयारी करए लागए तँ सफलता भेटबे टा करैत अछि।

मानसी अपन दैनिक काज करैत परीक्षाक तैयारीमे जुटि गेली। परीक्षासँ जुड़ल सभ विषयक गहन अध्ययन करए लगली। मात्र पाँच-सँ-छह घन्टा सुतै छेली बाँकी समय काजमे लागल रहैत छेली। बिहार लोक सेवा आयोगकेँ फारम भरली। मोबाइलपर सर्च करिकऽ कोन ढंगसँ नीक तैयारी कएल जा सकैत अछि तेकर पूर्ण जानकारी प्राप्त करैत ओइ पाछू पड़ि गेली।

किछु मासक बाद प्राथमिक परीक्षा भेलैन जइमे 150 अंकमे 150 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछल गेल छेलइ। जइमे 141 टा प्रश्नक उत्तर सही बना कऽ आएल छेली। परिणाम आएल तँ पास भऽ गेल छेली। मुख्य परीक्षामे तँ आरो नीक अंक भेटलैन। आब रहि गेलैन साक्षात्कार।

साक्षात्कारमे मानसीकेँ तेहेन घुमा-घुमाकऽ प्रश्न पुछलकैन जइमे ई लटपटा गेली। एकर तैयारी ओ ठीकसँ नहि कऽ पौने छेली। खाएर ओ हतोत्साह वा निराश नहि भऽ ऐगला वर्षक तैयारी आरो जोर-शोरसँ करए लगली।

ऐ परीक्षामे हिनका नीक अनुभव प्राप्त भेलैन आ ओ आब भीतरसँ आरो मजगूत भऽ गेल छेली।

ऐगला वर्षक परीक्षाक लेल ओ पुन: आवेदन केलीह। प्राथमिक आ मुख्य परीक्षाक हुनका बेसी चिन्ता नहि रहैन किएक तँ ओ ट्यूशनक परसादे जड़ियेसँ मजगूत छेली। साक्षात्कारक तैयारीक लेल ओ पटना चलि गेली। पटनामे एकटा कोचिंगक सहारा लऽ कठिन परिश्रम करए लगली। एकर परिणाम भेल जे ओ तीनू परीक्षा नीक अंकसँ पास भऽ गेली।

मानसीक परीक्षाक परिणामक जानकारी अखबारक माध्यमेँ मनीषकेँ सेहो प्राप्त भेल। मनीष मानसीकेँ शुभकामना देलखिन। गाममे बधाइ दइबलाक लाइन लागि गेल। मीडियाबला सभ आबए लगल। देहातक एकटा छोट-छीन गामक लड़की, बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़बैवाली मानसी, चर्चित चेहरा बनि गेल छल।

मानसीकेँ पहिल नियुक्ति प्रखण्ड विकास पदाधिकारीक रूपमे भेलैन। ई पहिल योगदान दरभंगा जिलाक घनश्यामपुर प्रखण्डमे देलैन। कार्यभार सम्हारि लेलाक बाद जिम्मेवारीपूर्वक प्रखण्डक काज करए लगली।

एमहर मनीषसँ सेहो कहियोकाल हाल-चाल भऽ जाइत रहैन। ठीक एक मासक बाद मनीष भिनसरे-भिनसरे हिनक सरकारी आवासक गेट लग पहुँचला। करेजा धकधका रहल छेलैन। भारी सोचमे पड़ि गेल छला। पहिने की कहबै? मानसी तँ आब बी.डी.ओ. मैडम भऽ गेली अछि। बहुत दिनसँ गप-सप्प नहि अछि। ओ की सोचती? बतियाइ कालमे कहीं हम हुसि ने जाइ..!

माने, मनीष बाहरी गेट लग पहुँच तँ गेला मुदा ओइठाम असमंजसमे ठाढ़ छला। फेर ओ हिम्मत करिकऽ कॉलबेल दबौला।

भीतरमे नौकर झाड़ू लगबैत रहइ। ओ गेटक भुरकीसँ हिनका देखि पुछलकैन- “की काम?”

मनीषजी दबले स्वरमे बजला-

“बी.डी.ओ. मैडमसँ मिलबाक अछि।”

“अहाँकेँ बुझल नहि अछि जे मैडमसँ ऑफिसेटामे मिल सकै छी। बाहरी आदमीकेँ डेरापर मिलनाइ मना छै। ओ एक बजे राति तक काज करै छथिन। आठ बजे उठै छथिन आ नहा-धो कऽ खेनाइ खा 10 बजे धरि ऑफिस चलि जाइ छथिन। अहाँक नाओं की छी?”

मनीष हड़बड़ाकऽ बजला-

“अच्छा, ठीक छै हम ऑफिसेमे भेँट कऽ लेबैन।”

ओतएसँ सोचैत-विचारैत मनीष बाजार दिस आबि गेला। सोचलैन, ऑफिसमे हमरा भेँट नहि करबाक चाही। डेरेपर जेबाक कोनो उपाय सोचए पड़त। ओ एकटा होटलमे जा स्नान कए खेनाइ खा थोड़ेकाल आराम केलाह। दू बजेक आस-पास मनमे एलैन जे ऑफिस तरफ जा कऽ अझक्कोसँ बिडिओ मैडमक चेहरा देखि लितिऐ। ओ अपनाकेँ रोकि नहि सकला आ ऑफिस तरफ आबि गेला। गमछासँ आधा मुँह झाँपि लेला आ ऑफिसक गेट लग, जेतए नेम प्लेट लागल छेलै जइमे लिखल छेलै- मानसी राय, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी’, ओइठाम आबि ठाढ़ भेला। बगलमे चपरासी आ बरामदापर किछु लोक कतारमे ठाढ़ छल, बिडियो मैडमसँ मिलबाक लेल।

अखन तक मनीषकेँ मानसीक चेहराक दर्शन नहि भेलैन। पुन: ओ डेरेक आस-पास जा कऽ मण्डराए लगला।

ठीक चारि बजे बिडियोक गाड़ी डेराक गेट लग रूकल। मानसी गाड़ीसँ उतरली। मनीष सहैट कऽ लगमे आबि अभिवादन केलकैन।

मानसी अभिवादन स्वीकार कऽ भीतर चलि गेली। ओ ध्यान नहि देली जे ई मनीष भऽ सकै छैथ। किएक तँ मनीषकेँ कने दाढ़ी-मोँछ बढ़ि गेल रहैन। ड्राइवर फाइल सभ लऽ अन्दरमे पहुँचा बाहर आबि गेला।

मनीष सोचमे पड़ि गेला। आब की कएल जाए? मनमे ईहो होनि जे मानसी कहीं चिन्ह कऽ अनचिन्ह तँ ने कऽ देली। मनीषक मनमे पुन: अपने भेलैन जे नहि एहेन नहि भऽ सकैए।

कनीकालक बाद मनीष फेर कॉलबेल बजौला। नौकर फेर बाहर आएल। देखैत अछि ई तँ भिनसुरुके आदमी छी। नौकर बाजल-

“आप फिर क्यों आ गए?”

“हे भाय, हमरा हुनकासँ मिलनाइ बड़ जरूरी अछि। हुनका कहियौन एक आदमी गेट लग ठाढ़ अछि जे अहाँसँ भेँट करए चाहैए।”

नौकर बाजल-

“अहाँ अप्पन नाम-पता लिखिकऽ दिअ।”

मनीष अप्पन कार्ड निकालिकऽ नौकरकेँ थमा देलखिन।

मैडम कार्ड देखिते तुरन्त फोन लगौली। गेट लग मोबाइल बाजल। बाहर आबि अपने रिंगटोन सुनली। नौकरकेँ आदेश देलखिन अन्दर आने दो। नौकरकेँ कोनो काजसँ बाहर भेज देलखिन। बरामदापर कुर्सी-टेबुल लागल रहइ। मनीष कुर्सीपर बैस गेला आ मानसी दिस ताकए लगला। मानसी कमराक गेट लग ठाढ़ मनीष दिस एकटक ताकि रहल छेली। नजैर निच्चाँ गिरल, फेर उठल, फेर गिरल, फेर उठल...। ई क्रम चलैत रहल। कियो किछु ने बाजि रहल छेलैथ। एकदम नि:शब्द। जेना नदीक झकझोरल पानि ऊँच-नीच जमीनसँ संघर्ष करैत समुद्रमे गिरलाक बाद शान्त भऽ जाइत अछि तहिना शान्ति पसैर चुकल छल।

मनीष अप्पन चुप्पीकेँ तोड़ैत बजला-

“मानसी, हमरा सभकेँ माफ कऽ दिअ। पहिलुका बातकेँ बिसैर जाउ। हमरा संग फेरसँ नव जीवनक शुरूआत करू। हम हमेशा अहाँक संग कदम-मे-कदम मिलाकऽ चलब।”

मानसीक आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। पाछू घुमिकऽ ओछाइनपर जा कऽ पड़ि रहली आ हुचैक-हुचैक कऽ कानए लगली।

मनीष सेहो भावुक भऽ गेला। ओ हिम्मत बान्हि अपराधी जकाँ कमरामे प्रवेश केलाह। ओछाइन लग एकटा कुर्सी राखल छेलै, ओइपर मनीष बैस गेला आ बजला-

“हमरा बिसवास छल जे अहाँ असाधारण लड़की छी। अहाँ सफलताक परचम लहराएब। हमहूँ अहाँक संग, लेकिन दूर रहि तपस्ये कए रहल छी।”

थोड़ेकाल चुप रहि मनीष पुन: बजला-

“अहाँक सफलताक संग हमरो परमोशन भेल। हम फिलहाल लारसन एण्ड टुर्गो लिमिटेड कम्पनीक डिप्टी मैनेजर बनलौं हेन। उठू कने हमरा दिस ताकू।”

मानसी उठिकऽ बैसली आ आस्तेसँ बजली-

“माए-बाबूकेँ दहेजक भूत उतरलैन?”

“सभ भूत उतैर गेलैन। आब हमरा-अहाँक सफलताक आगूमे किएक कोनो भूत रहतैन। ओ सभ अपन गलती स्वीकार कऽ सदिखन अहींक नाओं जपैत रहै छैथ।”

“अच्छा, ई समाज दहेजमुक्त केना भऽ सकैत अछि?”

मनीष कने सोचिकऽ बजला-

“अहाँ एहि समाजक उदाहरण छी। जइ दिन देशक युवती

जागि जेती, संघर्ष व मेहनत कऽ सफलताक परचम लहरौती आ ई संकल्प लऽ लेती जे हमरा बिनु दहेजक बर वरण करबाक अछि तँ हमरा बुझाइत अछि जे ई सामाजक पिशांच भागि सकैत अछि।”

“लेकिन हमरा एहि विषयपर काज करबाक अछि।”

“ऐ लेल अहाँ स्वतंत्र छी।”

मानसी आस्ते-आस्ते बिछौनपर सँ उतरली। मनीष सेहो ठाढ़ भऽ गेला। दुनू गोरे एक-दोसरसँ एहि तरहेँ गला मिलौलौन जेना बरमाला भऽ रहल होइ। ❑

कुलदीपक

राकेश शर्माक पत्नी रूबी जइ दिन दोसर बेटीक जन्म देलखिन तइ दिन घरक चुल्हीमे पजारो ने पड़लै। परिवारजन घोर चिन्तामे डुमि गेला। राकेशक माएकेँ कानैत-कानैत कखनौं आँखिसँ नोर नहि सुखाइ छेलैन। दहो-बहो नोर आँखिसँ जा रहल छेलैन। एकटा पड़ोसिन बलाटवालीकेँ कानि-कानि राकेशक माए कहि रहल छेली-

“देखियौ कनियाँ, हमरा घरक दिन केहेन खराप भऽ गेलइ। जेठकियोकेँ तीनटा बेटीए छै आ छोटकियोकेँ दूटा बेटीए भऽ गेलइ। जानि नहि, कहिया भगवान हमरा घरमे पूतक मुँह देखौथिन।”

राकेशक माइक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छेलैन। गला भारी भऽ गेल छेलैन।

बलाटवाली बोल-भरोस देबए लगली- “नै-नै दीदी, एहेन अन्हेर नहि हेतइ। भगवानक घर देर छै अन्हेर नहि। ई घैरज राखौथ। एक दिन आपना आँखि देखथिन ई..। आब ऐगला बेर दुनू कनियाँकेँ बेटे हेतैन।”

“अहाँक मुँहमे अमृत बसए कनियाँ...। केतेक देवता-पितरकेँ कौबला-पाती सेहो केने छिऐन। देखियौ दैवा हमर-सबहक दिन कहिया फेरै छथिन। आब हमरा पोताक मुँह देखैले मन बेकल भऽ रहल अछि।”

बेटीक छठियार दिन राकेश गाम एला। ओ किशनगंजक मध्य विद्यालयमे प्रधानाध्यापक छैथ। महिनामे एक बेर दू-तीन दिनक लेल गाम अबैत रहै छैथ। ऐबेर जखन गाम एला तँ घरक उदासीन माहौल

देखि ओ भाँपि लेलैन। मुदा अप्पन मन कनिक्को चिन्तित नहि रहैन। विधिपूर्वक छठियार मनौल गेल। जन्मौटी बेटीक नाम ओ अनुप्रिया रखलैन। बेटीक सुन्दरता देखि हुनकर मन गदगद भऽ गेलैन।

ऐगला दिन माँ-बाबूजीकेँ हुनका सबहक उदासीनता देखि पुछलैन- “जइ बातक शक छल सएह भेल।”

ओ हुनका सबहक चिन्ता दूर करबाक भरसक प्रयास केलाह। कहलखिन- “अहाँ सभ चिन्ता जूनि करू। बेटीकेँ बेटाक समान बुझयौ। हम एकरहि सभकेँ बेटा बुझि नीक शिक्षा आ संस्कार देबाक प्रयास करब। आ यएह सभ हमरा सबहक सभ मनोरथ पूरा करत। अहाँ सभ खूब मनसँ आशीर्वाद दियौ।”

बेटाक बात सुनि माता-पिताक आँखिमे नोर ढबढबा गेलैन। राकेश बजला- “अहाँ सभ चिन्ता जूनि करू, हमरा कोनो परेशानी नहि अछि।”

दू मासक बाद जखन रोकश गाम एला तँ पत्नी रूबीकेँ धखाइत कहै छथिन- “केतेक सुन्दर अछि। अहाँ एहि बेर नशबन्दी करा ने लिअ।”

रूबी गुमशुम भऽ हिचैक-चिचैक कऽ कानए लगली। फेर अपनाकेँ सम्हारैत बजली- “अँए यौ, कहू तँ अहाँकेँ कनिक्को विचार नहि होइत अछि। देखियौ तँ जेठकीकेँ तीनटा बेटीए छैन से हुनका सभकेँ कोनो चिन्ते ने आ अहाँकेँ दुइयेटा बेटीमे एतेक चिन्ता हुअ लगल। जँ एहि वंशमे एकोटा बेटा नहि हेतै तँ समाजमे मुहोँ उठा कऽ ताकल हएत। लोक तँ कहतै जे ई निपुराहा घराइन छिऐ। बेटाक आसमे महिला सभ तीन-तीन, चारि-चारि बेर सफैया करा कऽ बेटाक मनोरथ पूरा करैत अछि आ हमर अखैन उमेरे की भेल हेन? बेटा केना हएत तेकर जोगार करब आकि अहाँ किदन कहै छी।”

राकेश पत्नीकेँ पोल्हबैत बजला- “लेकिन बेटाक आसमे बेटीकेँ कन्या भ्रूण हत्या करौनाइ महापाप होइत अछि किने। ई तँ हम नहि करा सकै छी। एक बेर अहाँ माँकेँ ई बात कहिकऽ देखियौन। हुनका सभक की प्रतिक्रिया होइ छैन।”

रूबी तुनैक कऽ बजली- “हम नहि कहबैन, अहीं अपन कहिकऽ देखियौन। ई बात जखन बाबूजीकेँ पता चलतैन तँ ओ की करता सेहो बुझै छिऐ?”

राकेश फेर ड्यूटीपर चलि गेला। दुर्गापूजाक छुट्टीमे गाम एला तँ घरक वातावरण एकदम बदलल रहए। माता-पिता हिनकासँ मुँह फुलौने रहैन। एक दिन सपरिवार एक जगह बैसला तँ एहि बातक चर्चा भेल। सभकियो अप्पन-अप्पन तर्क देलैन। राकेश अपना जिद्दपर अड़ल रहला। घरमे तनावक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल।

सभकिछु देखिकऽ राकेश सम्हारैत बजला- “अहाँ सभकेँ बेटाक प्रति एतेक मोह आ बेटीक प्रति घृणा किएक अछि? हमरो जन्म एकटा माइयेक पेटसँ भेल अछि किने। जइ नारीक बलेँ ई जग जगमगा रहल अछि तिनका प्रति एहेन दुर्भावना? सिर्फ पुरुषेटा सँ एहि सृष्टिक रचना भऽ सकै छेलै की? अहाँ सभ एहि मिथककेँ तोड़ू आ बेटा-बेटीकेँ समान दृष्टिसँ देखियौ।”

राकेशक बात सुनि माता-पिताकेँ तामस चरमपर पहुँच गेलैन। पिताजी जोरसँ बजला- “राकेश, तूँ हमरा सभकेँ एतेक नहि पढ़ाबह। तोरा एतेक पढ़ौलियह-लिखौलियह, नोकरी धरौलियह अही दुआरे नहि जे माए-बापपर हुकुम चलाबह। हम किछु नहि बुझबह। हमरा एकटा ‘कुलदीपक’ चाही। जइसँ परिवार आगू बढ़त।”

राकेशक माँ आ पत्नी सेहो एहि बातक समर्थन केलखिन। राकेश चुप रहि गेला।

ऐगला दिन पत्नी दुनू बेटीकेँ माने सुप्रिया आ अनुप्रियाकेँ लऽ

नैहर चलि गेली। नैहरमे सेहो एहि बातक चर्च चलल। हिनकर भावनाकेँ जानि ओत्तौ सभकियो हिनकासँ नाराज भऽ गेलैन।

राकेश सोचमे पड़ि गेलाह। कहीं हम अपना मिशनमे असफल ने भऽ जाइ। हमर बात तँ कियो मानबाक लेल तैयार नहि अछि। मुदा अनतरात्मा जवाब देलकैन, घबड़ेबाक नहि अछि। कोनो-ने-कोनो रास्ता जरूर निकलतै।

राकेश एहि बेर ड्यूटीपर जाइसँ पहिने शिक्षा कार्यालयमे अपन स्थानान्तरणक अर्जी लगा एला। शिक्षा कार्यालयक कोनो पैघ पदाधिकारीसँ दूरक रिश्तेदारी रहैन। सेहो काज अएलैन आ तीन मासक बाद हिनकर बदली दरभंगा भऽ गेलैन।

मधुबनी जिलाक सुदुर गाममे अपन घर आओर दरभंगा जिलामे अपन बदली करा कऽ ओ बड़ खुश छला। सोचलैन जे दरभंगामे डेरा लऽ कऽ दुनू बेटीकेँ नीक शिक्षा तँ देले जा सकैत अछि। तत्काल ओ दरभंगामे डेरा लऽ कऽ असगरे रहए लगला। किछु मास बितलाक बाद नशबन्दी विषयपर राकेश चिन्तन-मनन करए लगला। मनमे एलैन जे पुरुषोक नशबन्दी तँ होइते छइ। से एक दिन छुट्टी दिन-के दरभंगाक एकटा पैघ डॉक्टरसँ सलाह लेलैन। डॉक्टर कहलकैन जे पुरुष नशबन्दीमे कोनो खास परेशानी नहि छै मुदा नशबन्दीक समय परिवारक एकटा मुख्य सदस्यक उपस्थिति अनिवार्य अछि।

राकेश सोचला जे एहि बातक पता हमरा घरक लोककेँ नहि चलबाक चाही। एकरा हमरा जीवन भरि छुपा कऽ राखए पड़त। मुदा डॉक्टर लग हम कोन आदमीकेँ लऽ जाएब?

विद्यालयक एकटा शिक्षकसँ बड़ घनिष्ठता भऽ गेल रहैन। हुनका ओ अप्पन बेथा सुनौलैन। ओ पहिने तँ आनाकानी केलकैन मुदा बादमे तैयार भऽ गेलैन। एहि तरहेँ ओ एक दिन डॉक्टर लग जा कऽ अपनहि नशबन्दी करबा लेलैन। शिक्षक मित्र खूब संग देलकैन।

दू दिन तक हुनका डेरापर रहिकऽ हुनकर सेवा-सुश्रुषा केलकैन।

राकेश अप्पन नशबन्दी तँ करा लेलैन मुदा एहि चिन्तामे डुबि गेला जे हम कहीं अपना माता-पिता आओर पत्नीक संग धोखा तँ ने केलिऐ हेन। एक तरहसँ धोखा तँ छीहे, मुदा एहि बातसँ सन्तुष्टि भेलैन जे ई काज एक तरहसँ राष्ट्रहितमे तँ अछिए। तँए राष्ट्रहिते ने सर्वोपरि भेल।

किछु दिनक पछाइत राकेश पूर्ण स्वस्थ भऽ गेला। घरमे कहियो केकरो एहि बातक पता नहि चलए देबाक अछि। तँए एहि बातक गिरह बान्हि राकेश संकल्पित भऽ गेला। बेटी आब पढ़एवाली भेल जाइत छेलैन से किछु मासक बाद नीक शिक्षाक दृष्टिसँ पत्नी आ दुनू बेटीकेँ दरभंगाक डेरापर लऽ अनला। बड़की बेअी सुप्रियाकेँ सरकारी विद्यालयमे नामांकन करबा देलखिन। बीच-बीचमे माता-पिताकेँ सेहो किछु दिनक लेल डेरापर बजा लैत छला। राकेश अप्पन घरसँ सभ दिन नीक सम्बन्ध बना कऽ रखला। गामक खेती-बाड़ी जेठ भाइक जिम्मामे छेलैन। एहि लेल ओ समय-समयपर किछु रूपैआ-पैसाक मदैत करैत रहै छला।

जहन ऐगला पाँच साल तक राकेशक पत्नी रूबीक सन्तानक योग नहि बनलैन तँ माता-पिता बड़ चिन्तित रहए लगला। केतेको डॉक्टर-वैद आ ओझा-गुनी सभसँ रूबीकेँ देखौल गेलैन। केतेक जगह राकेशोकेँ जाए पड़लैन मुदा कोनो सफलता नहि भेटल। एमहर राकेशक भौजी बेटाक आशमे आरो दूटा बेटीक जन्म देली। राकेश सभ स्थितिकेँ बुझैत-गुणैत अप्पन चुप्पी सधने रहला।

राकेशक माता-पिता ऐगला कुलदीपक आशसँ निराश भऽ बबाजी बनि गेला आ पूर्णरूपेँण भगवानक पूजा-पाठमे लीन भऽ गेला। आब ओ आश्वस्त भऽ गेला जे 'होइहेँ वही जो राम रचिराखा'।

एमहर राकेश दरभंगामे विद्यालयक बाद कोचिंग सेहो चलाबए

लगला। खूब विद्यार्थी जूटए लगलैन। ओ दरभंगामे 'राकेश सर'क नाओंसँ विख्यात भऽ गेला।

दुनू बेटी सरकारी विद्यालयमे पढ़ि रहल छेलैन। दुनू उखराहा नीक शिक्षकसँ गृह ट्यूशन लगा देने रहथिन। प्रथमहि क्लाससँ सभ विषयक तैयारी नीक ढंगसँ करबए लगलखिन। बेटीकेँ नीक संस्कार आ पढ़ाइ-लिखाइमे कोनो कमी नहि रहए, एहि बातक अपने दुनू बेकती राकेश पूर्ण धियान रखैत छला। दुनू बहिन सभ साल विद्यालयमे प्रथम अबैत छेली। संगहि अप्पन विद्यालयक सभ क्रिया-कलापमे अव्वल रहै छेली।

दसमी बोर्डमे सुप्रिया राज्यमे प्रथम स्थान प्राप्त केलीह। बिहार सरकारक शिक्षामंत्रीक हाथसँ सम्मान प्राप्त केलीह। सुप्रियाकेँ अपना मेहनतपर विश्वास भऽ गेल रहैन आ ओ डॉक्टर बनबाक सपना देखए लगली। एगारहमी, बारहमीमे विज्ञान विषय राखि खूब जोर-शोरसँ तैयारीमे जूटि गेली।

दुनू बहिनक उमेरमे दू वर्षक अन्तर रहइ। अनुप्रियाकेँ दसमी बोर्डक परिणाम आबएबला रहइ। परीक्षा तँ बड़ नीक गेल रहै तँए नीक परिणामक पूर्ण आशा अनुप्रियाक मनमे सेहो रहइ। पिताक द्वारा लेल गेल टेस्टमे नब्बे प्रतिशतसँ ऊपर सही लिखने छल। विज्ञान आ गणितमे तँ शत-प्रतिशत सही छेलइ। मुदा तैयो अनुप्रियाकेँ एहि बातक दुगदुगी रहै जे दीदी तँ राज्य भरिमे प्रथम एली, की पता हमरा कोन स्थान प्राप्त हएत।

ओही राति अनुप्रिया सपना देखली जे हम बिहारमे प्रथम स्थान प्राप्त केलौं अछि। से हम मुख्यमंत्रीक हाथसँ सम्मानित भऽ रहल छी।

अप्पन सपनाक चर्चा भिनसरे अनुप्रिया अप्पन परिवारमे केलीह तँ सभकियो भभाकऽ हँसए लगला। संयोगसँ ओही दिन दसमी बोर्डक परिणाम आबए बला रहै जे दू बजे दिनमे घोषित कएल गेल। एहिमे

अनुप्रिया फेल भऽ गेल छल।

परिवारमे शोकक लहरि दौड़ गेल। अनुप्रियाकेँ कानैत-कानैत हालत खराप भऽ रहल छेलै मुदा राकेश दुनू पति-पत्नीकेँ बेटीक मेहनत आ योग्यतापर बड़ विश्वास छेलैन। ओ दुनू बेकती अपना बेटीकेँ बुझौलैन जे केतौ-ने-केतौ कोनो गड़बड़ी भेल अछि1 अहाँ चिन्ता जुनि करू। हम आगू तक देखबै।

समय पाबि राकेश बिहार माध्यमिक बोर्डकेँ चैलेंज केलैन। आ पूर्ण तत्परतासँ एहि काजक पाछू पड़ि गेला। अनुप्रियाक कॉपीकेँ फेरसँ जाँच कएल गेल। विभागक पदाधिकारी सभ कॉपीकेँ देखि दंग रहि गेला। अनुप्रिया राज्य भरिमे प्रथम स्थान प्राप्त केलीह। मीडियाकेँ कहल गेल जे किरानीक गलतीसँ एना भेल छल। लेकिन बोर्डक अव्यवस्थाक पोल खुलि गेल।

मुख्यमंत्री आओर शिक्षामंत्री संयुक्त रूपसँ अनुप्रियाकेँ पुरस्कृत केलैन। जिलाधिकारी घर आबिकऽ सम्मान आ बधाइ देलकैन। जिलाधिकारीक रूतबा देखि अनुप्रिया चकित रहि गेली आ मने-मन ठानि लेली जे भविष्यमे हमहूँ जिलाधिकारी बनब।

दुनू पोतीकेँ ई सफलता देखि दादा-दादीक संग सपरिवारक मन गदगद भऽ रहल छेलैन।

अनुप्रिया एगारहमी-बारहमीमे कला विषय चुनलैन जइमे हिन्दी, अंगरेजी, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र आ इतिहास केँ तँइ केलैन। सभ विषयक तैयारीक पाछू अनुप्रिया जोर-शोरसँ लागि गेली।

सुप्रिया बारहमीक बाद डॉक्टरीक पढ़ाइ पढए लगली आ अनुप्रिया स्नातकक तैयारीक संग सिविल सेवाक तैयारी करए लगली।

कोनो बेकती लक्ष्यक प्राप्तिक लेल जखन लगन लगा कऽ समर्पित भावसँ कठिन परिश्रम करए लगैत अछि तँ सफलता एक दिन

ओकरा लग निश्चित रूपेँ आबि जाइ छइ।

अहूठाम एहि दुनू बहिनक संग सएह भेल। माने, सुप्रिया आ अनुप्रिया दुनू बहिनक संग सएह भेल। दुनू बहिन दू जगह छेली। दिन-राति एक करिकऽ अठारह घन्टा तैयारी करैत रहली। हिनका सभक मेहनत रंग अनलक। सुप्रिया नीक डॉक्टर बनली आ ओही कॉलेजमे संग-संग पढ़एबला डॉक्टर सुबोध शर्मासँ बिआह केलीह।

एमहर अनुप्रिया सेहो प्रथमे चान्समे सिविल सेवाक तीनू चरणक परीक्षा नीक नम्बरसँ पास कए गेली। पहिले नियुक्तिमे जिलाधिकारी बनि गेली। कठिन परिश्रम, लगन आ नीक संस्कारसँ सपना साकार भऽ गेलैन।

अनुप्रियाकेँ सिविल सेवा परीक्षाक तैयारीक क्रममे एकटा अनुपम राय नामक सहपाठीसँ बराबर भेँट होइत रहै छेलैन। मुख्य परीक्षा आ साक्षात्कारमे एक दोसरकेँ मदैत सेहो केने रहथिन। आस्ते-आस्ते ई भेँट-मुलाकात मनहि-मन अन्तरंग प्रेममे बदैल गेल रहैन। संयोगसँ अनुपम सेहो जिलाधिकारीए बनला।

नौकरीमे स्थिर भेलाक बाद दुनू गोरेक अन्दर बिआहक जोर पकड़ए लागल।

कियो पदाधिकारी अपना जगहपर रहै छैथ लेकिन अपना घरमे माता-पिता, दादी-दादी लग ओ बच्चे रहै छैथ। एक दिन समय अनुकूल देखि अनुप्रिया अपन माता-पिता लग अनुपम संग बिआहक प्रस्ताव रखलैन। दुनू दू जाति भेने अभिभावककेँ मनमे कने खटकलैन जरूर मुदा दुनू गोटेक सफलता सभ अड़चनकेँ झाँपि देलकैन। खूब धूम-धामसँ अनुप्रियाक संग अनुपमक विवाह भेलैन, ओ सभ वैवाहिक बन्धमे बन्हि गेला।

रूबी-राकेशक एकटा बेटी जमाए डॉक्टर आ दोसर बेटी-जमाए

जिलाधिकारी, सोचि सकैत छी जे परिवारक प्रतिष्ठाक ग्राफ केतए पहुँच गेल हेतइ।

समय अपना गतिपर गतिमान छल। एक दिन दुनू बहिन विचार केली जे हमरा सभकेँ एहि जगहपर पहुँचबैमे माता-पिताक समर्पण, दादा-दादीक आ चाचा-चाचीक स्नेहिल आशीर्वाद संग दऽ रहल अछि। आब हम सभ गाममे सभसँ पहिने सुन्दर सन घर बनाबी। तेकर बाद किछु आओर करबाक योजना तैयार करब।

दुनू बहिन मीलिकऽ गामे सभसँ सुन्दर भवन बनबौली। एहि भवनक नाम दादा-दादीक नामपर सूर्यदेव-शान्ति भवन' राखल गेल। घरमे सभ सुख-सुविधा आ शान्तिक लेल सभ तरहक सरमजानक बेवस्था कएल गेल। आगू किनको कोनो कमी नहि रहए तेकर सभ खर्चाक भार अपना ऊपरमे दुनू बहिन लेली।

तेकर बाद 'सूर्यदेव-शान्ति फाउन्डेशन'क नामसँ एकटा ट्रस्टक निबन्धन सेहो करौली। एकर सचिव अपन माता रूबी देवीकेँ बनौलैन। आब एहि ट्रस्टक माध्यमसँ सुप्रिया दुनू परानी मिलि कऽ दरभंगामे 'राकेश-रूबी' नामक पैघ अस्पताल बनबौली। एहि अस्पतालमे इलाजक वास्ते आधुनिक सभ सुविधा उपलब्ध करौल गेल। जइमे गरीब-सँ-गरीब परिवारक रोगीक उपचार मामूली खर्चपर होमए लगलै।

एमहर अनुप्रिया अप्पन दुनू पति-पत्नी मिलिकऽ ट्रस्टक माध्यमसँ गाममे 'राकेश-रूबी गरीब कल्याण विद्यालय'क स्थापना केलीह। एकर उद्घाटन अपन दादा-दादीसँ करबौलैन। एहि विद्यालयमे आधुनिक शिक्षाक सभ सरमजान उपलब्ध करौल गेल। योग्य आ विद्वान प्रशिक्षित शिक्षकक द्वारा गामक गरी परिवारक बच्चाकेँ मुफ्तमे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देल जाए लगल। तैसंग छात्र-छात्राकेँ पौष्टिक अल्पाहारक सेहो बेवस्था कएल गेल छल।

इलाकामे सुप्रिया आ अनुप्रियाक नाम गर्वसँ लेल जाइत छल। आब राकेशक अवकाश प्राप्तिक समय सेहो नजदीक आबि रहल छल। तैबीच एक दिन राकेशक पिताजी सूर्यदेव बाबू अचानक बीमार पड़ला। तुरन्त अपनहि अस्पताल दरभंगामे भर्ती करौल गेलैन। इलाज चलि रहल छेलैन। उम्र अस्सीक पार कए गेल रहैन। सूर्यदेव बाबूकेँ अपना बुझि पड़लैन जे आब हमर समय पूरा भऽ गेल अछि। ओ राकेशकेँ बजा कऽ कहलखिन- “सुप्रिया दुनू गोटे तँ ऐठाँ छथिए अनुप्रिया आ अनुपमकेँ सेहो आइ बजा लिअ।”

संध्याकाल लगभग सात बजे तक दुनू गोरे आबि गेलैथ। सूर्यदेव बाबूक आँखिमे खुशीक आँसू ढबढबा गेलैन। दुनू पोतीकेँ हाथ अपना हाथमे लऽ कँपैत आवाजमे ओ बजला- “बेटी मनुषकेँ बेटा बा बेटीमे अन्तर नहि बुझबाक चाही। पहिले हम अन्हारमे रही। अहाँ दुनू बहिन अपना कर्मसँ हमर अन्हरजालीकेँ तोड़लौं। हमरा माफ कए देब। अहाँ दुनू बहिन हमर कुलक दीपक छी। समाजक उदाहरण छी।”

बजैत-बजैत सूर्यदेव बाबूक आँखि बन्न भऽ गेलैन, आवाज रूकि गेलैन।

❑❑❑

❑❑

❑

Notes